राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

वर्ष : 13 , अंक : 21, पृष्ठ : 08, नई दिल्ली मंगलवार 08 अगस्त 2023, मूल्य : 1.50/-

नई दिल्ली से प्रकाशित

RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट

कांग्रेस कार्यालय पर विशाल सांकृतिक कार्यक्रम व बधाई समारोह का आयोजन किया गया .... पेज 03

आगरा में शिव मंदिर की छत गिरी, एक श्रद्धालु की मृत्यु, सात घायल .... पेज 05

अंतिम समय में हुए गोल ने पलटा मैच, मैनचेस्टर सिटी को हराकर आर्सेनल 17वीं बार बना चैंपियन .... पेज 07

नूंह में बुलडोजर एक्शन पर हाईकोर्ट की रोक

हिंसा के बाद होटल-शोरूम समेत 753 अवैध निर्माण गिराए; गुरुग्राम में धारा 144 हटी

नूंह। हरियाणा के नूंह में हिंसा के बाद राज्य सरकार के बुलडोजर एक्शन पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी है। हाईकोर्ट का आदेश आते ही डिप्टी कमिश्नर धीरेंद्र खड़गटा ने तुरंत अधिकारियों को कार्रवाई से रोक दिया। सरकार की डिमोलिशन ड्राइव का हाईकोर्ट ने सुओ-मोटो लिया था। पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट की जस्टिस गुरमीत सिंह संधावालिया ने रोक के आदेश दिए। नूंह में पिछले 4 दिन से तोड़फोड़ की कार्रवाई चल रही थी। इस दौरान 753 से ज्यादा घर-दुकान, शोरूम, झुग्गियां और होटल गिराए जा चुके हैं। प्रशासन ने इन्हें अवैध बताते हुए कहा कि इनमें रहने वाले 31 जुलाई की हिंसा में शामिल थे।

नूंह में अब तक प्रशासन ने 37 जगहों पर कार्रवाई कर 57.5 एकड़ जमीन खाली कराई। इनमें 162 स्थायी और 591 अस्थायी निर्माण गिराए गए। नूंह शहर के अलावा पुन्हाना, नगीना, फिरोजपुर झिरका और पिंगनवा जैसे इलाकों में भी अतिक्रमण हटाए गए।

कल प्रशासन ने हिंसा के दिन जिस 3 मंजिला सहारा होटल से पत्थरबाजी की गई थी, उसे भी गिरा दिया था। प्रशासन का कहना है कि होटल मालिक को सब पता था, लेकिन उसने दंगाइयों को पत्थर इकट्ठा करने से नहीं रोका।

गुरुग्राम में आगजनी-पथराव के बीच धारा 144 हटाई

गुरुग्राम में धार्मिक स्थल पर आगजनी और घर पर पत्थरबाजी के बीच धारा 144 हटा दी गई है। डीसी ने कहा कि एजेंसियों की रिपोर्ट से यहां स्थिति सामान्य बन गई है। वहीं गुरुग्राम में रविवार रात अज्ञात लोगों ने एक धार्मिक स्थल को आग लगा दी। सोमवार सुबह इसका पता चला। धार्मिक स्थल के केयरटेकर घसीटाराम ने कहा कि खंडसा गांव की इस मजार से रविवार रात साढ़े 8 बजे हम घर लौटे। आधी रात करीब डेढ़ बजे उन्हें कॉल कर आग लगाने की सूचना दी गई। घसीटा राम ने वहां पहुंचकर लोगों की मदद से आग बुझाई।

दिल्ली एम्स के एंडोस्कोपी रूम में आग लगी

नई दिल्ली। दिल्ली एम्स में सोमवार सुबह करीब 11: 55 बजे आग लग गई। आग एंडोस्कोपी रुम में लगी। ये कमरा इमरजेंसी वार्ड के ऊपर बना हुआ है।

हादसे के दौरान अस्पताल में मौजूद लोगों ने मरीजों को सुरक्षित बाहर निकाला। एंडोस्कोपी रूम में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया।

अस्पताल के स्टाफ ने बताया कि मरीजों को सुरक्षित निकालने के बाद फायर ब्रिगेड टीम को आग की जानकारी दी गई। इसके बाद 13 फायर टेंडर घटनास्थल पर पहुंचे और करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद करीब 1 बजे आग पर काबू पा लिया।

हालांकि, आग किस वजह से लगी, इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है। इमरजेंसी वार्ड के मरीजों को भी दूसरी जगह शिफ्ट किया गया है।

एम्स के अधिकारियों ने बताया कि आग बुझाने के लिए अंडरग्राउंड वाटर टैंक का भी इस्तेमाल किया गया है। इस घटना में कोई घायल नहीं हुआ है।

मोदी ने भ्रष्टाचार, परिवारवाद, तुष्टीकरण को बताया विकास की राह का रोड़ा

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को देश के लोगों से विकसित भारत के निर्माण के संकल्प में रोड़ा बन रही भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टीकरण जैसी बुराइयों को समाप्त करने का आह्वान करते हुए कहा कि ये बुराइयां न केवल विकास में बाधक बल्कि देश के लिए बड़ा खतरा भी है।

मोदी राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर राजधानी में नवनिर्मित भव्य भारत मंडपम में आयोजित एक समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मोदी ने कहा, आज हमारे सामने विकसित भारत निर्माण का स्वपन है, संकल्प है।

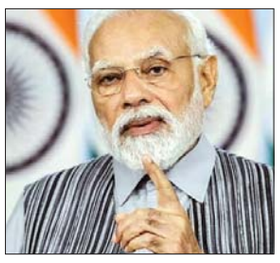

इस संकल्प के सामने कुछ बुराइयां रोड़ा बनी हुई हैं। इसलिए आज भारत एक सुर में इन बुराइयों को कह रहा

है- क्विट इंडिया (भारत छोड़ो)। आज भारत कह रहा है- करप्शन, क्विट इंडिया, भ्रष्टाचार इंडिया छोड़ो। आज भारत कह रहा है, डायनेस्टी , क्विट इंडिया, यानी परिवारवाद इंडिया छोड़ो।

आज भारत कह रहा है, अपीजमेंट क्विट इंडिया, यानी तुष्टिकरण इंडिया छोड़ो। प्रधानमंत्री ने कहा, देश में समाई ये बुराइयां, देश के लिए बहुत बड़ा खतरा है। देश के लिए बहुत बड़ी चुनौती भी है। मुझे विश्वास है, हम सभी अपने प्रयास से इन बुराइयों को समाप्त करेंगे, परास्त करेंगे। और फिर भारत की विजय होगी, देश की विजय होगी, हर देशवासी की विजय होगी।

कार्यक्रम में देश भरत से बड़ी संख्या में बुनकर तथा कपड़ा तथा फैशन क्षेत्र के प्रतिनिधि तथा सरकार के प्रतिनिधियों के साथ साथ केंद्रीय कपड़ा मंत्री पीयूष गोयल , लघु उद्योग मंत्री नारायण राणे, कपड़ा राज्य मंत्री दर्शना जरदोश उपस्थित थीं।

मोदी ने कहा कि दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर अग्रसर भारत में कपड़ा और फैशन क्षेत्र के लिए बड़े अवसर हैं और सरकार इसकों बढ़ावा देने में लगी है। पर इस इसका लाभ में उद्योग, बुनकर और श्रमिक सबको मिल कर काम करना होगा।

राज्यसभा में दिल्ली सेवा बिल पास

पक्ष में 131 और विरोध में पड़े 102 वोट

नई दिल्ली। संसद में विपक्ष के हंगामें और गहमागहमी के बीच मानसून सत्र जारी है।

सोमवार को राज्यसभा में दिल्ली आध्यादेश से जुड़े बिल को चर्चा के लिए लाया गया इस दौरान विपक्ष के आरोपो का जवाब देते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि इस बिल का उद्देश्य दिल्ली में सुचारू रूप से भ्रष्टाचार मुक्त शासन हो। बिल के एक भी प्रावधान से, पहले जो व्यवस्था थी, उस व्यवस्था में एक इंच मात्र भी परिवर्तन नहीं हो रहा है।

अमित शाह ने कहा कि कई बार केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी तो दिल्ली में भाजपा की सरकार थी, कई बार केंद्र में भाजपा की सरकार थी तो दिल्ली में कांग्रेस की, उस समय ट्रांसफर पोस्टिंग को लेकर कभी झगड़ा नहीं हुआ।

उस समय इसी व्यवस्था से निर्णय होते

थे और किसी मुख्यमंत्री को दिक्कत नहीं हुई। कई सदस्यों द्वारा बताया गया कि केंद्र को शक्ति हाथ में लेनी है। हमें शक्ति लेने की जरूरत नहीं क्योंकि 130 करोड़ की जनता ने हमें शक्ति दी हुई है।

बिल शक्ति को केंद्र में लाने की कवायद

अमित शाह ने कहा कि यह बिल हम शक्ति को केंद्र में लाने के लिए नहीं, बल्कि केंद्र को दी हुई शक्ति पर दिल्ली ञ्ज की सरकार अतिक्रमण करती है, इसको वैधानिक रूप से रोकने के लिए यह बिल लेकर लाए हैं।

उन्होंने कहा कि संविधान सभा में सबसे पहला संविधान संशोधन पारित किया गया था। तब से संविधान को बदलने की प्रक्रिया चल रही है। हम संविधान में बदलाव आपातकाल डालने के लिए नहीं लाए हैं।

नेहरूवादी नहीं, अटलवादी बनिए : चड्ढा

इससे पहले आप सांसद राघव चड्ढा ने कहा- ये बिल एक राजनीतिक धोखा है। भाजपा ने 1989, 1999 और 2013 के लोकसभा चुनाव के घोषणा-पत्र में दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने का वादा किया था। आज भाजपा के पास मौका है, दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दीजिए। राघव बोले- गृहमंत्री अमित शाह कह रहे थे कि पंडित नेहरू दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के पक्ष में नहीं थे। मैं उन्हें बता दूं कि लालकृष्ण आडवाणी दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के लिए संसद में बिल लेकर आए थे। अटल जी, आडवाणी जी, सुषमा स्वराज और मदन लाल खुराना ने दिल्ली को पूर्ण राज्य बनाने के लिए संघर्ष किया था। आप ये बिल लाकर उनके संघर्ष का अपमान कर रहे हो। आपके पास मौका है- नेहरूवादी नहीं अटल-आडवाणीवादी बनिए। गृहमंत्री अमित शाह चर्चा का जवाब देते हुए बोले- बिल का उद्देश्य भ्रष्टाचारविहीन शासन करना है। दिल्ली की सुरक्षा के लिए यह बिल लाया गया है। दिल्ली का चुनाव लड़ने वालों को ये समझना चाहिए कि दिल्ली यूनियन टेरिटरी है।

एलओसी के पास सेना ने तीन आतंकियों को मार गिराया

पुंछ में घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे, 24 घंटे में तीन आतंकी ढेर

एजेंसी

श्रीनगर। भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने आज सुबह जॉइंट ऑपरेशन में एलओसी के पास दो आतंकवादियों को मार गिराया। ये आतंकी एलओसी के पास घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे। वहीं शाम को भी घुसपैठ की कोशिश कर रहे एक आतंकवादी को मार गिराया गया,हालांकि इसे लेकर सेना ने कोई जानकारी नहीं दी है।

जम्मू के पीआरओ लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील बर्तवाल ने बताया, ऑपरेशन अभी जारी है। पिछले 24 घंटे में सेना ने जम्मू-कश्मीर में तीन आतंकवादियों को ढेर किया है। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक, सुबह मारे गए एक आतंकी की पहचान मुनेसर हुसैन के रूप में की गई है। वो एक खुंखार आतंकवादी और हिज्बुल मुजाहिदीन का डिवीजन कमांडर था। 5 अगस्त को राजौरी में सेना और आतंकियों के बीच मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया था। इससे पहले कुलगाम में 4 अगस्त को आतंकियों के साथ मुठभेड़ में तीन जवान शहीद हो गए थे।

जम्मू-कश्मीर के राजौरी, पुंछ में 2-3 आतंकी समूह सक्रिय

6 अगस्त को हुए एनकाउंटर का जायजा लेने के लिए एडिशनल डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस मुकेश सिंह राजौरी पहुंचे हैं। उन्होंने मीडिया को बताया कि पीर पंजाल इलाके यानी राजौरी और पुंछ जिलों में लगभग तीन आतंकी समूह सक्रिय हैं। इनमें से हर एक समूह में दो से तीन लोग होने की आशंका हैं। हालांकि,एडीजी ने कहा कि आतंकियों का सही आकंड़ा बता पाना मुश्किल है। उन्होंन यह भी कहा कि सुरक्षाबल इस इलाके से आतंकियों को मिटाने के लिए हर कोशिश कर रहे हैं।

मणिपुर हिंसा : सुप्रीम कोर्ट ने 3 महिला जजों की कमेटी बनाई

राहत-पुनर्वास देखेगी; 42 एसआईटी जांच करेंगी, डीआईजी रैंक के अफसर के हाथ में निगरानी

नई दिल्ली। मणिपुर हिंसा को लेकर सुप्रीम कोर्ट में 7 अगस्त को फिर सुनवाई हुई। इसमें सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाईकोर्ट के 3 जजों की कमेटी मणिपुर में जाकर राहत और पुनर्वास का काम देखेगी। कोर्ट ने ये भी कहा कि ऐसी कोशिशें की जानी चाहिए, ताकि राज्य के लोगों में विश्वास और कानून के शासन में भरोसा लौट सके। वहीं, राज्य के हालात की जानकारी देने मणिपुर के डीजीपी राजीव सिंह कोर्ट पहुंचे। उन्होंने प्रशासन के उठाए कदमों के बारे में बताया।

जम्मू-कश्मीर हाईकोर्ट की चीफ जस्टिस रहीं गीता मित्तल कमेटी की हेड होंगी। कमेटी की दो अन्य सदस्य जस्टिस (रिटायर्ड) शालिनी पी जोशी और जस्टिस (रिटायर्ड) आशा मेनन होंगी। सुनवाई के दौरान अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने कहा कि मणिपुर की मौजूदा स्थिति नाजुक है। बाहर से जांच होना लोगों में विश्वास पैदा नहीं करेगा। सरकार स्थिति को

संभालने के लिए परिपक्व तरीके से डील कर रही है। मणिपुर में एक आर्टिफिशियल सिचुएशन बनाई गई है, जिससे बताया जा रहा है कि सरकार कुछ नहीं कर रही। यह बहुत उलझाऊ स्थिति है।

वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने ये भी निर्देश दिया कि मणिपुर हिंसा मामले में सीबीआई जांच की निगरानी महाराष्ट्र के पूर्व डीजीपी दत्तात्रेय पडसालगीकर करेंगे।

42 एसआईटी हिंसा के मामलों की जांच करेंगी

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मणिपुर में हिंसा से जुड़े मामलों की 42 स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम जांच करेंगी। इन केसों को अभी तक सीबीआई को ट्रांसफर नहीं किया गया है। इन एसआईटी के काम की निगरानी डीआईजी रैंक का अफसर करेगा। ये अफसर मणिपुर के बाहर का होगा। डीआईजी रैंक का एक अफसर 6 एसआईटी की निगरानी करेगा। इन एसआईटी की जिले के आधार पर नियुक्ति होगी।

मणिपुर में फौजियों का आई कार्ड चेक कर रहीं मैतेई महिलाएं

उधर, राजधानी इंफाल में आने वाले सभी रास्तों को मैतेई महिलाओं के संगठन मेइरा पाइबी ने रोक दिया है। इन्होंने हर रास्ते की एंट्री पर चेक पॉइंट बनाए हैं। ये महिलाएं सेना और केंद्रीय सुरक्षा बलों की गाड़ियों को रोककर फौजियों के आई-कार्ड चेक कर रही हैं।

श्रीलंकाई नौसेना ने 10 भारतीय मछुआरों को पकड़ा

नागापट्टिनम । श्रीलंकाई नौसेना ने अपने जल क्षेत्र में अवैध शिकार के आरोप में सोमवार को 10 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार कर उनकी मछली पकड़ने वाले नावों को जब्त कर लिया। तमिलनाडु के मत्स्य पालन अधिकारियों ने श्रीलंका नौसेना की एक विज्ञप्ति के हवाले से यहां कहा कि तमिलनाडु के नागापट्टिनम जिले के अक्कराईपेट्टई तटीय गांव के रहने वाले मछुआरों को तब पकड़ा गया, जब वे श्रीलंका के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित मुल्लईतिवु जिले के अलमपिल के पानी में मछली पकड़ रहे थे। गिरफ्तार मछुआरों को जब्त किए गए ट्रॉलर, मछली पकड़ने के गियर और मछली के भंडार के साथ आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए त्रिंकोमाली में सहायक मत्स्य पालन निदेशालय को सौंप दिया गया। श्रीलंका नौसेना ने सीमा पार मछली पकड़ने के आरोप में इस साल अब तक 93 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया है ।

चंडीगढ़-मनाली फोरलेन पर लैंडस्लाइड

शिमला। कालका-शिमला हाईवे के बाद चंडीगढ़-मनाली फोरलेन पर भी भारी लैंडस्लाइड हो गया। इसकी चपेट में एक पिकअप गाड़ी आ गई। पिकअप चालक ने भागकर अपनी जान बचाई। शाम सात बजे के करीब हाईवे पर मंडी के नौ मील के पास बड़ी बड़ी चट्टानें गिर गई। आठ बजे तक हाईवे को बहाल कर दिया गया है। तब तक हाईवे पर वाहनों की लंबी लंबी

कतारे लग गई। हाईवे पर बार बार हो रहे लैंडस्लाइड से वाहन चालक भी दहशत में है, क्योंकि मंडी के छह मील, सात मील और नौ मील में कई बार लैंडस्लाइड हो चुका है। वहीं कालका-शिमला फोरलेन सोलन के चक्की मोड़ के पास ?6 दिन से बंद पड़ा है। इसका निर्माण कर रही कंपनी ने आज छोटे वाहनों के लिए बहाल करने का दावा किया था, लेकिन बार-बार हो रहे लैंडस्लाइड की वजह से बहाल नहीं हो पाया। अब कंपनी ने कल सुबह 11 बजे तक इसे बहाल करने का दावा किया है।

जालंधर में गोमांस फैक्टरी का भंडाफोड़, 12 रोहिंग्या सहित 13 लोग गिरफ्तार

जालंधर। जालंधर के धोगड़ी में हिंदू संगठनों के कार्यकर्ताओं ने पुलिस के सहयोग से छापेमारी कर एक बंद फैक्ट्री में गौ मांस पकड़ा है। नेहा टोका नाम की बंद पड़ी फैक्ट्री में दिल्ली का एक मास विक्रेता मुस्लिम व्यापारी इमरान यहां पर गैर कानूनी तरीके से गौ मांस की पैकिंग करवा रहा था। गौ मांस की पैकिंग कर रहे 13 लोगों को भी पुलिस ने पकड़ा है, जिनमें से 12 रोहिंग्या मुस्लिम हैं, जबकि एक बिहार का मुस्लिम है।

बिहार के युवक ने बताया कि उसे अभी दो दिन ही फैक्ट्री में आए हुए थे। उसे कहा गया था कि वहां पर चिकन पैकिंग का काम है। लेकिन यहां पर मोटा मांस पैक हो रहा था। युवक ने

यहां से पैक करके दिल्ली भेजते थे

कहा कि यहां पर जानवरों को काटा नहीं जाता। यहां पर कटा हुआ मांस आता है। यह सिर्फ पैकिंग यूनिट है। यहां से मास पैक होकर दिल्ली और अन्य राज्यों में जाता हैं।

टनों के हिसाब से मिला पैक्ड गौ मांस

गैर कानूनी तरीके से चलाई जा रही गौ मांस पैकिंग फैक्ट्री में टनों के हिसाब के पैक्ड मांस मिला है। हिंदु संगठनों के कार्यकर्ताओं ने कहा कि इससे पहले राजपुरा में भी गौ मांस की फैक्ट्री पकड़ी गई थी। उसी से उन्हें जानकारी मिली थी कि जालंधर में भी गौ मांस का धंधा चल रहा है। इसके बाद जब उन्हें लोकेशन मिली तो पहले रेकी की गई। जब सब कुछ कन्फर्म हो गया तो पुलिस को सूचना देकर छापेमारी करवाई।

गौ रक्षा दल के प्रधान सतीश ने बताया कि जब पुलिस के साथ छापेमारी की गई तो चौकीदार मौके से गेट बंद करके भाग गया। जब काफी देर तक गेट नहीं खुला तो पुलिस दीवार फांद कर फैक्ट्री में गई। मौके पर 13 लोगों को पकड़ा गया जबकि कुछ लोग छापेमारी की सूचना मिलते ही मौके से फरार हो गए।

ट्रैफिक जाम

केंद्र ने आईटी सिटी में भीड़भाड़ कम करने के लिए राज्य सरकार से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने को कहा

बेंगलुरु में ट्रैफिक जाम से सालाना 20 हजार करोड़ रुपये का नुकसान

एजेंसी

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में ट्रैफिक जाम से होने वाली समस्याओं की वजह से सालाना रु 19,725 करोड़ का नुकसान हो रहा है। एक रिसर्च में इसका दावा किया गया है। मशहूर ट्रैफिक एंड मेबिलिटी एक्सपर्ट एमएन श्रीहरि और उनकी टीम द्वारा किए गए एक शोध में कहा गया है कि बेंगलुरु में यातायात में देरी, भीड़भाड़, सिग्नलों के रुकने, समय की हानि, ईंधन की हानि और संबंधित कारकों के कारण बेंगलुरु को प्रति वर्ष रु 19,725 करोड़ का नुकसान हो रहा है।

श्रीहरि, जो परिवहन के लिए कई सरकारों और स्मार्ट शहरों के सलाहकार भी हैं, ने शनिवार को राज्य के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को ये रिपोर्ट सौंपी है। रिपोर्ट में बेंगलुरु में सड़क यातायात प्रबंधन, सड़क योजनाओं के निर्माण, फ्लाईओवर निर्माण समेत अन्य चीजों की सिफारिशें की गई हैं।

बता दें कि इससे पहले डी के शिवकुमार ने बेंगलुरु में यातायात भीड़ के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए 3 अगस्त को नई दिल्ली में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात की थी। केंद्र ने आईटी सिटी में भीड़भाड़ कम करने के लिए राज्य सरकार से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने को कहा है।

शहर में 60 फ्लाईओवर होने के बावजूद, श्रीहरि और उनकी टीम ने पाया कि आईटी हब में सालाना रु 19,725 करोड़ का नुकसान होता है। इसके पीछे के कारणों में सड़कों पर भीड़भाड़, सिग्नलों पर ठहराव, तेज गति से चलने वाली गाड़ियों के लिए धीमी गति से चलने वाले वाहनों का हस्तक्षेप और इन सबकी वजह से ईंधन की हानि, कार्यशील आबादी के समय की हानि होती है, जिसका खामियाजा हरेक साल करीब रु 19,725 करोड़ का होता है।

रिपोर्ट के अनुसार, आईटी क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि के परिणामस्वरूप बेंगलुरु में आवास, शिक्षा जैसी सभी संबंधित सुविधाओं में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप शहर की आबादी में तेजी से वृद्धि होकर यह 1.45 करोड़ हो चुकी है। बेंगलुरू में वाहनों की संख्या भी 1.5 करोड़ के करीब पहुंच गई है। यानी हर व्यक्ति पर शहर में एक गाड़ी है।

शिवराज ने राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर बुनकर और हस्तशिल्पियों को दी बधाई

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर सभी बुनकर और हस्तशिल्पियों साथियों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। चौहान ने ट्वीट कर कहा है कि हथकरघा भारतीय संस्कृति की अनमोल विरासत है, यह हमें हमारी परम्पराओं से जोड़ता है। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से हथकरघा उत्पादों को बढ़ावा देने और स्वदेशी को अपनाने का संकल्प लेने का आहवान किया है।

नई दिल्ली
मंगलवार 08 अगस्त 2023
Www.gauravshalibharat.com

शार्ट न्यूज

पुंछ में मारा गया आतंकवादी हिजबुल मुजाहिदीन का डिवीजनल कमांडर

जम्मू। जम्मू कश्मीर के पुंछ में सोमवार को मारे गये एक आतंकवादी की पहचान हिजबुल मुजाहिदीन के डिवीजनल कमांडर के रूप में की गयी है। रक्षा प्रवक्ता के मुताबिक पुलिस रिकॉर्ड के आधार पर मृत आतंकवादी की पहचान पुंछ के बागिलद्रा निवासी मुनीर हुसैन के रूप में की गयी है , जो हिजबुल मुजाहिदीन का डिविजनल कमांडर था। वह 1993 में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर(पीओके) गया था और 1996 में वापस आने के बाद 1998 में फिर वहां चला गया। उन्होंने बताया कि मुनीर ने सुरक्षा बलों पर कई हमलों की साजिश रची है। वह मौलाना दाऊद कश्मीर (टीयूजे) का करीबी सहयोगी था जो हिजबुल मुजाहिदीन के सैयद सलाउद्दीन का करीबी सहयोगी है। उन्होंने कहा कि हाल ही में पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में हिजबुल मुजाहिदीन समूह की उच्च स्तरीय बैठक हुई जिसमें मुनीर भी शामिल रहा। उन्होंने कहा कि यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान युवाओं को प्रेरित करने और भर्ती करने के लिए जम्मू कश्मीर में पुराने आतंकवादियों को भेजने की कोशिश कर रहा है।

अगरतला-कोलकाता ट्रेन सेवा इस साल शुरू होने की उम्मीद : माणिक साहा

अगरतला। त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने सोमवार को कहा कि अगरतला-कोलकाता से बंगलादेश तक लंबे समय से प्रतीक्षित रेल संचार इस साल शुरू होने की उम्मीद है और इसके बाद दोनों शहरों के बीच पहुंच की समय-सीमा घटकर 10 घंटे रह जाएगी। साहा ने कहा कि अगरतला रेलवे स्टेशन के आधुनिकीकरण के लिए 235 करोड़ रुपये से अधिक आवंटित किए गए हैं और पिछले नौ वर्षों में उत्तर पूर्वी राज्यों की दशा में सुधार हुआ है। इसके अलावा, त्रिपुरा और क्षेत्र के अन्य राज्यों में रेल कनेक्टिविटी में काफी सुधार हुआ है और अब इसका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विस्तार हो रहा है। उन्होंने कहा कि रेलवे लाइन का विस्तार अब अगरतला से बंगलादेश तक हुआ है, जिसके बारे में पहले कभी नहीं सोचा गया था। यह केवल केंद्र सरकार की एक्ट ईस्ट नीति के कारण संभव है। उदयपुर, कुमारघाट और विभिन्न उच्च गुणवत्ता वाली सुविधाओं से युक्त धर्मनगर रेलवे स्टेशन के आधुनिकीकरण के लिए 96 करोड़ रुपये से अधिक स्वीकृत किए गए हैं।

सैनिक वाहन-कार भिड़ंत में दंपति की मौत, बालिका समेत दो घायल

श्रीगंगानगर। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में आज सैनिक और कार में आमने-सामने की टक्कर हो जाने से एक युवा दंपति की मौत हो गई। दंपति की बालिका सहित दो व्यक्ति घायल हो गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र में श्रीगंगानगर-अबोहर बाईपास पर जोड़कियां रेलवे फाटक के पास सुबह लगभग 11 बजे यह भीषण दुर्घटना हुई। पुलिस के अनुसार एक वाहन को ओवरटेक करते समय सैनिक ट्रक तथा कार में आमने-सामने की टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जोर से हुई कि कार का आगे का हिस्सा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। कार चला रहे शख्स की वहीं मौत हो गई जबकि महिला, बालिका और युवक को अत्यंत घायल अवस्था में हनुमानगढ़ टाउन सिविल अस्पताल पहुंचाया गया। डॉक्टर ने जांच की तो महिला की भी मृत्यु हो गई थी। मृतक दंपति की पहचान शीशपाल मेघवाल (35),मंजू (32) निवासी गांव चौटाला, थाना डबवाली सदर, जिला सिरसा (हरियाणा) के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि इस दंपति की पुत्री मनीषा (13) और घायल हुए एक अन्य युवक सुभाष (32) का इलाज चल रहा है। दुर्घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने बताया कि मृतक दंपति के शव पोस्टमार्टम करवाने के बाद परिवार वालों को सौंप दिए गए हैं।

मेरी माटी मेरा देश अभियान के अंतर्गत शिल्पग्राम में अमृत कलश चित्रकारी कार्यशाला

उदयपुर। मेरी माटी मेरा देश अभियान के अंतर्गत पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर द्वारा शिल्पग्राम में अमृत कलश चित्रकारी कार्यशाला का आयोजन सोमवार को किया गया। केंद्र निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने बताया कि प्रतिभागियों ने मांडना, वारली, पारंपरिक चित्रकारी, स्वंत्रता सेनानी, मोर की चित्रकारी, तिरंगे के रंगों में रंगी हुई मटकी, फड़ कला एवं आदिवासी कला को प्रतिभागियों ने अमृत कलश पर बखूबी उकेरा। ये कार्यशाला मेरी माटी मेरा देश अभियान के अंतर्गत आयोजित की गई है जिसका मूल लक्ष्य मातृभूमि की रक्षा करने वाले उन सभी वीरों को वंदन एवं देश की मिट्टी को नमन करना है।

जन चेतना के माध्यम से चलने वाला यह अभियान राष्ट्र की उपलब्धियों का उत्सव है। इसके अंतर्गत राष्ट्र के वीर सपूतों का सम्मान किया जाएगा एवं अनेक कार्यक्रम गांव, पंचायत, ब्लॉक शहरी स्थानीय निकाय, राज्य, और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाएंगे। इस अभियान में शीला फलक का लोकार्पण किया जाएगा जिस पर वीरों के नाम की पट्टी लगी हुई होगी, पंचप्रण प्रतिज्ञा कर उसकी सेल्फी अपलोड की जाएगी, 75 स्वदेशी पौधों के साथ अमृत वाटिका का निर्माण किया जाएगा, एवं देश के वीरों तथा उन के परिवारों का वंदन किया जाएगा, राष्ट्रीय ध्वज फहराकर, राष्ट्रगान गाया जाएगा।

शाहपुरा जिले को राजस्थान में नंबर वन बनाने का प्रयास करेंगें : महेश जोशी

भीलवाड़ा। राजस्थान के प्रदेश के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री महेश जोशी ने नवगठित शाहपुरा जिला के स्थापना दिवस समारोह में शामिल होकर शाहपुरा जिले के आज से अस्तिव में आने की घोषणा की। जोशी ने यज्ञ में भाग लेकर कार्यक्रम की शुरूआत की। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत वर्चुअल माध्यम से जुड़े। नवसृजित शाहपुरा जिला का धर्मगुरूओं की उपस्थिति में विधि-विधान से स्थापना कर बटन दबाकर उद्घाटन शिला पट्टिका का अनावरण किया। सोमवार को शाहपुरा जिला बन गया है। आईएएस डा. मंजू ने पहले जिला कलेक्टर के रूप में कार्यभार संभाला। पीएचईडी मंत्री महेश जोशी की मौजूदगी में आयोजित शाहपुरा जिला स्थापना दिवस समारोह में अजमेर रेंज आइजी लता मनोज कुमार, भीलवाड़ा कलेक्टर आशीष मोदी, एसपी आदर्श सिद्धु, अन्य जिला अधिकारी, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष अक्षय त्रिपाठी, पीसीसी मेंबर अनिल व्यास, संदीप जीनगर सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। शाहपुरा जिला कलेक्टर डा. मंजू ने अधिसूचना को पढ़कर सुनाया तथा सभी का स्वागत किया। समारोह के बाद महेश जोशी ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि आज से शाहपुरा प्रदेश के 50 जिलों में शामिल हो गया है। आज से शाहपुरा नये जिले के रूप में अस्तित्व में आ गया है। शाहपुरा जिले के लोगों को बधाई। राज्य सरकार जनता के साथ मिलकर शाहपुरा को प्रदेश का नंबर वन जिला बनाने का प्रयास करेगी।

संभागायुक्त ने मेडिकल कॉलेज पहुंचकर विभाग प्रमुखों से की चर्चा

इंदौर। मध्यप्रदेश के इंदौर संभागायुक्त मालसिंह आज एमजीएम मेडिकल कॉलेज पहुंचे और उन्होंने यहां पर सभी विभागों के प्रमुखों से चर्चा की। आधिकारिक जानकारी के अनुसार संभागायुक्त ने कहा कि एमजीएम मेडिकल कॉलेज प्रदेश का प्रतिष्ठित मेडिकल साइंस का संस्थान है। यह देश में अव्वल बने, इस बात का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि सभी एचओडी अपने-अपने विभागों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के अधीन एमवाय हॉस्पिटल में मालवा निमाड़ के दूर दराज़ के गांवों से मरीज़ उपचार के लिए आते हैं। सभी डॉक्टर्स चिकित्सा के दौरान इन दीन दुखियों के चेहरे को ध्यान में रखें और उन्हें अपनत्व के भाव से उपचार प्रदान करें। संभागायुक्त ने प्रत्येक विभागाध्यक्षों से उनकी समस्याओं के बारे में जाना और कहा कि मेडिकल कॉलेज को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए जो भी आवश्यक होगा, उसे पूरा किया जाएगा। बैठक में डीन मेडिकल कॉलेज डॉ संजय दीक्षित के अलावा सभी अधीनस्थ चिकित्सालयों के अधीक्षक और विभागाध्यक्ष मौजूद थे। संभागायुक्त ने एमजीएम मेडिकल कॉलेज के अधीन हुए नव निर्माण कार्यों की भी समीक्षा की। इस दौरान पीआईयू और हाउसिंग बोर्ड के अधिकारी भी उपस्थित थे।

सेंथिल बालाजी की याचिका खारिज, ईडी को हिरासत में लेने की अनुमति

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने धन शोधन के आरोपी तमिलनाडु के मंत्री वी सेंथिल बालाजी और उनकी पत्नी की अपील खारिज करते हुए उनकी गिरफ्तारी की वैधता की पुष्टि के साथ ही प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को 12 अगस्त तक हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ करने की सोमवार को अनुमति दी।

न्यायमूर्ति ए एस बोपन्ना और न्यायमूर्ति एम एम सुंदरेश की पीठ ने बालाजी और उनकी पत्नी मेगाला की मद्रास उच्च न्यायालय के उस फैसले को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी, जिसमें बालाजी को ईडी की

हिरासत में लेने की अनुमति दी गई थी।

पीठ के समक्ष प्रवर्तन निदेशालय ने दलील दी कि सबूत जुटाने के लिए आरोपी मंत्री को गिरफ्तार करने और हिरासत में पूछताछ करने की आवश्यक शक्ति है।

बालाजी का पक्ष रखते हुए वरिष्ठ वकील मुकुल रोहतगी ने दलील दी कि ईडी के पास धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत किसी आरोपी से हिरासत में पूछताछ करने का कोई निहित अधिकार नहीं है। मेगाला की याचिका में मद्रास उच्च न्यायालय के 14 जुलाई और चार जुलाई 2023 के आदेशों की वैधता को चुनौती दी गई थी, जिसमें उनकी बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका को सुनवाई के लिए योग्य नहीं बताते हुए खारिज कर दिया गया था। मंत्री बालाजी के खिलाफ कार्रवाई मई में शीर्ष अदालत के फैसले के बाद हुई, जिसमें 2011 और 2016 के बीच परिवहन मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान रिश्वत लेकर नौकरी के मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और ईडी को उनसे पूछताछ करने की अनुमति दी गई थी।

ईडी ने 14 जून को बालाजी को गिरफ्तार किया था

ईडी ने 14 जून को बालाजी को गिरफ्तार किया था। इसके थोड़ी देर पश्चात उन्होंने सीने में दर्द की शिकायत की और फिर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। बाद में चेन्नई के कावेरी अस्पताल में उनकी कोरोनरी धमनी बाईपास सर्जरी हुई थी।

अभिषेक ने ईडी पर कसा तंज, कहा : सच की होगी जीत

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने सोमवार को कहा, सच्चाई शक्तिशाली है और विजय होगी।

बंगाल की मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी के भतीजे व सांसद बनर्जी ने ट्विटर पर कहा,प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की रैंकों पर अयोग्य और अक्षम लोगों को देखना वास्तव में निराशाजनक है जिनके पास सप्ताह में दो बार अपने राजनीतिक संरक्षकों की सेवा में मीडिया में मनगढ़ंत कहानियां प्रसारित करने की अद्वितीय प्रतिभा है।

उन्होंने कहा,अफसोस की बात है कि अपने जांच प्रयासों में वर्षों और करदाताओं के पैसे का निवेश करने के बावजूद वे लगातार अदालत के सामने ठोस सबूत पेश करने में विफल रहते हैं जिससे देश की सेवा करने की उनकी जिम्मेदारी की स्पष्ट रूप से उपेक्षा होती है।

उन्होंने कहा, न तो ईडी और न ही मीडिया प्रकाशनों में पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी नेताओं की तरह ही मुझ पर या मेरी पत्नी पर स्पष्ट रूप से आरोप लगाने का आत्मविश्वास, साहस या दृढ़ विश्वास है।

बनर्जी ने दोहराया,कोई भी इन दुर्भाग्यपूर्ण और निराश लोगों के प्रति सहानुभूति महसूस करने के अलावा कोई मदद नहीं कर सकता है। ये हमारे लिए आश्चर्य की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ते हैं कि ईडी की सजा दिलाने की दर महज 0.5 प्रतिशत क्यों है।

आदमपुर में दम्पति ने किया सुसाइड, किया था प्रेम विवाह

हिसार। हरियाणा में हिसार जिले के आदमपुर में एक दम्पति ने रविवार देर रात आत्महत्या कर ली। दोनों ने करीब एक साल पहले प्रेम विवाह किया था। पुलिस ने बताया कि दम्पति के शव सोमवार सुबह आदमपुर मंडी में एक मकाने से बरामद किये गये थे, जहां वह किराए पर रह रहा था। मृतकों की शिनाख्त रामचंद्र और संतोष के रूप में की गई है।

मूल रूप से खासा ढाणी निवासी रामचंद्र की आदमपुर में प्लास्टिक और लोहे के सामान वेल्डिंग करने की दुकान थी। सूचना मिलने पर पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंच कर शव कब्जे में लेकर हिसार नागरिक अस्पताल भेज दिये। फिलहाल मौत के कारणों का पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है तथा वह मृतकों के परिजनों के बयान दर्ज करने के बाद ही शवों का पोस्टमार्टम कराएगी।

बीएसएफ ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर दो पाकिस्तानी ड्रोन मार गिराए

एजेंसी

जालंधर। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने वाले दो पाकिस्तानी ड्रोन मार गिराया।

बीएसएफ के जनसंपर्क अधिकारी ने सोमवार को बताया कि रविवार को रात दस बजे सीमा पर तैनात सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने जिला अमृतसर के गांव रतन खुर्द के पास के क्षेत्र में भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने वाली एक संदिग्ध उड़ने वाली वस्तु (ड्रोन) की गूंज सुनी। निर्धारित

अभ्यास के अनुसार, सैनिकों ने ड्रोन को रोकने का प्रयास किया।

उन्होंने बताया कि आज सुबह, पंजाब पुलिस के साथ एक संयुक्त तलाशी अभियान चलाया गया। क्षेत्र की तलाशी के दौरान, सैनिकों ने गांव रतन खुर्द के नजदीक एक खेत से 01 बैटरी (क्षतिग्रस्त) के साथ 01 हेक्साकॉप्टर ड्रोन बरामद किया ।

उन्होंने बताया कि एक अन्य घटना में सोमवार तड़के सीमा पर तैनात सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने जिला तरनतारन के गांव राजोके के पास पाकिस्तान से भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने वाली एक संदिग्ध उड़ने वाली वस्तु (ड्रोन) की गूंज सुनी। निर्धारित अभ्यास के अनुसार, सैनिकों ने ड्रोन को रोकने का प्रयास किया।

अधिकारी ने बताया कि बाद में पंजाब पुलिस के साथ एक संयुक्त तलाशी अभियान दौरान सैनिकों ने गांव राजोके के खेत से 01 क्वाडकॉप्टर , मॉडल-डीजेआई मैट्रिक आरटीके- 300 ड्रोन बरामद किया गया।

हिमाचल के कारोबारी परेशान, नहीं आ रहे सैलानी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय राजमार्ग-5 और रेल लाईन बंद होने से तथा मौसम की मार से राज्य में पर्यटन कारोबारी परेशान है। इन दिनों शिमला, मनाली, चायल, डलहौजी सहित अन्य पर्यटन स्थलों पर होटल खाली हैं। वीकेंड पर भी सैलानी प्रदेश के पर्यटन स्थलों का रुख नहीं कर रहे हैं।

कालका-शिमला राष्ट्रीय राजमार्ग बंद होने के कारण सैलानी राज्य का रुख नहीं कर रहे हैं।इसके अलावा 15 अगस्त के सीजन पर भी पानी फिरने का खतरा है। पर्यटन स्थल खाली होने से पर्यटन कारोबारी मायूस हैं। कालका-शिमला नेशनल हाईवे पिछले पांच दिन से बंद है।

वहीं, कालका और शिमला के बीच रेल जुलाई के पहले हफ्ते से बंद है। सैलानियों के लिए शिमला पहुंचना मुश्किल हो गया है। चंड़ीगढ़-मनाली नेशनल हाईवे पर भी भूस्खलन के कारण आवाजाही प्रभावित हो रही है।

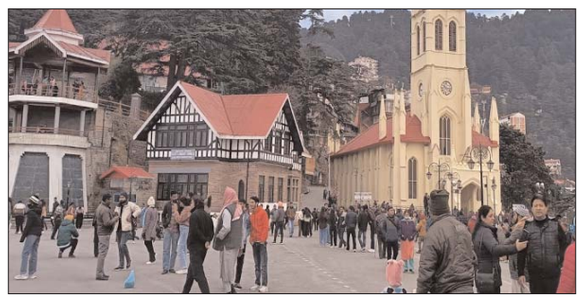

बीते करीब एक माह से कमरों की बुकिंग न होने से होटल व्यवसायी निराश हैं। होटलों के अलावा ट्रैवल एजेंट, टैक्सी ऑपरेटर, टूरिस्ट गाइड, फोटोग्राफरों, घोड़ा संचालकों सहित पर्यटन कारोबार से जुड़े अन्य लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

हिमाचल के पर्यटन विभाग के निदेशक अमित कश्यप ने बताया कि प्राकृतिक आपदा से प्रदेश में पर्यटन कारोबार को भारी नुकसान पहुंचा है, हालांकि तेजी से स्थिति सामान्य हो रही है। आने वाले दिनों में भारी बारिश का कोई अलर्ट नहीं है। राष्ट्रीय राजमार्ग बहाल होने के बाद सैलानियों की आमद में बढ़ोतरी होने की उम्मीद है।

कश्यप ने बताया कि पर्यटन कारोबारियों को 50 प्रतिशत राहत दी गई है।

इसके अलावा राहत देने के लिए पानी, बिजली के बिलों के भुगतान को बिना सरचार्ज के छह महीने के लिए स्थगित करने, कूड़ा शुल्क माफ करने, बिजली के फिक्स डिमांड चार्जेस छह महीने तक माफ करने, ऋणों को मई 2024 तक स्थगित करने और पर्यटन कारोबारियों को इमरजेंसी वर्किंग कैपिटल के लिए सरल शर्तों पर ऋण देने की सुविधा की मांग की गई है।

हिमाचल होटल एंड रेस्टोरेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष गजेंद्र सिंह ठाकुर का कहना है कि मौसम की मार से हिमाचल में पर्यटन उद्योग को भारी नुकसान पहुंचा है। ट्रैवल एजेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष नवीन पॉल और महासचिव मनू सूद का कहना है कि प्राकृतिक आपदाओं के बाद नेशनल हाईवे बंद होने से सैलानियों ने पर्यटन स्थलों का रुख करना बंद कर दिया है। 15 अगस्त के सीजन पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं।

शिमला होटल एंड टूरिज्म स्टेक होल्डर एसोसिएशन के अध्यक्ष मोहिंद्र सेठ ने प्रदेश और केंद्र सरकार से कालका-शिमला एनएच और रेल लाइन को जल्द बहाल करने की मांग उठाई है।

ओडिशा : एमबीपीवाई के तहत 4.13 लाख और लोग शामिल

भुवनेश्वर। ओडिशा में सामाजिक सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के प्रयास में मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने सोमवार को राज्य में अतिरिक्त 4.13 लाख आवेदकों के लिए मधु बाबू पेंशन योजना के लाभों को एक बार में मंजूरी दे दी।

एक आधिकारिक सूत्र ने कहा कि मुख्यमंत्री का यह फैसला सामाजिक सुरक्षा पेंशन के इच्छुक लोगों के लिए काफी खुशी लेकर आएगा। इसके साथ ही मधु बाबू पेंशन योजना का लक्ष्य बढ़ाकर 32.75 लाख कर दिया गया है क्योंकि पहले इस योजना के तहत 28.61 लाख लाभार्थियों को लाभ मिल रहा था।

मुख्यमंत्री कार्यालय के सूत्रों ने कहा कि सभी नए स्वीकृत लाभार्थियों को उनकी पहली पेंशन राशि अगले 15 अगस्त को जनसेवा दिवस पर ग्राम पंचायत मुख्यालय या वार्ड कार्यालयों में निर्वाचित प्रतिनिधियों की उपस्थिति में मिलेगी। सभी कलेक्टरों को शिविर के माध्यम से लाभार्थियों को पेंशन का सुचारू वितरण सुनिश्चित करने की सलाह दी गई है। ओडिशा सरकार मधु बाबू पेंशन योजना (एमबीपीवाई) के तहत 500 रुपये, 700 रुपये और 900 रुपये प्रति माह पर सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान करती है। इस योजना के तहत वृद्ध व्यक्ति, विधवाएं, विकलांग व्यक्ति, अविवाहित महिलाएं, ठीक हो चुके कुष्ठ रोगी, ओएसएसीएस द्वारा पहचाने गए एड्स रोगी, तलाकशुदा और निराश्रित, ट्रांसजेंडर व्यक्ति, विधवाएं, सीओवीआईडी प्रभावित परिवारों के अनाथ बच्चे तथा अन्य कमजोर लोग जैसे लाभार्थी आते हैं।

मेघालय : नाबालिग लड़की से बलात्कार व हत्या के आरोप में व्यक्ति गिरफ्तार

शिलांग। मेघालय पुलिस ने वेस्ट गारो हिल्स जिले में एक नाबालिग लड़की का बलात्कार करने के बाद उसकी हत्या करने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। यह जानकारी पुलिस ने सोमवार को दी। आरोपी की पहचान चंदा एम. संगमा के रूप में हुई है, जिसे पुलिस ने बलात्कार, छेड़छाड़ और आपराधिक गतिविधियों का आदतन अपराधी बताया है। उसे रविवार रात फुलबाड़ी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत जांगरापारा गांव से गिरफ्तार किया गया। आरोपी संगमा 01 अगस्त को जघन्य अपराध करने के बाद छिपा हुआ था जिसे ग्रामीणों ने देखा और पुलिस को सूचित किया। संगमा के खिलाफ आईपीसी की धारा 302/376 ए आईपीसी आर/डब्ल्यू धारा 5/6 पॉक्सो अधिनियम के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने कहा कि संगमा को गिरफ्तार किया गया और उन पर बलात्कार, छेड़छाड़ और आपराधिक धमकी का आरोप लगाया गया।

कोलकाता के निमतला घाट पर दो छात्रों के डूबने की आशंका

कोलकाता। उत्तरी कोलकाता में गंगा नदी के निमतला घाट पर नहाते समय दो छात्रों के डूबने की आशंका है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि छात्र बंटी सिंह और क्रिसिंह अपने 13 अन्य दोस्तों के साथ रविवार की रात भूतनाथ मंदिर में पूजा करने गए थे। उन दोनों ने गंगा नदी में डुबकी लगाने का निर्णय लिया जिसके बाद उनके दोस्त मंदिर में दर्शन करने चले गए। जब वे मंदिर से घाट पर वापस लौटे तो उन्हें लापता पाया। प्रत्यक्षदर्शियों ने नॉर्थ पोर्ट पुलिस स्टेशन से कहा कि दोनों छात्र नदी में बह गए।

हाईकोर्ट ने लक्सर बाढ़ मामले में ठोस जानकारी उपलब्ध कराने के दिये निर्देश

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने तीर्थ नगरी हरिद्वार के लक्सर में बाढ़ को लेकर दायर जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए शिकायतकर्ता को 10 दिन में शपथपत्र पेश कर ठोस जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।

मामले की सुनवाई मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी एवं न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की युगलपीठ में हुई। नगर पालिका की ओर से आज अदालत में अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी।

शिकायतकर्ता की ओर से कहा गया

कि लक्सर के मुख्य बाजार में अतिक्रमण के चलते अभी भी पानी भरा हुआ है जिसकी वजह से पानी की निकासी नहीं हो पा रही है। इसके बाद अदालत ने शिकायतकर्ता को निर्देश दिए कि वह संबंधित क्षेत्र का फोटोग्राफ और जानकारी पेश करे। नगर पालिका की ओर से तो जानकारी दी गयी है वह तथ्यों से परे है।

हाईकोर्ट बार के अधिवक्ताओं की ओर से उपलब्ध करायी गयी जानकारी पर उच्च न्यायालय ने इस मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए जनहित याचिका दायर कर ली। जिसमें कहा गया कि लक्सर में बाढ़ से जन जीवन प्रभावित हुआ है। इससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इस मामले में अगली सुनवाई 17 सितंबर को होगी।

गहलोत ने नवसृजित जिलों एवं संभागों का किया उद्घाटन

जयपुर । राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोमवार को नवसृजित जिलों और तीन संभागों की शिला पट्टिकाओं का अनावरण कर प्रदेशवासियों को बड़ी सौगात दी।

गहलोत ने बिड़ला सभागार में हुए नवसृजित जिलों के स्थापना कार्यक्रम में वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच हवन में आहूति दी और राजस्थान के चहुंमुखी विकास के लिए कामना की। उन्होंने प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देकर कहा कि नए जिलों और संभागों के सृजन से राज्य की प्रशासनिक इकाइयों का विकेन्द्रीकरण होगा, उनकी क्षमताएं बढ़ेगी और कानून व्यवस्था अधिक मजबूत होंगी। आमजन के प्रशासनिक कार्य अब नजदीक ही सुगमता से होंगे।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए जनभावनाओं में घुली यह राजस्थान की एक नई सकारात्मक शुरूआत है। इससे प्रदेश को नई ऊंचाइयां मिलेंगी। हमने राज्यहित में

फैसले लिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में वर्ष 1956 में दो करोड़ की जनसंख्या पर 26 जिले बने थे वहीं 67 साल में आबादी तीन गुना बढ़ने के बावजूद सात ही नए जिलों का गठन हुआ था।

अब राज्य सरकार ने जनभावना के सम्मान में प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण के लिए एक साथ 19 नए जिलों का गठन किया है।

इसके पीछे हर एक प्रदेशवासी का सपना राजस्थान को वर्ष 2030 तक हर क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल कराना है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महात्मा गांधी के विचारों और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि जिला गठन समिति का कार्यकाल छह माह बढ़ाया गया है, जिससे आमजन की न्यायोचित मांगों पर परीक्षण कर पूरा किया जाएगा।

गहलोत ने कहा कि जिस तरह पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने देश को खाद्य सुरक्षा, शिक्षा, सूचना और रोजगार प्राप्त करने का अधिकार कानून बनाकर दिया।

उसी तरह हमने भी स्वास्थ्य का अधिकार (आरटीएच), राजस्थान न्यूनतम आय गारंटी, न्यूनतम 1000 रुपए सामाजिक सुरक्षा पेंशन का अधिकार राजस्थान के हर पात्र व्यक्ति को दिया है।

इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी में 125 दिन रोजगार, महात्मा गांधी नरेगा के 125 दिन के रोजगार और अनिवार्य एफआईआर की गारंटी दी है। अब राजस्थान रेगिस्तान नहीं बल्कि गारंटी देने वाला प्रदेश बन गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले चार साल में शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, कृषि, रोजगार, पानी, बिजली सहित हर क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हुआ है। विद्यालय क्रमोन्नयन, नए महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों की स्थापना, चिकित्सा केंद्रों की शुरूआत और हर ब्लॉक में रीको क्षेत्र का विकास किया गया है।

तीन लाख से अधिक सरकारी नौकरियां दी जा रही हैं। साथ ही अलग से कृषि बजट पेश करने के साथ निजी क्षेत्र में हजारों रोजगार, स्वरोजगार को बढ़ाने के लिए नीतियां सहित पेपर लीक प्रकरणों में सख्त कार्रवाई के प्रावधान किए गए हैं।

गहलोत ने कहा कि हमारे कुशल वित्तीय प्रबंधन से योजनाएं संचालित की जा रही हैं। राजस्थान की योजनाओं और नीतियों की चर्चा पूरे देश में हो रही है।

जनजातीय वाद्ययंत्रों की मधुर धुन पर थिरकेगा झारखण्ड

रांची। झारखंड में जहां चलना नृत्य और बोलना संगीत हो, उस धरा में 32 जनजातीय के वाद्ययंत्रों की अविस्मरणीय गूंज के हम सभी साक्षी बनेंगे।

रीझ रंग रसिका रैली में जब पारंपरिक वेशभूषा में मांदर की थाप पर कदम थिरकेंगे, तब पूरा झारखण्ड थिरकेगा और वाद्ययंत्रों का संगम झारखण्ड आदिवासी महोत्सव का आगाज करेगा। झारखण्ड आदिवासी महोत्सव -2023 में रीझ रंग रसिका रैली मुख्य आकर्षण का केंद्र होगा। 09 अगस्त को 12 बजे अपराह्न रैली धुमकुड़िया भवन, करमटोली चौक से जेल रोड स्थित बिरसा मुंडा स्मृति उद्यान के लिए प्रस्थान करेगी। रैली में झारखण्ड के 32 विभिन्न जनजातिय वाद्ययंत्रों के संगम होगा। रैली में असुर, बैंगा, बंजारा, बथुडी, बेदिया, बिंझिया, बिरहोर, बिरजिया, चेरो, चिक-बड़ाईक, गोंड, गोडाईल, हो, करमाली, खड़िया, कंवर, खरवार, खोंड, किसान, कोरा, कोरवा, लोहरा, महली, माल पहाड़िया, मुंडा, उरांव, परहईया, संथाल, सौरिया पहाड़िया, सवर, भूमिज एवं कोल जनजाति के कलाकार अपने वाद्ययंत्रों के साथ नजर आएंगे। मालूम हो कि 09 एवं 10 अगस्त को आयोजित झारखण्ड आदिवासी महोत्सव 2023 की तैयारी अंतिम चरण में है। महोत्सव में अरुणाचल प्रदेश, असम, आंध्र प्रदेश, ओडिसा, राजस्थान के जनजातीय समुदाय के मेहमान अपनी परंपरा और संस्कृति सेरूबरू कराएंगे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत नागपुरी, सरायकेला छऊ, डोमकच, पायका समेत अन्य नृत्य की प्रस्तुति कलाकारों द्वारा की जायगी।

शार्ट न्यूज

55 प्रतिशत आबादी वाले ओबीसी समाज की विरोधी है कांग्रेस : एस राहुल

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश साहू राठौर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष एस राहुल ने राहुल गांधी की अस्थायी संसद की सदस्यता बहाल किए जाने पर कांग्रेस पार्टी द्वारा मनाए जा रहे जश्न पर हैरानी जताई है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने पूरे ओबीसी समाज को गाली देकर अपमानित किया था। और इस मेहनतकश समाज को चोर बताया था। जो यह दिखलाता है कि पूरी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी 55त्न आबादी वाले पिछड़े समाज की विरोधी है। और राहुल गांधी के द्वारा इस समाज को अपमानित किए जाने की घटना को समर्थन कर रही है। प्रदेश अध्यक्ष एस राहुल ने कहा कि राहुल गांधी की सजा पर रोक केवल लगी है ,उन्हें निर्दोष करार नहीं दिया गया है। भविष्य की बात होगी जब उन्हें दोषमुक्त किया जाएगा या सजा दी जाएगी । वैसे भी राहुल गांधी पहले भी संसद में लंबे समय तक रहे हैं और पूरे देश ने देखा है कि वह पार्लियामेंट में मनोरंजन से ज्यादा कुछ नहीं करते दिखते हैं।

एक्सप्रेस-वे पर वर्ना और स्कार्पियो से किया स्टंट, पुलिस ने तीनों कारो को सीज किया

नोएडा। नोएडा के सबसे व्यस्ततम एक्सप्रेस वे पर स्कार्पियो और वर्ना कार सवारों ने स्टंट किया और रील बनाई। इसे बाद में सोशल मीडिया के इंस्टाग्राम प्लेटफार्म पर अपलोड कर वायरल कर दिया। वीडियो का संज्ञान लेते हुए थाना एक्सप्रेस वे पुलिस ने 03 गाडियों , स्कॉर्पियो यूपी 16 डीएन 1213, स्कॉर्पियो यूपी 16 डीएन 5418 और वर्ना कार रंग काला यूपी 16 डीजे 9500 को चिह्नित कर सीज कर दिया गया है। ये वीडियो 43 सेकेंड का है। इसमें काले रंग की गाडियों (स्कॉर्पियो, वर्ना आदि) में सवार होकर सनरूफ व खिड़कियों से बाहर निकल कर युवकों द्वारा रील बनाई गई। यही नहीं वीडियो में साफ दिख रहा है। कार चालक पूरी सड़क को घेरकर चल रहे है। जिसमें सनरूफ को खोलकर उसके बाहर बैठे हुए है। कार की स्पीड भी काफी है। ये वीडियो कई फेज में शूट किया गया। जिसके एडिट कर रील बनाकर इसे वायरल किया गया। पुलिस ने बताया कि ये वीडियो थाना एक्सप्रेस वे क्षेत्र में छह अगस्त को बनाया गया। जिस रोड पर इसे बनाया गया ये नोएडा और ग्रेटरनोएडा की लाइफ लाइन मानी जाती है। जिस पर रोजाना लाखों की संख्या में वाहन निकलते है। इस रोड पर इस तरह का स्टंट बड़े हादसे को दावत दे सकता है।

ग्रेनो वेस्ट में पानी की किल्लत से लोग परेशान

गौतम बुद्ध नगर। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के गैलेक्सी रॉयल सोसाइटी के निवासियों ने पानी की समस्या को लेकर बिल्डर और प्राधिकरण के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। उनका कहना है, कि सोसाइटी में 2 दिनों से पानी की समस्या बनी हुई है। जिससे परेशान होकर सोसाइटी वालों का धैर्य टूट गया और बिल्डर के खिलाफ नारेबाजी करते हुए इन लोगों ने सड़क को जाम कर दिया। इस दौरान थाना बिसरख की पुलिस भी पहुंच गई और बिल्डर के प्रतिनिधी के आश्वासन के बाद सोसाइटी के लोग माने और प्रदर्शन को खत्म किया। गैलेक्सी रॉयल सोसायटी के निवासी पानी की समस्या को लेकर परेशान हैं और जब 2 दिन से पानी नहीं आया, तो उनका धैर्य टूट गया तो उन्होंने सड़क जाम कर दिया। इस दौरान सूचना मिलने पर थाना बिसरख की पुलिस भी पहुंच गई। सोसाइटी के निवासियों का कहना है कि सोसाइटी में 517 फ्लैट हैं, सभी फ्लैट में रहने वाले लोगों की संख्या लगभग ढाई से तीन हजार है। लेकिन सोसायटी के लोगों को प्राप्त मात्रा में पानी नहीं मिल पा रहा है। लोगों का कहना है कि ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने जो सोसाइटी को पानी का कनेक्शन दिया है वह 2 इंच का है, जिसमें पानी का प्रेशर बहुत कम होता है। जिससे लोगों को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिल पा रहा है।

मोदीनगर में बुजुर्ग की गला दबाकर हत्या

मोदीनगर। मोदीनगर में निवाडी थाना क्षेत्र के गांव खिदोड़ा में गाय दिलाने की बात कहकर घर से बुलाकर 80 साल के बुजुर्ग की गला दबा कर हत्या कर दी गई। हत्या करने के बाद शव को ईख के खेत में दबा दिया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गांव खिदोड़ा निवासी 80 साल के संतराम त्यागी अपने भतीजे नितिन त्यागी के साथ रहते थे। रात को वह खाना खाने की बात कहकर घेर में गए थे, लेकिन वहां पर नहीं पहुंचे। काफी तलाश करने के बाद भी जब वह नहीं मिले तो उनकी तलाश शुरू की गई। काफी तलाश करने के बाद भी जब वह नहीं मिले तो परिजनों ने निवाड़ी थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई। नितिन त्यागी ने बताया कि ग्रामीणों ने बताया कि वह गांव के ही टिंकू के साथ देखे गए थे। उन्होंने बताया कि टिंकू संतराम को गाय दिलाने की बात कहकर अपने साथ ले गए थे। उन्हें अंदाजा था कि उनकी जेब में पैसे होंगे इसलिए लूट करने के चक्कर में उन्होंने संतराम की गला दबा कर हत्या कर दी। शव को ओम दत्त त्यागी के ईख के खेत में फेंक दिया। तलाश करने पर सोमवार सुबह शव खेत में मिल गया। एसीपी ज्ञान प्रकाश राय ने बताया कि गांव के ही टिंकू त्यागी के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। कई लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। जल्द की हत्याकांड का खुलासा कर दिया जाएगा।

नाबालिग छात्रा से छेड़छाड़ व मारपीट

मोदीनगर। मोदीनगर में भोजपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में दोपहर 12 बजे के आसपास स्कूल से लौट रही नाबालिग छात्रा से मनचले ने छेड़छाड़ कर दी। आरोपी ने छात्रा का पीछा भी किया। पीड़िता ने किसी तरह भाग कर अपनी जान बचाई। कार्रवाई की मांग को लेकर देर शाम थाने पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। मामला दो समुदाय से जुड़ा होने के कारण क्षेत्र में तनाव का माहौल बना हुआ है। उक्त गांव निवासी एक अनुसूचित जाति के व्यक्ति की 16 वर्षीय पुत्री मोदीनगर के एक इंटर कॉलेज में कक्षा 11 की छात्रा है। बताया गया कि दोपहर छात्रा स्कूल से घर लौट रही थी। आरोप है कि इसी बीच गांव के रास्ते में खड़े गैर संप्रदाय के कई युवक छात्रा पर अश्लील फब्तियां कसने लगे। छात्रा ने उनकी बात को अनसुना कर दिया और आगे बढ़ गई। इससे उनका दुस्साहस बढ़ गया और एक आरोपी ने छात्रा का पीछा कर उससे छेड़छाड़ की। आरोप है कि विरोध करने पर मनचले ने छात्रा को अपशब्द भी कहे। घर पहुंच छात्रा ने परिजनों को आपबीती बताई। जानकारी के बाद परिजन आरोपी के घर शिकायत करने पहुंचे तो आरोपी पक्ष ने उन्हें गाली गलौज कर वहां से भाग दिया। इससे ग्रामीणों ने आक्रोश पैदा हो गया। बड़ी संख्या में ग्रामीण कार्रवाई की मांग को लेकर थाने पहुंचे। एसीपी ने बताया कि पीड़ित पक्ष ने अभी तहरीर नहीं दी है। पुलिस ने आरोपी के घर दबिश दी मगर वह फरार मिला। तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

फ्लैट में लगी आग, कमरे में फंसे युवक को बचाया

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो वेस्ट की श्रीराधा स्काई गार्डन सोसाइटी के टावर टी-9 के फ्लैट में रविवार सुबह आग लग गई। आग में एक युवक अंदर फंस गया जबकि दूसरा किसी तरह बाहर निकलने में सफल हो गया। बाहर निकले युवक ने अन्य निवासियों की मदद से फ्लैट के कमरे का गेट तोड़कर दोस्त को बचाया। सोसोइटी निवासियों ने पानी का इंतजाम कर आग पर काबू पाया। निवासियों का आरोप है कि सोसाइटी का फायर सिस्टम खराब है। हादसे के दौरान फ्लैट के अंदर स्प्रिंक्लर भी नहीं चले। आग लगने के कारणों की जांच जारी है। सोसाइटी के टावर-9 में अभिषेक शर्मा का 12वें फ्लोर पर फ्लैट है। फ्लैट में उनके दोस्त मृदुल और सिद्धार्थ रहते हैं। रविवार की सुबह जब दोनों उठे तो कमरे में आग लगी थी। आग फ्लैट के डाइनिंग एरिया समेत अन्य हिस्सों में पहुंच गई। मृदुल किसी तरह फ्लैट के बाहर आ गया, लेकिन सिद्धार्थ कमरे में फंस गया। धुंआ देखकर आसपास के निवासी और सुरक्षाकर्मी भी मौके पर पहुंच गए। मृदुल ने लोगों की मदद से गेट तोड़कर सिद्धार्थ को बाहर निकाला। उसके बाद आग पर काबू पानी की कोशिश की। आरोप है कि आग से फ्लैट के अंदर लगे स्प्रिंक्लर नहीं चले। जिस कारण आग फैल गई। बाद में निवासियों ने बाथरुम और अन्य फ्लैटों से पानी लाकर आग पर काबू पाया। आग से लाखों रुपये का सामान जल गया है। वहीं घटना के बाद से निवासियों में बिल्डर के खिलाफ काफी रोष है। उधर आग पर काबू पाने के काफी देर बाद दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची।

दिल्ली सरकार ने मानी किसानों की मांग; बढ़ाया सर्किल रेट

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने कृषि भूमि और यमुना बांध से सटी कृषि भूमि का सर्किल रेट 10 गुना तक बढ़ाने का फैसला किया है। सोमवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दी। कृषि भूमि के सर्किल रेट 2008 के बाद पहली बढ़ाए गए हैं। पहले पूरी दिल्ली में कृषि भूमि का सर्किल रेट एक सामान होता था, लेकिन अब जिलावार तय किया गया है। साथ ही, इसे हरित क्षेत्र गांव, शहरीकृत गांव और ग्रामीण गांव श्रेणी में बांटा गया है। साउथ और नई दिल्ली जिले में कृषि भूमि का सर्किल रेट सबसे अधिक 5 करोड़ रुपए प्रति एकड़ होगा। इस प्रस्ताव को मंजूरी के लिए एलजी के पास भेजा जाएगा।

दिल्ली सचिवालय में बैठक के बाद राजस्व मंत्री आतिशी ने बताया कि सर्किल रेट बढ़ाने के लिए प्रस्ताव मुख्यमंत्री के समक्ष रखा गया, जिसे तत्काल मंजूरी दे दी। वहीं इसे लेकर

अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा कि दिल्ली के किसानों की ये बहुत समय से मांग थी कि उनकी खेती की जमीन के रेट बढ़ाए जाएं। कुछ वर्ष पहले हमने बढ़ाए भी थे, पर उस वक्त कुछ कारणों से वो लागू नहीं हो पाए। आज मुझे दिल्ली के अपने सभी किसान भाइयों को बताते हुए खुशी हो रही है कि आपकी यह मांग पूरी हुई। आपका बेटा आपके हित के लिए हमेशा काम करता रहेगा।

नहीं मिलता था उचित दाम

किसानों को प्रति एकड़ 53 लाख रुपए मिलता था, जिस कारण किसान अपनी जमीन बेचने से दूरी बनाते थे। जब किसानों को उनकी जमीन का कम मुआवजा मिलता है तो वे सरकारी प्रोजेक्ट के लिए अपनी जमीन नहीं देना चाहते हैं। ऐसे में कई बार मामला कोर्ट तक जाता है और लंबे समय तक केस चलता है। इस वजह से बहुत से विकास कार्यों को पूरा करने में देरी हो जाती है।

इन जिलों में होगा फायदा

राजस्व मंत्री आतिशी ने कहा कि नए सर्किल रेट के मुताबिक नई दिल्ली जिला और दक्षिणी जिला में 5 करोड़ रुपए प्रति एकड़, उत्तर, पश्चिम, उत्तर-पश्चिम व दक्षिण पश्चिम जिले में 3 करोड़ रुपए प्रति एकड़, मध्य और दक्षिण पूर्वी दिल्ली में 2.5 करोड़ रुपए प्रति एकड़ और शहादरा, उत्तरी-पूर्वी व पूर्वी जिला में 2.25 करोड़ रुपए प्रति एकड़ निर्धारित किया गया है।

शरारती तत्वों ने धार्मिक स्थल में लगाई आग

गुरुग्राम। नूंह में हुई हिंसा के बाद रविवार देर रात खांडसा मंडी में कुछ शरारती तत्वों ने एक धार्मिक स्थल में आग लगा दी। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने आस पास के सीसीटीवी की फुटेज को अपने कब्जे में ले लिया और केयर टेकर के बयान पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। धार्मिक स्थल पर सेवा करने वाले संदीप ने पुलिस को बताया कि वह एक चालक है और तकरीबन 17 साल से यहां सेवा कर रहा है। रविवार की देर रात वह 1 बजे के करीब झज्जर से आया था। देखा की धार्मिक स्थल पर आग लगी है। उन्होंने आस पास के लोगों को बुलाकर आग बुझाई और पुलिस को सूचना दी। सेक्टर -37 थाना पुलिस घटना स्थल पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस द्वारा चेक की गई सीसीटीवी फुटेज में सामने आया कि वारदात को अंजाम देने वाले 4 -5 युवक हैं। फिरोज गांधी कालोनी निवासी केयर टेकर घसीटे राम ने कहा कि वह धार्मिक स्थल से घर के लिए रात साढ़े आठ बजे निकला था।

तिरंगे के सम्मान के लिए हो जरूरी कार्रवाई :बिडलान

नई दिल्ली। हर वर्ष 15 अगस्त से पहले देश में सरकार द्वारा एक मुहिम चलाई जाती है हर घर तिरंगा पिछले वर्ष 2022 में भी यह मुहिम चलाई गई थी , वर्ष 2022 में जो भी तिरंगा घर की छत पर लगाया गया आज 2023 में भी वह उतारा नहीं गया उसके लिए मैंने कई बार माननीय पुलिस अधीक्षक अंबाला डीजीपी हरियाणा प्रधानमंत्री ऑफिस में लिखित में ट्वीट किया के इस बारे में बनती कार्रवाई की जाए , मेरे मीडिया के साथियों की बदौलत यह बात आगे तक पहुंचाई भी गई लेकिन किसी भी घर की छत से तिरंगे को नहीं हटाया गया जबकि वहां तिरंगा बड़ी बुरी हालत में लगा हुआ था जीर्ण शीर्ण अवस्था में था ,आज 2023 का वर्ष है सरकार ने एक नोटिफिकेशन जारी की है के 13 अगस्त से 15 अगस्त तक हर घर की छत पर तिरंगा लहराए जाए सरकार से मेरी एक मांग है कि पिछले वर्ष तिरंगे का जो अपमान करवाया गया कम से कम उस सम्मान को तो बचाया जाए पिछले वर्ष के लगाए गए तिरंगे को अभी तक सम्मान पूर्वक नहीं उतारा गया तिरंगे के सम्मान के लिए एक फ्लैग कोड बना है जिस का सम्मान करना हर भारतीय का कर्तव्य है और उसका सम्मान करवाना प्रशासन का सरकार का भी कर्तव्य बनता है लेकिन मीडिया के साथियों की बदौलत मीडिया में मेरी दी गई शिकायतों के बावजूद भी इस बारे में कोई भी एक्शन सरकार द्वारा प्रशासन द्वारा नहीं लिया गया सरकार से हाथ जोड़कर विनती है के तिरंगे का सम्मान करवाया जाए तिरंगे का अपमान करना किसी के लिए भी अच्छी बात नहीं है मै अरुण बिडलान अधिवक्ता राष्ट्रीय प्रवक्ता व लीगल हेड रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले) खेल प्रकोष्ठ , प्रशासन से तिरंगे के सम्मान के लिए जरूरी कार्रवाई करने के लिए विनती करता हूं।

केजरीवाल सरकार की राशन वितरण प्रणाली हो गई पूरी तरह फेल

मोदी जी की सरकार द्वारा उपलब्ध मुफ्त राशन नहीं उठा पा रही दिल्ली सरकार

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा है कि केजरीवाल सरकार की राशन वितरण प्रणाली पूरी तरह फेल हो गई है। दिल्ली सरकार न तो गरीब राशन कार्ड धारकों के पास राशन पहुंचा पा रही है और न ही नए राशन कार्ड बना पा रही है। यह स्थिति तो तब है, जब गरीबों के लिए मुफ्त अनाज केंद्र सरकार उपलब्ध कराती है।

बिधूड़ी ने आज यहां आयोजित संवाददाता सम्मेलन में इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि दिल्ली में रह रहे 10 लाख प्रवासी गरीब मजदूरों का मोदी जी की 'वन नेशन वन राशन कार्ड' योजना के तहत दो महीने का

राशन नहीं मिला। पिछले दो महीनों से उनके राशन का 1 लाख 25 हजार क्विंटल गेहूँ और चावल दिल्ली सरकार ने गोदामों से नहीं उठाया।

उन्होंने कहा कि पिछले एक महीने से दिल्ली के राशन उपभोक्ताओं को चावल नहीं मिल पा रहा। इसका कारण यह है कि दिल्ली सरकार ने इस महीने का चावल FCI के गोदाम से उठाया ही नहीं। राशन विक्रेता दिल्ली सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के चक्कर काट रहे हैं लेकिन उन्हें कोई सही जवाब तक नहीं मिल पा रहा।

दिनदहाड़े घर में घुसकर पांच लाख के नकदी-आभूषण ले गए बदमाश

ग्रेटर नोएडा। ईकोटेक-3 थाना क्षेत्र के गांव जलपुरा में शनिवार दिनदहाड़े पति का दोस्त बनकर घर में घुसे बदमाश महिला के पांच लाख के आभूषण और 75 हजार रुपये नकदी ले गए। पति का कहना है कि बदमाशों ने नशीला पदार्थ सुंघाकर वारदात को अंजाम दिया। आरोपियों की तस्वीर सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। वहीं पुलिस ने नशीला पदार्थ सुंघाकर वारदात से इन्कार किया है। पुलिस इसे झांसा देकर धोखाधड़ी की वारदात मानकर जांच कर रही है। ईकोटेक-3 थाना क्षेत्र के जलपुरा गांव निवासी शाहिद ठेके पर मकान बनाता है। शनिवार को वह काम पर गया था। घर में पत्नी शाहीन व दो बच्चे थे। दोनों बच्चे स्कूल गए हुए थे। इसी दौरान दो बदमाश उनके घर के बाहर पहुंचे। दोनों बदमाश पहले बाहर स्थित एक दुकान पर रुके और उन्होंने गुटखा आदि कोई सामान लिया।

अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा का सामाजिक स्वागत परिचय सम्मेलन हुआ आयोजित

नई दिल्ली। अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा दिल्ली प्रदेश की नवनियुक्त प्राथमिक कार्यकारिणी का सामाजिक स्वागत परिचय सम्मेलन, 6 अगस्त, रविवार को बेगमपुर गांव ,रोहिणी दिल्ली में इंद्रप्रस्थ स्कूल पर रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री बलबीर सिंह जी का भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने दिल्ली प्रदेश की नवनियुक्त अंतरिम कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीऔर मार्गदर्शन किया।

इस कार्यक्रम में, दिल्ली के हर क्षेत्र से समाज के लोगो ने भाग लिया और श्री जय भगवान यादव की अध्यक्षता में गठित नवनियुक्त कार्यकारिणी को आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी। सभा में किराड़ी, पालम, बदरपुर ओर पटपटगंज की कॉलोनियों में मौजूद बहुसंख्य यादव आबादी ओर दिल्ली में स्थित 50 यादव गाँवों के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर श्री जय भगवान यादव जी की नेतृत्व वाली कार्यकारिणी में अपनी आस्था दिखाई और हर संभव सहयोग का वादा किया !

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे शकूरपुर से पूर्व पार्षद मनोज यादव व खानपुर से पार्षद ममता यादव ओर दिल्ली पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव का भी सभा की ओर से स्वागत किया गया। अध्यक्ष श्री जय भगवान जी ने बताया कि वो जल्द ही दिल्ली में अपनी कार्यकारिणी ओर अन्य प्रकोष्ट का विस्तार करेंगे ।

,,यादव महासभा के 100 साल पूर्ण होने के अवसर पर शताब्दी समारोह के कार्यक्रम आयोजित करेंगे और रेजांगला शहीदों की कलश यात्रा को दिल्ली के हर क्षेत्र में ले जाकर वीर शहीदों की गौरव गाथा के प्रति जन जन को जागरूक करेगें।

कांग्रेस कार्यालय पर विशाल सांकृतिक कार्यक्रम व बधाई समारोह का आयोजन किया गया

नई दिल्ली। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष, पूर्व विधायक जय किशन ने राहुल गांधी जी के सांसद सदस्यता बहाल व सुप्रीम कोर्ट द्वारा मानहानि के मुकदमे मे सजा पर रोक का फैसला करके लोकतंत्र की आवाज को मजबूत किया।

इंडिया की आवाज अब फिर से संसद में गूंजेगी । देश की जनता के अधिकारों की आवाजो को मजबूत करने के लिए माननीय न्यायालय का आभार व्यक्त किया । देश में एक नई उपलब्धि कांग्रेस पार्टी को आपके द्वारा दी गई है । देश के लोगों में एक नई

खुशी की लहर है । इस अवसर पर 10 जनपद में एक विशाल सांस्कृतिक कार्यक्रम व बधाई समारोह का आयोजन किया गया ।

जय किशन ने श्री राहुल गांधी को बधाई दी कांग्रेस के वरिष्ठ सीनियर कार्यकर्ता व दिल्ली सरकार एवं केंद्र सरकार के कर्मचारी यूनियनों ने आभार व्यक्त किया इस मौके पर यूथ फ्रंट, बाल्मीकि वीर सेना, भूमिहीन संघर्ष समिति, अंबेडकर वीर सेना, दुर्बल नाथ वीर सेना, बौद्ध महासभा, गुरु रविदास महासभा, आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति, वाल्मीकि जन्म उत्सव कमेटी, आदि ने बड़े धूमधाम से बधाई समारोह मनाया गया ।

आईएमएस-डीआईए में ओरियंटेशन का आयोजन

नोएडा। नोएडा के सेक्टर-62 स्थित आईएमएस डिजाइन एण्ड इनोवेशन एकेडमी में छात्रों के लिए ओरियंटेशन का आयोजन हुआ। सोमवार को सेक्टर 62 स्थित संस्थान परिसर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान डिजाइन इंडस्ट्री के एक्सपर्ट जुबिनव चड्ढा, डॉ. अनिंदिता रॉय, गौरव गुप्ता एवं अंबर परिदी सहाय ने डिजाइन के क्षेत्र में अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया। वहीं कार्यक्रम के डीआईए की निदेशिका डॉ. अनुराधा मोदक के साथ संस्थान के शिक्षकों ने भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ. अनुराधा ने छात्रों से रचनात्मक एवं सकारात्मक सोच बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि संस्थान छात्र के जीवन में फाइंडिंग स्टोन की तरह है। आप संस्थान में नियमित अध्ययन के दौरान अर्जित थ्योरी एवं प्रायोगिक ज्ञान, समय प्रबंधन एवं निरंतर प्रयास कर सफलता की बुलंदी छू सकते हैं। वहीं कार्यक्रम के दौरान छात्रों को उनके प्रोफेशनल दायित्व की शपथ दिलाते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी यह शपथ लेते हैं कि हम अपने-अपने हुनर के अनुसार राष्ट्र एवं समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। डॉ. अनिंदिता रॉय ने छात्रों को बताया कि डिजाइन जन-जन के लिए होता है। उन्होंने कहा कि सीखने के लिए एक अच्छे माहौल का होना जरूरी है, आप कहीं भी, कभी भी, कुछ भी सीख सकते हैं।

मॉरीशस में साहित्यकार डॉ. कविता सिंह प्रभा को सम्मानित किया गया

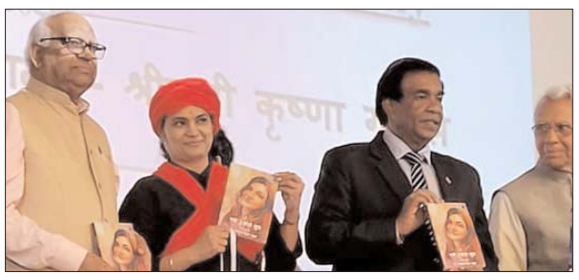

नई दिल्ली। मॉरीशस में दिल्ली की बेटी और बेंगलुरु की नामचीन साहित्यकार डॉ. कविता सिंह प्रभा को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। 3-4 अगस्त को मॉरीशस में आयोजित द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन भारत तथा मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था विश्व हिंदी सचिवालय एवं आई पी फाउंडेशन इंटरनेशनल के तत्वावधान में किया गया था। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी एवं उप महासचिव शुभंकर मिश्र, आई पी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल की अध्यक्ष डॉ. स्मिता मिश्रा,वरिष्ठ साहित्यकार शारदा मित्तल , प्रीति मिश्रा एवं सौम्या मिश्रा सहित देश-विदेश के अनेक साहित्यकारों व प्रतिभागियों के समक्ष डॉ. कविता सिंह प्रभा के तीसरे काव्य संकलन एक टुकड़ा धूप का लोकार्पण मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपण के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। मौके पर राष्ट्रपति श्री रुपण ने डॉ. प्रभा को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया । साथ ही इस कार्यक्रम में आई पी फाउंडेशन इंटरनेशनल ने डॉ.कविता को राष्ट्र गौरव साहित्यिक सम्मान पत्र से अलंकृत किया।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी डॉ प्रभा ने मारीशस साहित्यिक व सांस्कृतिक सम्मेलन में सरस्वती वंदना, हिंदी लोकगीत, एकल काव्य पाठ, नुक्कड़ नाटक स्वराज आदि के माध्यम से अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए भारत-मॉरीशस मैत्री संबंध को सांस्कृतिक मजबूती प्रदान की। डॉ. प्रभा द्वारा लिखित नुक्कड़ नाटक व उन्हीं के निर्देशन में सभी प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन किया।

उपराज्यपाल ने लोक नायक अस्पताल का दौरा किया

कैंसर के इलाज हेतु लगाई गई लीनियर एक्सेलेरेटर और सीटी सिम्युलेटर मशीन के पूर्ण उपयोग के निर्देश दिए

नई दिल्ली। दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने अचानक लोक नायक अस्पताल पहुंचकर वहां हाल ही में कैंसर रोगियों के इलाज के लिए स्थापित आधुनिक लीनियर एक्सेलेरेटर और सीटी सिम्युलेटर मशीन का जायजा लिया। उन्होंने निदेशक को एक से अधिक शिफ्ट के जरिए मशीन का पूरा उपयोग करने के निर्देश दिए। LINAC मशीन को हाल ही में भारत सरकार द्वारा प्रदत्त 38.7 करोड़ रुपये की लागत से खरीदा गया है, जिसका मकसद कैंसर के मरीजों को नवीनतम रेडियोथेरेपी प्रदान करना है। इसके संचालन में शुरुआत में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इनमें वोल्टेज में उतार-

चढ़ाव शामिल है जिसके कारण कई बार मशीन खराब हुई और इसकी मरम्मत के लिए तकनीशियनों को अमेरिका से बुलाना पड़ा। इसके अलावा मशीन को संचालित करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षित तकनीशियनों की कमी भी है। इस वजह से मशीन स्थापित किए जाने के बाद से पिछले एक महीने में इसका उपयोग केवल 18 रोगियों के इलाज के लिए किया जा रहा है, जबकि इसकी क्षमता प्रति शिफ्ट 10-15 रोगियों का उपचार करने की है। उपराज्यपाल ने दिल्ली गेट-जेएलएन मार्ग-आसफ अली रोड क्षेत्र के पैदल दौरे के दौरान अचानक लोक नायक अस्पताल का भी दौरा किया।

उपराज्यपाल ने अस्पताल के निदेशक को रेडियोथेरेपी का इंतजार कर रहे कैंसर रोगियों के तुरंत उपचार के लिए LINAC मशीन को उसकी अधिकतम क्षमता तक चलाने का निर्देश दिया। यह मशीन टार्गेट लेजर-गाइडेड बीम रेडियोथेरेपी के जरिये केवल कैंसर कोशिकाओं को टार्गेट करती है और आसपास के स्वस्थ ऊतकों को नष्ट नहीं करती है। 360 डिग्री में घूमने वाली इस रेडियोथेरेपी मशीन का उपयोग किसी भी प्रकार के कैंसर के इलाज में किया जा सकता है।

भारत सरकार द्वारा फंडेड यह मशीन पिछले महीने ही अस्पताल में स्थापित की गई थी। वर्तमान में यह मशीन आठ घंटे की एक पाली में चार प्रशिक्षित तकनीशियनों द्वारा चलाई जा रही है, जिसका लाभ 10-15 मरीजों को मिल सकता है।

हालांकि, यह मशीन एक महीने से अधिक समय पहले स्थापित की गई थी, मशीन में खराबी के कारण यह अब तक केवल 18 रोगियों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो सकी है।

सेक्टर में सीवर ओवरफ्लो होने से सेक्टरवासी परेशान

गौतम बुद्ध नगर। ग्रेटर नोएडा के सेक्टर बीटा 1 में पिछले 15 दिनों से सीवर ओवरफ्लो होने की वजह से लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

अब इसी को लेकर लोगों ने अपना विरोध जताया और इकट्ठा होकर प्राधिकरण के खिलाफ नारेबाजी की और साफ तौर पर कहा कि अगर जल्द से जल्द ही समस्या का समाधान नहीं हुआ तो सेक्टरवासी प्राधिकरण के खिलाफ धरना और प्रदर्शन करने को मजबूर होंगे। सीवर ओवरफ्लो होने की समस्याओं से परेशान ई ब्लॉक के लोग इकट्ठा हुए और इन लोगों ने प्राधिकरण के खिलाफ नारेबाजी की। इस दौरान काफी महिलाएं भी इकट्ठा रहें और सभी में प्राधिकरण के खिलाफ काफी रोष भी देखने को मिला।

सेक्टर बीटा 1 में रहने वाले हरेंद्र भाटी ने बताया कि सेक्टर में पिछले 15 दिनों से जगह जगह पर सीवर ओवरफ्लो हो रहे हैं।

सीवर ओवरफ्लो होने की वजह से बहुत ज्यादा बदबू आ रही है और डेंगू जैसी बीमारी के मच्छर पनप रहे हैं। इसकी वजह से लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

ई ब्लॉक में रहने वाली अंजू ने बताया कि सीवर ओवरफ्लो होने की वजह से पूरा दिन बदबू आती है और यहां पर मच्छर भी पनप रहे हैं। हमने शिकायत की जिसके बाद प्राधिकरण की तरफ से इसको देख भी गए लेकिन समस्या का अभी तक कोई भी समाधान नहीं हुआ है।

संपादकीय

संसद की गरिमा कायम रखना सत्तापक्ष के साथ विपक्ष की भी जिम्मेदारी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विपक्षी दलों के नकारात्मक रवैये का संकेत करते हुए यह जो कहा कि वे अभी भी पुराने ढर्रे पर चल रहे हैं और न तो खुद कुछ करना चाहते हैं और न ही दूसरों को करने देना चाहते हैं, उससे इन्कार करना कठिन है। नकारात्मकता की राजनीति के कारण ही संसद का मानसून सत्र बाधित है। विपक्ष एक ओर तो मणिपुर की घटनाओं को लेकर बहुत ही चिंतित और व्यथित नजर आ रहा है, लेकिन वह उस पर संसद में सार्थक चर्चा भी नहीं होने दे रहा है।

यह समझना कठिन है कि दिल्ली में सेवाओं संबंधी विधेयक पर विपक्ष ने जिस तरह लोकसभा की चर्चा में भाग लिया, उसी तरह वह अन्य विधेयकों के पेश और पारित होने में शामिल होना क्यों आवश्यक नहीं समझ रहा है। संसद तभी चल सकती है जब सत्तापक्ष और विपक्ष, दोनों के बीच कोई समझबूझ और समन्वय कायम हो, लेकिन पिछले कुछ समय से यह देखने में आ रहा है कि सत्तापक्ष और विपक्ष किसी भी मसले पर एकमत नजर नहीं आते। यही कारण है कि संसद में सार्थक बहस का अभाव बढ़ता चला जा रहा है।

बात केवल मानसून सत्र में हो रहे हंगामे की ही नहीं है, इसके पहले भी जो सत्र हुए, उनका अधिकांश हिस्सा गतिरोध और हंगामे की भेंट चढ़ गया। यहां तक कि बजट सत्र में भी हंगामा ही होता रहा। बजट सत्र के दौरान इतना अधिक हंगामा हुआ कि आम बजट को बिना चर्चा के ही पारित करना पड़ा। मोदी सरकार के इस कार्यकाल में यह स्मरण करना कठिन है कि किस विधेयक पर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच गहन-विस्तृत चर्चा हुई थी।

विपक्ष को यह समझना चाहिए कि विरोध के लिए विरोध की राजनीति से वह अपना ही नुकसान कर रहा है। मानसून सत्र में विपक्षी दलों ने जैसा रवैया दिखाया, उससे आम जनता के बीच यही संदेश गया कि वे जानबूझकर संसद को नहीं चलने देना चाहते हैं। विपक्षी दलों को यह समझना चाहिए कि संसद में हंगामा करके उन्हें कोई राजनीतिक लाभ नहीं मिलने वाला। इसके विपरीत आम जनता यह देख-समझ रही है कि उसकी नकारात्मक राजनीति कई अहम मसलों पर समाधान निकलने में बाधक बन रही है।

विपक्ष अपने इस रवैये के पीछे चाहे जैसे तर्क दे, लेकिन उसे इसकी अनुभूति होनी चाहिए कि संसद की गरिमा और महत्व कायम रखने के लिए उसकी भी उतनी ही जिम्मेदारी है जितनी कि सत्तापक्ष की। सत्तापक्ष और विपक्ष में मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन लोकतंत्र तो मतभेदों के बीच समन्वय कायम करने की विधा है। यदि सत्तापक्ष और विपक्ष में सामंजस्य का अभाव इसी तरह बढ़ता रहा तो इससे केवल संसद की गरिमा ही नहीं गिरेगी, बल्कि पक्ष-विपक्ष के बीच राजनीतिक कटुता भी बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त यदि विधेयक समय पर संशोधित-परिवर्तित और पारित नहीं होते तो उससे देश की प्रगति का काम भी रुकेगा।

स्थायी शांति के लिए जीतना होगा आम आदमी का भरोसा

हाल ही में पुलिस ने कुलगाम से चलने वाले आतंकी भर्ती अभियान का पर्दाफाश किया था। उस समय एक शोधकर्ता के साथ दो अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया था। वे कश्मीरी युवाओं को पैसे का लालच देकर आतंकवादी बनाते थे। कुलगाम की इस घटना को दरअसल आतंकवाद के जाल की एक कड़ी भर माना जा सकता है। इस तरह की गतिविधियां आतंकी संगठन उस समूचे इलाके में चलाते रहते हैं। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच हुई मुठभेड़ में तीन जवानों की शहादत ने फिर यही दर्शाया है कि इस इलाके में आतंकवाद की जड़ें अभी गहरी हैं और उसके सफाए के लिए सरकार को सख्ती बढ़ानी होगी। शुक्रवार को कुलगाम के हलान जंगल में आतंकियों ने सेना के टेंट पर गोलीबारी की थी। इसके बाद जब सुरक्षा बलों के जवानों ने जवाबी कार्रवाई की, तब मुठभेड़ ने गंभीर शक्ल अख्तियार कर ली। इसमें इलाके की जटिलता की वजह से आतंकियों की ओर से की गई गोलीबारी में सुरक्षा बलों के तीन जवान घायल हो गए। बाद में उनका जीवन नहीं बचाया जा सका। खबरों के मुताबिक, हमलावर आतंकी पीर पंजाल क्षेत्र से घुसपैठ करके आए थे। मुठभेड़ के बाद भाग गए आतंकियों की तलाश के लिए अभियान में ड्रोन की भी मदद ली गई, लेकिन इससे यही जाहिर होता है कि कश्मीर में सरकार की ओर से आतंकवाद को खत्म करने के लिए चलाए गए तमाम अभियानों और काफी हद तक मिली कामयाबियों के बावजूद आज भी वहां आतंकी संगठनों के पांव पूरी तरह उखाड़े नहीं जा सके हैं। हाल के महीनों में आतंकवादी हमलों में सुरक्षा बलों के कई जवानों को जान गंवानी पड़ी है। हालांकि इस बीच कई स्तरों पर अपने अभियानों में सुरक्षा बलों को बड़ी सफलता मिली है और अचानक मुठभेड़ की स्थिति पैदा होने पर खासी संख्या में आतंकवादी भी मारे गए। एक रपट के मुताबिक, अकेले इस साल की शुरुआत से लेकर पांच जुलाई तक चले चौबीस से ज्यादा अभियानों में कम से कम सत्ताईस आतंकी मारे गए। इसमें आठ स्थानीय और उन्नीस विदेशी आतंकी थे। पिछले साल भी सवा सौ आतंकियों को मार गिराया गया था। शायद इसी हताशा और निराशा में आतंकी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए हमले की कोशिश करते रहते हैं। मगर मारे गए आतंकियों की पहचान के आधार पर यह साफ होता है कि कश्मीर में आतंकवाद की समस्या अगर अब भी बनी हुई है, तो इसके पीछे विदेशी तत्त्वों का हाथ है। हालांकि यह छिपा नहीं है कि भारत में घुसपैठ से लेकर आतंकी हमले में जिन संगठनों का हाथ रहा है, वे पाकिस्तान स्थित ठिकानों से अपनी गतिविधियां संचालित करते रहे हैं। मगर इस मसले पर अक्सर फजीहत होने और कठघरे में खड़ा होने के बावजूद पाकिस्तान अपनी आदत से बाज नहीं आता। गौरतलब है कि हाल ही में पुलिस ने कुलगाम से चलने वाले आतंकी भर्ती अभियान का पर्दाफाश किया था। उस समय एक शोधकर्ता के साथ दो अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया था। वे कश्मीरी युवाओं को पैसे का लालच देकर आतंकवादी बनाते थे। कुलगाम की इस घटना को दरअसल आतंकवाद के जाल की एक कड़ी भर माना जा सकता है। इस तरह की गतिविधियां आतंकी संगठन उस समूचे इलाके में चलाते रहते हैं। मसले की ठीक समझ न रखने वाले कुछ भोले-भाले लोग उनके जाल में फंस भी जाते हैं। हालांकि स्थानीय पुलिस और सुरक्षा बलों को वहां के नागरिकों में भरोसा बहाल करने में कामयाबी भी मिली है और ऐसे तमाम मामले सामने आए हैं, जिनमें स्थानीय लोगों ने आतंकियों का साथ देने से इनकार किया। लेकिन पाकिस्तान की सीमा से लगे इस राज्य में कई स्तरों पर एक साथ काम करने की जरूरत है। घुसपैठ पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए हर तरह की सख्ती बरती जाए, वहीं स्थानीय लोगों में भरोसा पैदा कर उनका सक्रिय सहयोग लिया जाए, ताकि आतंकियों को पनाह देने वालों के खिलाफ ठोस कदम उठाए जा सकें।

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस- 8 अगस्त 2023 पर विशेष

वृद्धों को बंधन नहीं, आत्म-गौरव के रूप में स्वीकारें

- ललित गर्ग -

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस समाज एवं परिवार के निर्माण की दिशा में वरिष्ठ नागरिकों द्वारा किए गए प्रयासों को मान्यता देने के लिए मनाया जाने वाला एक प्रयोजनात्मक अवसर एवं उत्सव है। यह दिन उन तरीकों को खोजने के लिए भी मनाया जाता है कि कैसे समाज में बुजुर्ग लोगों की उपेक्षाओं एवं उनके प्रति बरती जा रही उदासीनता की त्रासदी से उन्हें मुक्ति देकर उन्हें सुरक्षा कवच मानने की सोच को विकसित किया जाये ताकि वृद्धों के स्वास्थ्य, निष्कंटक एवं कुंठारहित जीवन को प्रबंधित किया जा सकता है। वृद्धों को बंधन नहीं, आत्म-गौरव के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन द्वारा प्रारंभ किये इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य संसार के बुजुर्ग लोगों को सम्मान देने के अलावा उनकी वर्तमान समस्याओं के बारे में जनमानस में जागरूकता बढ़ाना है। प्रश्न है कि दुनिया में वृद्ध दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई? क्यों वृद्धों की उपेक्षा एवं प्रताड़ना की स्थितियां बनी हुई है? वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि वृद्धों की उपेक्षा के इस गलत प्रवाह को रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है।

नये विश्व की उन्नत एवं आदर्श संरचना बिना वृद्धों की सम्मानजनक स्थिति के संभव नहीं है। वर्तमान युग की बड़ी विडम्बना एवं विसंगति है कि वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सृसंस्कृत परिवार परम्परा पर काला दाग है। परिवार के वृद्ध हमें कभी बोझ के रूप में दिखाई न दें, हमें यह कभी नहीं सोचना है कि इनकी उपस्थिति हमारी स्वतंत्रता को बांधित करती है। उन्हें पारिवारिक धारा में बांधकर रखा जाये। लेकिन हम सुविधावादी एकांगी एवं संकीर्ण सोच की तंग गलियों में भटक रहे हैं तभी वृद्धों की आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है। हम पारिवारिक जीवन में वृद्धों को सम्मान दें, इसके लिये सही दिशा में चले, सही सोचें, सही करें। इसके लिये आज विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति एवं परिवार-क्रांति की जरूरत है।

हमारा भारत तो बुजुर्गों को भगवान के रूप में मानता है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण है कि माता-पिता की आज्ञा से भगवान श्रीराम जैसे

अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर वनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। फिर क्यों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है। कटू सत्य है कि वृद्धावस्था जीवन का अनिवार्य सत्य है। जो आज युवा है, वह कल बूढ़ा भी होगा ही, लेकिन समस्या की शुरुआत तब होती है, जब युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों को उपेक्षा की निगाह से देखने लगती है और उन्हें अपने बुढ़ापे और अकेलेपन से लड़ने के लिए असहाय छोड़ देती है। आज वृद्धों को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। वृद्ध लोगों के लिये यह जरूरी है कि वे वार्धक्य को ओढ़े नहीं, बल्कि जीएं।

वृद्ध समाज इतना कुंठित एवं उपेक्षित क्यों है, एक अहम प्रश्न है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार अनेक स्वस्थ एवं आदर्श समाज-निर्माण की योजनाओं को आकार देने में जुटी है, उन्हें वृद्धों को लेकर भी चिन्तन करते हुए वृद्ध-कल्याण योजनाओं को लागू करना चाहिए, ताकि वृद्धों की प्रतिभा, कौशल एवं अनुभवों का नये भारत-सशक्त भारत के निर्माण में समुचित उपयोग हो सके एवं आजादी के अमृतकाल को वास्तविक रूप में अमृतमय बना सके। अपने को समाज एवं परिवार में एक तरह से निष्प्रयोज्य समझे जाने के कारण वृद्ध सर्वाधिक दुःखी रहता है।

वृद्ध समाज को इस दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने के लिये सरकार के द्वारा ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में बुजुर्गों के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार और अन्याय को समाप्त करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय है।

यह सच्चाई है कि एक पेड़ जितना ज्यादा बड़ा होता है, वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता है यानि वह उतना ही विनम्र और दूसरों को फल देने वाला होता है, यही बात समाज के उस वर्ग के साथ भी लागू होती है, जिसे आज की तथाकथित युवा तथा उच्च शिक्षा प्राप्त पीढ़ी बूढ़ा कहकर वृद्धाश्रम में छोड़ देती है। वह लोग भूल जाते हैं कि अनुभव का कोई दूसरा विकल्प दुनिया में है ही नहीं।

अनुभव के अखूट खजाने के सहारे ही दुनिया भर में बुजुर्ग लोगों ने अपनी अलग दुनिया बना रखी है। जिस घर को बनाने में एक इंसान अपनी पूरी जिंदगी लगा देता है, वृद्ध होने के बाद उसे उसी घर में एक तुच्छ वस्तु समझ लिया जाता है। बड़े बूढ़ों के साथ यह व्यवहार देखकर लगता है जैसे हमारे संस्कार ही मर गए हैं। बुजुर्गों के साथ होने वाले अन्याय के पीछे एक मुख्य वजह सामाजिक प्रतिष्ठा मानी जाती है। तथाकथित व्यक्तिवादी एवं सुविधावादी सोच ने समाज की संरचना को बदसूरत बना दिया है। सब जानते हैं कि आज हर इंसान समाज में खुद को बड़ा दिखाना चाहता है और दिखावे की आड़ में बुजुर्ग लोग उसे अपनी शान-शौकत एवं सुंदरता पर एक काला दाग दिखते हैं। आज बन रहा समाज का सच डरावना एवं संवेदनहीन है। आदमी जीवनमूल्यों को खोकर आखिर कब तक धैर्य रखेगा और क्यों रखेगा जब जीवन के आसपास सबकुछ बिखरता हो, खोता हो, मिटता हो और संवेदनाशून्य होता हो। डिजरायली का मार्मिक कथन है कि यौवन एक भूल है, पूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चाताप।' वृद्ध जीवन को पश्चाताप का पर्याय न बनने दे।

संवेदनशून्य समाज में इन दिनों कई ऐसी घटनाएं प्रकाश में आई हैं, जब संपत्ति मोह में वृद्धों की हत्या कर दी गई। ऐसे में स्वार्थ का यह नंगा खेल स्वयं अपनों से होता देखकर वृद्धजनों को किन मानसिक आघातों से गुजरना पड़ता होगा, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। वृद्धावस्था मानसिक व्यथा के साथ सिर्फ सहानुभूति की आशा जोहती रह जाती है। इसके पीछे मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां काम करती हैं। वृद्धजन अव्यवस्था के बोझ और शारीरिक अक्षमता के दौर में अपने अकेलेपन से जूझना चाहते हैं पर इनकी सक्रियता का स्वागत समाज या परिवार नहीं करता और न करना चाहता है। बड़े शहरों में परिवार से उपेक्षित होने पर बूढ़े-बुजुर्गों को 'ओल्ड होम्स' में शरण मिल भी जाती है, पर छोटे कस्बों और गांवों में तो ठुकराने, तरसाने, सताए जाने पर भी आजीवन घुट-घुट कर जीने की मजबूरी होती है। यद्यपि 'ओल्ड होम्स' की स्थिति भी ठीक नहीं है।

पहले जहां वृद्धाश्रम में सेवा-भाव प्रधान था, पर आज व्यावसायिकता की चोट में यहां अमीरों को ही प्रवेश मिल पा रहा है। ऐसे में मध्यमवर्गीय परिवार के वृद्धों के लिए जीवन का उत्तरार्द्ध पहाड़ बन जाता है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिक्र में प्रायः जहां पुरुष वृद्धों की सुबह-शाम खप जाती है, वहीं महिला वृद्ध एक नौकरानी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है।

पर कौन सोचता है, किसे फुर्सत है, वृद्धों की फिक्र किसे हैं? भौतिक जिंदगी की भागदौड़ में नई पीढ़ी नए-नए मुकाम ढूंढने में लगी है, आज वृद्धजन अपनों से दूर जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर कवीन्द्र-रवीन्द्र की पंक्तियां गुनगुनाने को क्यों विवश है-'दीर्घ जीवन एकटा दीर्घ अभिशाप', दीर्घ जीवन एक दीर्घ अभिशाप है।

विश्व में हिंदी की बौद्धिकता के साथ व्यवसायिकता की जुगलबंदी

हिंदी भाषा करोड़ों भारतीय के दिलों में बसी हुई भाषा है। हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहां भी है राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है हिंदी की सार्वभौमिक स्वीकार्यता के कारण ही भारतीय राजनेताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था। उल्लेखनीय है कि हिंदी भाषा विदेशों में जितनी फल फूल रही है बल्कि हिंदी बोलने वाले भारतवंशी कई देशों के राष्ट्र प्रमुख भी हैं जैसे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, मॉरीशस के राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन, पुर्तगाल के एंटोनियो कोष्टा प्रधानमंत्री, श्री इरफान गुयाना के राष्ट्रपति, सुरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी, और सेसिल के राष्ट्रपति रामखेलावन पदस्थ हैं। इन देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के अलावा अंतर्राष्ट्रीय बाजार भी हिंदी के विस्तार का बड़ा माध्यम बना हुआ है। हिंदी मूलत: बड़ी विशाल एवं आसानी से बोली जाने वाली, लिखी जाने वाली भाषा है। भारत की भौगोलिक विशालता और विविधता के बावजूद हिंदी सर्व स्वीकार्य और देश की सर्व सम्मत भाषा है। यह अलग बात है कि अभी तक संवैधानिक रूप से इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो पाया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय आंदोलनकारियों ने यह महसूस किया की एकमात्र हिंदी भाषा ही ऐसी भाषा है जो दक्षिण के कुछ क्षेत्र को छोड़कर पूरे देश की संपर्क भाषा है। भारत के संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। पर हिंदी भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो भारत में विभिन्न भाषा भाषाई नागरिकों के मध्य विचार विनिमय और संपर्क के लिए एक बड़ा सहारा है।

हिंदी के विशाल स्वरूप को मद्दे नजर रख पूर्व राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी ने भी कहा हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का या भाषा का बहिष्कार नहीं किया यह शब्द हिंदी की पवित्रता और व्यापकता को इंगित करते हैं। वर्तमान परिस्थितियों एवं समय काल मैं पूरे विश्व में 45 करोड़ लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा है। इसकी सरलता एवं सहजता विश्व के लोगों को अत्यंत प्रभावित भी करती है। हिंदी के विद्वानों,शिक्षाविदों, लेखकों, रचनाकारों और युवा लेखकों द्वारा हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में अहम भूमिका भी निभाई है। कई नामचीन विद्वान लेखक जिन्होंने हिंदी को वैश्विक भाषाई शिखर पर पहुंचाया है। इसी अनुक्रम में 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमतेन हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का निर्णय भी लिया गया था। और हिंदी दिवस मनाने का एकमात्र उद्देश्य राजकीय कार्यालयों इसके व्यापक प्रचार प्रसार एवं पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की ही है। हिंदी भाषा को पूरे विश्व में द्वितीय भाषा के रूप में माना जाता है। हिंदी नए वैश्विक स्तर पर अपने चलन के कारण अंग्रेजी भाषा को भी काफी पीछे छोड़ दिया है। आज हिंदी भाषा का कंप्यूटर,इंटरनेट ई बुक, सोशल मीडिया, विज्ञापन, टेलीविजन रेडियो आदि क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जा रहा है। भारत की विशाल जनसंख्या विदेशी व्यापारियों के लिए एक बड़ा उपभोक्ता बाजार है।

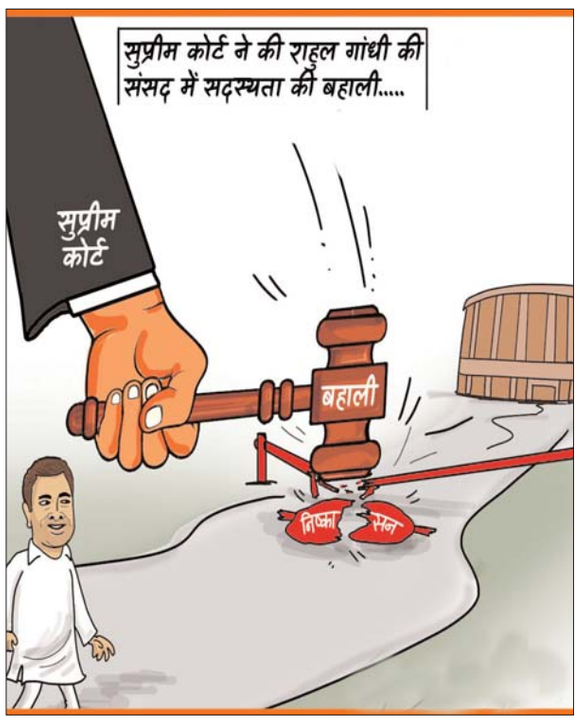

आखिरकार क्यों जलाभिषेक करने जा रहें कांवड़ियों को मारें जा रहें पत्थर

(सीए) मनीष कुमार गुप्ता

देश में बीते एक सप्ताह के अन्दर कावड यात्रा के दौरान हिंसा की कई गंभीर घटनाएं हुई है। दरअसल कांवड़ यात्रा के दौरान हुई ये सभी हिंसक घटनाएं कितनी गंभीर थी, इसका अंदाजा इसमें मरने वालों की संख्या देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। गौरतलब हूँ कि रविवार को जहां उत्तर प्रदेश के बरेली में हुई हिंसा की घटना के बाद वहा तैनात एसएसपी प्रभाकर चैधरी को तत्काल हटा दिया गया। वहीं दूसरी ओर सोमवार को हरियाणा के नूंह में शांतिपूर्वक जलाभिषेक करने जा रहें कावड़ियों पर मुस्लिम समुदाय के लोगों की ओर से पत्थरबाजी की गई, जिसके बाद हिंसा भड़क उठी। दरसअल हरियाणा के नूंह में भड़की यह हिंसा इतनी भयावह थी कि इसमें हरियाणा पुलिस के दो होमगार्ड जवानों की मौत हो गई। दरअसल फायरिंग पत्थरबाजी करने वालों की तरफ से हुई थी, जिसके बाद गोली लगने से हरियाणा पुलिस के दोनों होमगार्ड की मौत हो गई। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल है कि आखिरकार शांतिपूर्वक जलाभिषेक करने के लिए जा रहें कांवड़ यात्रियों पर कौन लोग पत्थरबाजी कर रहें हैं ? क्या कांवड़ियां पर हो रही पत्थरबाजी की घटनाओं के पीछे कहीं किसी की कोई सुनियोजित साजिश तो नहीं ? दरअसल ऐसे ही कुछ सवाल हैं जिनके जवाब आज हम इस लेख के माध्यम से तलाशने की कोशिश करेंगें।

क्या हिंसा को भड़काने के लिए कांवड़ियों पर की जा रहीं है पत्थरबाजी ?

दरअसल देश के अलग अलग प्रदेशों में हाल ही में हुई कांवड़ यात्राओं पर पत्थरबाजी की घटनाओं को यदि ध्यान से देखे तो इसमें कमोबेश एक ही समुदाय के लोगों के द्वारा पत्थरबाजी की गई है। ऐसे में यहां पर सवाल उठता है कि क्या इसके पीछे किसी राजनीतिक दल या फिर किसी बड़े संगठन की कोई साजिश है ? इसके अलावा यहा पर यह भी सवाल उठता है कि क्या देश में कांवड़ यात्रा पर पत्थरबाजी करवाकर कोई देश को दो सम्प्रदायों के बीच बाटना चाहता है ? क्योंकि यदि कांवड़ यात्रा के दौरान हुई हिंसा की घटनाओ को देखें तो ज्यादातर घटनाओं में पत्थरबाजी होने के बाद ही हिंसा भड़की है।

आखिरकार शांतिपूर्वक निकल रहीं कांवड़ यात्रा से किसको हो रही परेशानी ?

गौरतलब हूँ कि दो दिन पहले

देश में एक सप्ताह के अन्दर कांवड़ यात्रियों पर हुई पत्थरबाजी की वजह से भड़की भारी हिंसा

हरियाणा के नूंह और गुरूग्राम में कांवड़ यात्रा के दौरान हुई हिंसा में दो लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा हरियाणा में भड़की हिंसा इतनी भयावह थी कि उसे नियंत्रित करने में राज्य सरकार फेल नजर आती हुई दिखी। नतीजतन केंद्र सरकार को अर्धसैनिक बलों की 15 कंपनियों को हरियाणा में भेजना पड़ा। इतना हीं नहीं हरियाणा सरकार को एक दिन के लिए हिंसा ग्रस्त इलाके में कर्फ्यू लगाने के साथ ही इंटरनेट सेवाओ को भी बंद करना पड़ा। ऐसे में यहां पर सवाल उठता है कि आखिरकार शांतिपूर्वक निकल रहीं कांवड यात्राओं से किसको परेशानी हो रहीं है ? यहां पर यह सवाल भी पूछा जा सकता है कि जो लोग भी कांवड़ यात्रियों पर पत्थरबाजी कर रहें हैं उनको कांवड़ यात्रा से आखिर क्या दिक्कत हो रही है ? इतना हीं नहीं कांवड़ यात्रियों पर पत्थरबाजी व फायरिंग करने के लिए घरों की छतों पर इतनी भारी मात्रा में पत्थर और बंदूकें कहा से पहुंच रहें हैं ?

कांवड़ यात्रा पर हो रहीं पत्थरबाजी की घटनाओं पर क्यों मौन है समूचा विपक्ष ?

दरअसल सावन का महीना शुरू होने के बाद से देश के अलग अलग प्रदेशों में निकल रहीं कांवड़ यात्राओं पर लगातार पत्थरबाजी की घटनाएं हो रहीं हैं। इतना ही नहीं कांवड़ यात्राओं पर हो रहीं पत्थरबाजी से हिंसा भी भड़क रहीं है। गौरतलब हूँ कि इन घटनाओं में लोगों की जाने भी जा रहीं हैं। बावजूद इसके कांग्रेस सहित देश के तमाम विपक्षी दलों के नेताओं ने मौन धारण किया हुआ है। ऐसे में यहां पर यह सवाल उठना लाजिमी है कि सत्ता पक्ष की छोटी छोटी कमियों को बड़ा बनाकर संसद से लेकर सड़क तक हंगामा करने वाले विपक्ष के नेताओं को सांप क्यों सूंघ गया है। आज जब देश में कांवड़ यात्राओं पर एक विशेष समुदाय की ओर से पत्थरबाजी और फायरिंग की घटनाएं लगातार हो रहीं है तो तमाम विपक्षी दल चुप क्यों हैं। आज जब हिंसा के बीच विपक्ष को सरकार के साथ खड़े होकर लोगों से शांति की अपील करनी चाहिए तो विपक्ष के नेताओं ने चुप्पी साध ली है।

क्या विपक्षी दल अपने राजनीति फायदे-नुकसान की बात सोचकर मौन है ?

दरअसल बीते एक महीने में श्रावण मास के दौरान देश के विभिन्न प्रदेशों में कांवड़ यात्राएं निकल रहीं हैं। इस दौरान सड़कों और बाजारों से होकर गुजर रहीं इन कांवड़ यात्राओं पर एक विशेष धर्म के लोग अपने बहुलता वाले इलाकों में इस यात्रा के पहुंचने पर पत्थरबाजी कर रहें हैं। नतीजतन देश में कांवड़ यात्राओं पर हो रहीं पत्थरबाजी की इन घटनाओं के बाद व्यापक स्तर पर हिंसाएं भी भड़क रही है। लेकिन इतनी ज्यादा हिंसा की घटनाएं होने के बाद भी अभी तक विपक्ष के नेता ने कांवड़ यात्रियों पर पत्थर मारने वालों की ना तो निंदा की है और ना हीं उनपर कार्रवाई की मांग की है। ऐसे में यहां पर यह सवाल उठना लाजिमी है कि, क्या देश के विपक्षी दल मसलन कांग्रेस, आम आदमी पाटी, समाजवादी पार्टी,एनसीपी, आरजेडी, जेडीयू सहित अन्य राजनीतिक दल कांवड़ यात्रियों पर हो रहीं पत्थरबाजी पर अपने राजनीतिक फायदे-नुकसान की बात सोचकर मौन है ? यहां पर एक सवाल यह भी है कि क्या विपक्षी दल इसलिए कांवड़ यात्रियों पर पत्थरबाजी की निंदा नहीं कर रहें हैं। क्योंकि उन्हें पत्थरबाजी करने वाले एक विशेष समुदाय के नाराज होने का डर सता रहा है ? ऐसे में विपक्षी दलों की ओर से कांवड़ यात्रा पर हो रहीं पत्थरबाजी की घटना पर इस तरह से मौन रहने के कई मायने भी हो सकतें हैं। लेकिन आज देश में जिस तरह के हालात है उसको देखते हुए अपना राजनीतिक नफा-नुकसान भुलाकर सत्तापक्ष के साथ मिलकर देश में हो रहीं हिंसक घटनाओं को रोकना चाहिए। इसके साथ ही इस हिंसा को बढ़ावा देने का काम कर रहें पत्थरबाजों को सख्त से सख्त सजा दिलवाने का प्रयास करना चाहिए। ताकि देश में इस तरह की सांप्रदायिक घटनाओं को भविष्य में भी कोई भड़काने का प्रयास ना कर सकें।

शार्ट न्यूज

सोलर प्लेट चोरी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर जिले के खानपुर क्षेत्र में पुलिस ने सोलर प्लेट चोरी करने वाले एक गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से नौ सोलर प्लेट बरामद की हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार ने सोमवार को बताया कि खानपुर पुलिस ने 6/7 अगस्त की रात्रि में चैकिंग के दौरान ढकरौली प्याऊ के पास से टयूबवैल से सोलर प्लेट चोरी करने वाले गिरोह के चार शातिर सदस्यों को चोरी की नौ सोलर प्लेट के साथ गिरफ्तार कर लिया। पुलिस पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त मुकेश कुमार, शिवा, प्रवीण कुमार और अरुण उर्फ मोनू ग्राम मनिया टीकरी थाना खानपुर क्षेत्र के निवासी है। अभियुक्तों ने दो अगस्त की रात्रि में थाना खानपुर क्षेत्र के ग्राम मनिया टीकरी में एक टयूबवैल से नौ सोलर प्लेट चोरी करने की घटना की थी जिसके सम्बन्ध में थाना खानपुर पर धारा 379 के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया था।

हापुड़ में अधिवक्ताओं ने किया हंगामा

हापुड़। हापुड़ बार एसोसिएशन के पदाधिकारी और सदस्यों ने जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन कर पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा। जिसमें महिला अधिवक्ता द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमे की निष्पक्ष जांच कराने और आरोपियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी की मांग की गई। ज्ञापन में अधिवक्ताओं ने बताया कि हापुड़ बार की महिला सदस्य अधिवक्ता हेमलता के परिजन के साथ छह मई को कुछ लोगों ने वारदात को अंजाम दिया था। जिसका मुकदमा पिलखुवा कोतवाली में दर्ज कराया गया था। इस मुकदमें की विवेचना थाना पिलखुवा पुलिस द्वारा स्वतंत्र रूप ना किये जाने के कारण थाना कोतवाली को स्थानान्तरित कर दी गई थी। आरोप लगाया गया कि विवेचक स्वतंत्र रूप से विवेचना नही कर रहे हैं और राजनैतिक दबाव के कारण उक्त केस में फाइनल रिपोर्ट लगाने की कोशिश कर रहे। जिस कारण पीड़ित का विश्वास नहीं रहा है। ऐसी स्थिति में उक्त केस में अभियुक्तगण के विरुद्ध कार्रवाई ना होने के कारण अधिवक्ताओं में रोष है। ऐसी स्थिति में पीड़ित अपने केस की विवेचना अन्य स्वतंत्र सक्षम अधिकारी से कराना चाहती है। अधिवक्ताओं ने विवेचना स्थानांतरित कराकर आरोपियों की गिरफ्तारी कराए जाने की मांग की है। अधिवक्ताओं ने बताया कि एसपी ने आश्वासन दिया है कि मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाएगी।

मुजफ्फरनगर में मणिपुर हिंसा और यूसीसी के विरोध में धरना-प्रदर्शन

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर में राष्ट्रीय आदिवासी एकता परिषद ने मणिपुर हिंसा और यूनिफॉर्म सिविल कोर्ट का विरोध करते हुए प्रदर्शन किया। संगठन के सदस्यों ने कलेक्ट्रेट में धरना देकर मांग उठाई की असंवैधानिक कानूनों पर तत्काल रोक लगाई जाए। सोमवार को राष्ट्रीय आदिवासी एकता परिषद में शामिल बहुजन क्रांति मोर्चा, भारत मुक्ति मोर्चा भारतीय विद्यार्थी मोर्चा और राष्ट्रीय किसान मोर्चा आदि संगठन के लोगों ने धरना प्रदर्शन किया। कलेक्ट्रेट पहुंचे भारतीय विद्यार्थी मोर्चा के संयोजक वकार अजहर ने कहा कि विभिन्न राज्यों में निवास करने वाले 5 लोगों की पहचान समाप्त करने के लिए साजिश रची जा रही है। उन्होंने कहा कि आदिवासियों की संस्कृति और पहचान समाप्त करने को विकास के नाम पर जल जंगल और जमीन से बेदखल करने के लिए कुछ असंवैधानिक कानून बनाए गए हैं। उन पर तत्काल रोक लगाई जाए। उन्होंने कहा कि मणिपुर 3 महीने से चल रहा है। राज्य सरकारों की सह पर आदिवासी समाज के लोगों का उत्पीड़न किया जा रहा है। देश के विभिन्न भागों में कुछ खास वर्गों को निशाने पर लिया गया है। यूनिफॉर्म सिविल कोड का विचार भी उसी साजिश का हिस्सा है। कलेक्ट्रेट में मौजूद लोगों ने जमकर नारेबाजी की। उन्होंने कहा कि एक खास वर्ग आदिवासियों को बनवासी कह कर उनकी पहचान खत्म कर देना चाहता है।

हिन्दू संगठनों ने कलेक्ट्रेट में किया प्रदर्शन

फतेहपुर। फतेहपुर में सावन माह में शिव मंदिरों के आसपास खुली मांस की दुकानों पर कार्रवाई और धार्मिक स्थलों पर साफ सफाई न होने पर हिन्दू संगठनों ने कलेक्ट्रेट परिसर पहुंचकर जिला प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। डीएम के द्वारा मिलने से इनकार करने पर जिला प्रशासन का पुतला फूंकने की धमकी दी। कलेक्ट्रेट परिसर पहुंचे विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल. दुर्गा वाहिनी, हिन्दू संगठन के नेता और कार्यकर्ता प्रांतीय उपाध्यक्ष वीरेंद्र पांडेय के नेतृत्व में धार्मिक स्थलों पर साफ सफाई और सावन माह पर शिव मंदिरों के आस पास खुली मांस और बिरयानी की दुकानों पर कार्रवाई न होने पर प्रदर्शन किया। डीएम से मिलकर बात करने पहुंचे एसडीएम को प्रार्थना पत्र देकर 5 सूत्रीय मांग को पूरा करने की बात कही। हिन्दू संगठनों ने डीएम से मिलने की बात कही तो डीएम ने मिलने से इनकार कर दिया जिसको लेकर जिला प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए जिला प्रशासन का पुतला फूंकने की धमकी दी। प्रांतीय उपाध्यक्ष वीरेंद्र पांडेय ने कहा कि नाग पंचमी आने वाली है। जिसको लेकर जिले के धार्मिक स्थलों पर साफ सफाई कराने के लिए और सावन माह पर शिव मंदिरों के आस पास खुली मांस और बिरयानी की दुकानों को बंद करने के लिए 27 जुलाई को ज्ञापन दिया गया था, लेकिन जिला प्रशासन ने हिन्दू संगठनों की बात पर ध्यान नहीं दिया और उससे ज्यादा मांस की दुकानों में खुला मांस बेचने का काम किया जा रहा। जिससे मंदिर आने जाने भक्तों को काफी दिक्कत हो रही है।

ललितपुर में महिला ने फांसी लगाकर दी जान

ललितपुर। ललितपुर में एक महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने बताया को वह लोग सुबह मंदिर गए थे। घर लौटकर आए तो वह फांसी के फंदे पर लटकी मिली। उसे नीचे उतारकर उपचार के लिए जिला अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। कोतवाली सदर अंतर्गत मोहल्ला तालाबपुरा निवासी कल्पना सिंह (26) पत्नी प्रदीप सिंह को परिजन उपचार के लिए दोपहर में जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।महिला के परिजनों ने बताया कि कल्पना अपने ताऊ के यहां ललितपुर आई थी। वह मूलरूप से बांदा की रहने वाली थी और उसकी शादी एक साल पहले बांदा निवासी प्रदीप से हुई थी। प्रदीप इस समय राजस्थान के जोधपुर में एक प्राइवेट कंपनी में काम करता है। लगभग पांच महीने से कल्पना अवसाद में चल रही थी और उसका इलाज कानपुर में चल रहा था। एक महीने पहले ही वह ललितपुर ताऊ के पास आई थी। सोमवार को सुबह ताऊ, ताई और चचेरी बहन पूजा-अर्चना करने मंदिर चले गए थे। दोपहर में घर वापस लौटकर आए तो देखा कमरे के अंदर का दरवाजा बंद था। किचन से देखा तो कल्पना फांसी के फंदे पर लटक रही थी। मोहल्ले वासियों की मदद से दरवाजे को खोला और उसे फांसी के फंदे से नीचे उतारा और उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक सदर ने बताया कि महिला के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा जा रहा है ।

राहगीरों से लूट करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

शामली। शामली जनपद की सदर कोतवाली पुलिस ने राहगीरों से लूट की घटना को अंजाम देने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों के पास से एक चोरी की मोटरसाइकिल, लूट का द्वश्चद्धश्ठद्व मोबाइल, एक देसी तमंचा व जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। पकड़े गए आरोपी दोनों शामली सिटी के ही रहने वाले है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की वैधानिक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। मामला सामी जनपद की सिटी कोतवाली का है जहां पर 2 दिन पहले हुए राहगीर से आईफोन लूटने और मारपीट की घटना के मामले में पीड़ितों ने पुलिस में मुकदमा पंजीकृत कराया था। जिसमें पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आज दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए दोनों आरोपी सामने जनपद के रहने वाले हैं। जिनके पास से पुलिस ने एक आईफोन मोबाइल एक लूट की हुई बाइक देसी तमंचा कि जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। पकड़े गए दोनों आरोपी शातिर अपराधी है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की वैधानिक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। पकड़े गए आरोपी सारिक पुत्र महबूब ,मेहताब पुत्र मीर हसन निवासी मोहल्ला पंचारियान थाना कोतवाली शामली जनपद के रहने वाले हैं।

मणिपुर हिंसा पर निंदा प्रस्ताव की विपक्ष की मांग नामंजूर

लखनऊ। मणिपुर हिंसा पर निंदा प्रस्ताव की मांग को लेकर विपक्षी दलों ने सोमवार को शुरू हुये उत्तर प्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र में भारी हंगामा किया जिसके बाद सदन की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11 बजे तक के स्थगित कर दी गयी।

विधानसभा में दिवंगत पूर्व सदस्यों को दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी जिसके बाद नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने मणिपुर हिंसा को लेकर सदन में निंदा प्रस्ताव लाने की मांग की जिसे विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने यह कहते हुये अस्वीकार कर दिया कि सदन में प्रदेश से संबंधित समस्यायों पर ही चर्चा की जा सकती है। इस पर सपा के अलावा राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) और कांग्रेस के सदस्य शोरशराबा करने लगे और बेल पर आकर नारेबाजी करने लगे। सपा सदस्यों के हाथों में तख्तियां थी जिस पर बेरोजगारी,किसानो की समस्या, भ्रष्टाचार को लेकर नारे लिखे थे।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि सरकार दिन के उजाले में भी कुछ देखना नहीं चाहती। उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है और इस नाते उसे मणिपुर की घटना पर निंदा प्रस्ताव लाने की जरूरत है। उन्होने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर इशारा करते हुये कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मुख्यमंत्री होने के नाते आपकी कुछ मजबूरियां हो सकती हैं मगर एक सच्चे योगी के रूप में विपक्ष आपसे मणिपुर के बारे में कुछ बोलने की अपेक्षा करता है। मणिपुर हिंसा की यूरोप और अमेरिका में भी निंदा की गयी तो अपने ही देश के सबसे बड़े राज्य में इसकों लेकर चर्चा होनी चाहिये।

इस पर संसदीय कार्यमंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा कि विपक्ष सदन का समय खराब कर रहा है। विपक्षी सदस्यों ने कैराना और जवाहरबाग की घटना पर कभी भी निंदा प्रस्ताव पारित करने की मांग नहीं की। प्रदेश में बेहतर कानून व्यवस्था देश में रोल माडल बनी हुयी है जिसके अन्य प्रदेश अनुसरण करने का प्रयास कर रहे हैं।

महाना ने कहा कि सदन में न तो बंगाल,केरल की घटनाओं की चर्चा होगी और न ही मणिपुर की घटना के लिये निंदा प्रस्ताव लाने की अनुमति दी जायेगी। मणिपुर की घटना पर चर्चा के लिये वहां की विधानसभा है या फिर लोकसभा है। सदन में सिर्फ प्रदेश से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा होगी। प्रश्नकाल में अधिकतर सवाल विपक्षी सदस्यों के ही होते हैं जिनका जवाब देने के लिये सरकार बैठी है। सदन को राजनीति का मंच न बना कर सदस्यों को अपने क्षेत्र की समस्यायों को सदन के पटल पर रखना चाहिये ताकि लोगों का भला हो सके।

उन्होने कहा कि सदन नियम से चलेगा। हंगामा कर रहे सदस्यों की तरफ इशारा करते हुये उन्होने कहा कि सदन की कार्यवाही वह स्थगित नहीं करेंगे। हंगामे से कुछ नहीं होगा,सरकार चर्चा को तैयार है। इस पर विपक्षी दल शांत नहीं हुये और नारेबाजी करते हुये बेल पर आ गये। भारी शोरशराबे और हंगामें के बीच श्री महाना ने नियम 301 के तहत सूचनायें ली गयीं। इस दौरान विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बीच संसदीय कार्यमंत्री के आग्रह पर सदन की कार्यवाही आधे घंटे के लिये स्थगित कर दी गयी।

बदायूं में अज्ञात वाहन की टक्कर से तीन की मौत

जल लेने कछला जा रहे थे, दो युवक बरेली व एक बदायूं का रहने वाला

बदायूं। बदायूं में अज्ञात वाहन की चपेट में आकर बाइक सवार तीन युवकों की मौत हो गई। तीनों युवक कांवड़ियों के जत्थे के साथ के बताए जा रहे हैं।

हालांकि पुलिस का कहना है कि वो कांवड़ियों की ड्रेस में नहीं हैं। इनमें दो बरेली तो एक बदायूं जिले का रहने वाला है। देर रात शिनाख्त के बाद पुलिस ने परिवार वालों को हादसे की जानकारी दी है। वहीं शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

हादसा बरेली-आगरा हाइवे पर स्थित बिनावर थाना क्षेत्र में बरखेड़ा गौटिया के पास हुआ। अज्ञात वाहन ने एक

बाइक को चपेट में ले लिया। बाइक पर तीन युवक सवार थे। मामले की जानकारी पर पहुंची पुलिस आनन-फानन में तीनों को एम्बुलेंस से जिला अस्पताल लेकर पहुंची। जहां डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शवों की जेब टटोली तो यहां मिले कुछ दस्तावेजों के आधार पर एक शव की शिनाख्त बरेली के थाना फरीदपुर इलाके के गांव बरहमपुर निवासी गजेंद्र यादव (30) के रूप में हुई।

जेब में मिले मोबाइल के जरिए पुलिस ने परिवार वालों से संपर्क साधा तो पता लगा कि वह जल लेने के लिए कछला जाने की बात कह करके घर से निकले थे।

दोस्तों के साथ ले जाने की बात कही थी। चूंकि तीनों कांवड़ियों की ड्रेस नहीं पहने थे। ऐसे में पुलिस उनके कांवड़ियां होने की पुष्टि नहीं कर पा रही है।

आगरा में 3 शातिर वाहन चोर पकड़े

आगरा। आगरा में आज थाना न्यू आगरा ने चेकिंग के दौरान 3 शातिर वाहन चोरों को अरेस्ट कर लिया। सभी चोर हाथरस जनपद के रहने वाले हैं। उनके कब्जे से चोरी गाड़ियां और असलहा बरामद हुए हैं। थाना न्यू आगरा पुलिस एवं सर्विलांस टीम को गश्त के समय सूचना मिली थी कि 3 चोर चोरी किए गए वाहनों को बेचने के लिए जंगल के रास्ते से खन्दारी की तरफ आ रहे हैं। पुलिस टीम चेकिंग शुरू कर दी। 3 संदिग्ध व्यक्ति पुलिस को एक बाइक पर आते दिखाई दिए लेकिन वे चेकिंग के डर से पीछे मुड़कर भागने का प्रयास करने लगे। इसी बीच हड़बड़ाहट में उनकी मोटरसाइकिल फिसल कर गिर गई। पुलिस टीम उन्हें घेरकर उन्हें अरेस्ट कर लिया। आरोपियों की निशानदेही पर जंगल से 5 अन्य मोटरसाइकिलें और 3 स्कूटी समेत कुल 9 वाहन बरामद किए गए हैं। 1 तमंचा, कारतूस 1 मास्टर चाबी, 2 मोबाइल भी मिल हैं। अरेस्ट किए गए आरोपियों में गणेश कुमार उर्फ लक्की पुत्र प्रेमपाल सिंह निवासी बगुली थाना मुरसान हाथरस, सुभाष पुत्र संतोष निवासी बगुली थाना मुरसान जिला हाथरस, कान्हा उर्फ भप्पा पुत्र राजेन्द्र निवासी करसौरा थाना शादावाद जिला हाथरस शामिल हैं। आरोपियों ने बताया कि वे चोरी के बाद गाडियां दयालबाग क्षेत्र में जंगल में खड़ा कर देते थे। यहां से आसानी से राहगीरों को उन्हें बेच देते थे। जिन गाड़ियों की आरसी होती है, उनको मॉडल के हिसाब से बेचते थे। जिनकी आरसी नहीं होती उन्हें सस्ते दामों में निकाल देते थे।

बस की टक्कर से कांवड़िये की मृत्यु

सीतापुर। उत्तर प्रदेश में सीतापुर जिले के हरगांव क्षेत्र में सोमवार को राज्य परिवहन निगम की एक अनुबंधित बस की चपेट में आकर एक कांवड़िए की मृत्यु हो गई। घटना से आक्रोशित कांवरियों ने मौके पर सीतापुर लखीमपुर मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। सूचना मिलने पर मौके पर उप जिलाधिकारी ज्ञानेंद्र प्रसाद द्विवेदी एवं सीओ सदर राजकुमार साव पहुंचे। लखीमपुर के सदर विधायक योगेश वर्मा भी मौके पर पहुंचे और कावड़ियों को समझा बुझा कर जाम खत्म कराया। पुलिस के अनुसार पिछले बुधवार को पोयल कस्बे से कावड़िए गंगाजल लेने के लिये कन्नौज गये थे।

बरेली में दीवार ढहने से दो बच्चों की मौत

बरेली। उत्तर प्रदेश में बरेली जिले के फरीदपुर क्षेत्र में सोमवार सुबह बारिश के बीच कच्ची दीवार ढहने से एक ही परिवार के दो बच्चों की मौत हो गई जबकि माता-पिता और बहन गंभीर रूप से घायल हो गई। पुलिस अधीक्षक देहात राजकुमार अग्रवाल ने बताया कि खलपुर गांव निवासी उमेश और राजीव पड़ोसी हैं। उनके घरों की एक ही दीवार थी। उमेश अपनी पत्नी सुमन, बेटे विवेक (02), बेटी प्रियांशु (05) और सात साल बेटी नीतू (07) के साथ घर में सो रहे थे। सोमवार सुबह बारिश होने से कच्ची दीवार ढह गई जिसमें विवेक और प्रियांशु की मलबे में दब कर मौके पर ही मौत हो गई। दीवार भरभरा कर गिरने की आवाज पर आसपास के कई लोग एकत्र हो गए। उन्होंने मलबे में दबे बच्चों को बाहर निकाला जिसमें विवेक और प्रियांशु की मौत हो चुकी थी।

वंदे भारत ट्रेन पर पथराव, 3 कोच के शीशे टूटे

बाराबंकी। बाराबंकी में रविवार को वंदे भारत ट्रेन पर पथराव हुआ। ट्रेन की तीन बोगियों पर पत्थर फेंके गए। घटना में कई विंडो के शीशे टूट गए। ट्रेन गोरखपुर से लखनऊ जा रही थी। इसी दौरान सुबह करीब 10 बजे अराजक तत्वों ने सफेदाबाद रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन पर पत्थर चलाया। हालांकि, किसी यात्री के घायल होने की कोई सूचना नहीं है।

ट्रेन जब लखनऊ पहुंची तब रेलवे सुरक्षा बल की टीम ने इसकी सूचना कंट्रोल रूम को दी। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और जायजा लिया। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि घटना की जांच की जा रही है।

बताया जा रहा है कि अराजक तत्वों द्वारा पत्थर चलाने से कोच नंबर सी-2 के सीट नंबर 3 व 4 के पास वाली

खिड़की का शीशा टूट गया। वहीं दो और कोच की कई सीट के भी शीशे टूटे हैं। अब ट्रेन में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज के माध्यम से अराजक तत्व की तलाश की जा रही है। सुरक्षा एवं परिचालन से जुड़े अधिकारियों को मामले से अवगत कराया गया है।

उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के डीआरएम डॉ.मनीष थपल्याल का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। वहीं, बाराबंकी आरपीएफ इंस्पेक्टर एसके सिंह ने बताया कि पुलिस टीम सफेदाबाद स्टेशन पहुंची थी, लेकिन वहां कोई नहीं मिला।

आगरा में शिव मंदिर की छत गिरी, एक श्रद्धालु की मृत्यु, सात घायल

आगरा। उत्तर प्रदेश में आगर शहर के शाहगंज क्षेत्र में सोमवार सुबह एक शिव मंदिर के बरामदे की छत गिर गई। इस हादसे में एक श्रद्धालु युवती की मौत हो गई जबकि मलबे में करीब आठ श्रद्धालु दब गए।

सूचना पर पुलिस और रेस्क्यू की टीम ने मलबे से सात लोगों को अब तक निकाल लिया है। इनमें एक की हालत गंभीर है।

हादसा शाहगंज में राधे वाली गली के शिव मंदिर का है। सावन का सोमवार होने के चलते मंदिर में कांवड़ चढ़ाई जा रही थी। मोहल्ले के कुछ युवक पहली बार डाक कांवड़ लेकर आए थे। सुबह से श्रद्धालुओं की भीड़ थी। तभी अचानक मंदिर परिसर की छत गिर गई।

मंदिर में भगदड़ मच गई। मलबे के नीचे ज्यादातर महिलाएं दब गई थीं। स्थानीय लोगों ने उन्हें निकाला।

एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि सुबह सात बजे करीब मंदिर में कांवड़ चढ़ाई गई। उस समय मंदिर करीब 500 लोग थे। प्रसाद वितरण के बाद लोग जाने लगे मगर कुछ महिलाएं वहीं खड़ी रहीं कि तभी छत गिर गई।

शिव मंदिर काफी पुराना है, शहर में पिछले कई दिनों से बारिश हो रही है। इसके चलते, कच्ची छत कमजोर हो गई थी और वह गिर पड़ी। पुलिस के मुताबिक, मलबे से निकाले गए सभी लोगों को अस्पताल ले जाया गया। वहां एक युवती ज्योति की मौत हो गई। उसकी मां ओमवती की हालत गंभीर है।

अन्य घायलों में ओमश्री, रानी, पूनम, ओमवती, केशू, मिथिलेश आदि हैं। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दो मिनट पहले अगर हादसा होता तो ज्यादा नुकसान होता। दो मिनट पहले छत के नीचे 50 से ज्यादा लोग खड़े थे।

कठेरिया की सजा निलंबित, 20 हजार का जुर्माना

आगरा। उत्तर प्रदेश में आगरा की जिला अदालत ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद और पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामशंकर कठेरिया की दो दिन पूर्व विशेष अदालत द्वारा सुनायी गयी सजा को सोमवार को निलंबित कर दिया है और उन पर 20 हजार रूपये जुर्माना लगाते हुये सुनवाई की अगली तारीख 11 सितंबर मुकर्रर की है ।

जिला न्यायाधीश विवेक संगल ने इटावा के सांसद रामशंकर कठेरिया को राहत दे दी है। आज सुनवाई के दौरान जिला जज ने दो दिन पूर्व विशेष एमपी एमएलए अदालत के न्यायाधीश

एमएलए अदालत द्वारा सुनाई गई सजा को निलम्बित कर दिया।

गौरतलब है कि सांसद रामशंकर कठेरिया को जिले की विशेष एमपी एमएलए अदालत के न्यायाधीश अर्जुन ने वर्ष 2011 के बलवा और तोड़फोड़ के मामले में पांच अगस्त को दो साल की सजा और 51 हजार का जुर्माना लगाया था। कठेरिया आगरा से दो बार सांसद रहे हैं। वे केंद्र सरकार में मंत्री और एससी-एसटी आयोग के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वर्तमान में वह इटावा के सांसद हैं।

विशेष अदालत के फैसले के खिलाफ कठेरिया ने जिला जज कोर्ट में अपील दायर की। अपील दायर करने के बाद कठेरिया ने अपने खिलाफ राजनीतिक साजिश का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा कि टोरंट के बिल से परेशान एक महिला सुसाइड करने जा रही थी। उसकी परिस्थिति को देखते हुए उन्होने उसकी मदद की। टोरंट ने बिल ठीक कर दिया था। तब भाजपा विरोधी सरकार थी और राजनीतिक साजिश के तहत उनके खिलाफ केस दर्ज कराया गया था। यह घटना 16 नवंबर, 2011 की थी।

जिला जज द्वारा राहत दिए जाने पर कठेरिया के समर्थकों ने उनके आगरा स्थित आवास पर मिठाई बांटकर खुशी का इजहार किया।

पहले रेप फिर शादी का झांसा देकर किया शोषण

बस्ती। बस्ती में थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी किशोरी को शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने और बाद में शादी करने से इंकार करने के मामले में आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। कोर्ट के आदेश बाद पुलिस आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म, जानमाल की धमकी देने और पाक्सो एक्ट की धारा के तहत मुकदमा दर्ज कर उसकी तलाश कर रही थी। नगर थाना क्षेत्र निवासी 17 वर्षीय एक किशोरी ने विशेष न्यायाधीश न्यायालय पाक्सो कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया कि नगर खास निवासी विशाल उर्फ अमेरिका पुत्र लालजी ने दो साल पहले खेत में उसके साथ छेड़खानी की और जबरदस्ती रेप किया। कहीं शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। 10 अगस्त 21 को हुई घटना के बाद से वह उस पर लगातार दबाव बनाकर दुष्कर्म करता रहा। इसके बाद में उसने शादी का झांसा भी दिया। शादी की बात पर वह भरोसा कर बैठी, लेकिन जब इस बात की जानकारी उसके परिवार वालों को हुई तो 2 मई 2023 को उसके माता, पिता, भाई उसके घर पहुंचे और धमकी दिया कि यदि तुमने विशाल से शादी की तो तुम्हारे पूरे परिवार को जान से मार डालेंगे। इसके बाद भी आरोपी उसे अपने घर ले गया, जहां उसके परिवार वालों ने मारपीट की और उसे घर से निकाल दिया।

बेटे ने रॉड से पीट-पीटकर की मां की हत्या

कानपुर। कानपुर में बेटे ने लोहे की रॉड से पीट-पीटकर मां को मार डाला। मां और बहू का रोज झगड़ा होता था। रविवार शाम को बेटा घर लौटा, तो दोनों के बीच झगड़ा हो रहा था। उसने घर में रखी एक लोहे की रॉड से मां के सिर पर कई वार कर डाले। पुलिस की पूछताछ में बेटे ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। मामला नौबस्ता की राजीवनगर कॉलोनी का है।

हमले के बाद बुजुर्ग महिला लहूलुहान होकर गेट के पास गिर पड़ी। चीख-पुकार सुनकर मोहल्ले के लोग पहुंचे, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। आस-पड़ोस के लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। खून से लथपथ लोहे की रॉड के साथ बेटे को अरेस्ट किया। आज महिला का पोस्टमॉर्टम होगा। कोर्ट में पेश करने के बाद आरोपी बेटे को जेल भेजा जाएगा। राजीव नगर कॉलोनी में मुन्नी देवी अपने 2 बेटों के साथ रहती थीं। उनके पति अमर पाल शर्मा की कई साल पहले मौत हो चुकी है। अब घर में बेटा अजय, बहू रोशनी और अविवाहित बेटा राजीव रहते हैं। जबकि बड़ा बेटा विजय अपनी पत्नी और बच्चों के साथ मोहल्ले में किराए के मकान में रहता है।

विजय ने बताया कि रविवार रात को घर में चीख-पुकार मची तो मोहल्ले के लोग दौड़े। देखा कि मां का खून से लथपथ शव जमीन पर पड़ा है। पुलिस की पूछताछ में अजय ने बताया, वह काम से घर पर लौटा तो पत्नी और मां में झगड़ा हो रहा था। दोनों के रोज-रोज के झगड़े से ऊब गया था। गुस्से में आकर मां के सिर पर लोहे की रॉड से हमला कर दिया। इसमें उनकी मौत हो गई।

गोरखपुर में 3 साल की मासूम बच्ची की हत्या

दो दिन पहले मां के साथ सोते वक्त गायब हुई थी, घर से 300 मीटर दूर मामा-मामी को मिली लाश

एजेंसी

गोरखपुर। गोरखपुर में एक 3 साल की मासूम बच्ची की बेरहमी से हत्या कर दी गई। बच्ची शनिवार की भोर में अपनी मां के पास सोते वक्त अचानक गायब हो गई थी। परिवार के लोग पुलिस की मदद से उसकी तलाश में जुटे थे, इस बीच सोमवार को घर से 300 मीटर दूर एक खाली प्लाट में बच्ची का शव मिला।

जहां, बच्ची का शव मिला है, वहां 7 फुट उंची बाउंड्रीवाल थी। कोई बच्चा क्या बड़ा भी उस प्लाट के अंदर नहीं जा सकता था। ऐसे में आशंका है कि बच्ची की हत्या के बाद उसके शव को खाली प्लाट में छिपा दिया गया था। घटना चिलुआताल इलाके के परमेश्वरपुर नवापार की है।

बच्ची की लाश इसी बाउंड्रीवाल के अंदर मिली है।

हत्या की वजह तलाश रही पुलिस

सूचना पर एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर, पुलिस, डॉग स्क्वॉयड और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंच गई। जांच-पड़ताल के बाद पुलिस ने बच्ची का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हालांकि, बच्ची के शरीर पर किसी तरह के चोट के निशान नहीं मिले हैं। पुलिस का मानना है कि उसकी गला दबाकर हत्या की गई होगी। वहीं, अभी हत्या की वजह स्पष्ट नहीं हो सकी है।

शनिवार से गायब थी मासूम

बीते 5 अगस्त शनिवार की रात मायके में ही मनिता अपनी बेटी रोशनी को लेकर घर के बाहर सोई हुई थी। भोर में करीब 4 बजे जब मां की नींद खुली तो बेटी वहां नहीं थी। पहले तो मां ने बच्ची को घर और पूरे गांव में ढूंढा, लेकिन जब वह नहीं मिली तो मनिता के साथ ही परिवार के लोग परेशान हो गए।

सुबह होने पर परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस इस मामले में मासूम के लापता होने की सूचना दर्ज कर उसकी तलाश में जुटी थी। इस बीच सोमवार सुबह बच्ची के मामा ज्ञानेंद्र और मामी निशा भी उसकी तलाश में निकले थे।

तभी घर से 300 मीटर की दूरी पर स्थित बाउंड्रीवाल में बच्ची का शव मिला। यह देख परिवार में कोहराम मच गया। परिवार के लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस मामले की पड़ताल में जुट गई है।

शार्ट न्यूज

ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस मीशो आयी लाभ में

बेंगलुरु। ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस मीशो ने आज लाभ की स्थिति में आने की घोषणा करते हुये कहा कि पिछले 12 महीनों में एक अरब से ज्यादा ऑर्डर मिले हैं। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि इससे कंपनी के ऑर्डर का वॉल्यूम 43 प्रतिशत और राजस्व 54 प्रतिशत बढ़ा है। उसने कहा कि इस उपलब्धि ने न केवल भारतीय ई-कॉमर्स के परिवेश में कंपनी की स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि यह मीशो के अभिनव बिज़नेस मॉडल का एक मजबूत प्रमाण भी है। कंपनी ने समग्र कर बाद लाभ (पीएटी) स्तर पर लाभ की स्थिति हासिल की है, जिसमें इसके सभी प्रभागों और श्रेणियों में ईएसओपी सहित सभी लागतें शामिल हैं। मीशो ने संचालन के विभिन्न आँकड़ों में काफी प्रगति की है, कंपनी ने टेक्नॉलॉजी की लागत में 60 प्रतिशत साल-दर-साल की कमी दर्ज की है, जिससे इसकी संचालन दक्षता और ज्यादा मजबूत हो गई है।

एमएसएमई डेवलपमेंट फोरम, भारतीय अंतरष्ट्रीय व्यापार मेले, शिखर सम्मलेन आयोजित करेगा

नयी दिल्ली। एमएसएमई डेवलपमेंट फोरम 10, 11 और 12 अगस्त को यहाँ प्रगति मैदान में भारतीय अंतरष्ट्रीय व्यापार मेले और शिखर सम्मलेन एमएसएमई एक्सपो-2023 के 9वें संस्करण का आयोजन करने जा रहा है। इसके उपलक्ष्य में आज यहाँ एमएसएमई डेवलपमेंट फोरम ने एक प्रेस सम्मलेन आयोजित किया। एमएसएमई डेवलपमेंट फोरम के संस्थापक एवं अध्यक्ष रजनीश गोयंका ने बताया कि यह संस्थान नये व्यावसायिक अवसरों, बाजारों, विचारों, खरीदारों, विक्रेताओं, कच्चे माल, प्रौद्योगिकियों आदि को बढ़ावा देकर अधिकतम रोजगार सृजन करने और अपने उत्पादों/सेवाओं का प्रदर्शन करने के लिए एक बहुत जरूरी एकीकृत वैश्विक मंच प्रदान करता है। उन्होंने यह भी बताया कि एमएसएमई एक्सपो-2023 के नवें संस्करण में इस बार रूस पार्टनर देश के रूप में भाग लेने जा रहा है, रूस से कई खरीदारों और निवेशकों के आने की उम्मीद है, क्योंकि रूस को भारत से 500 से अधिक वस्तुओं की आवश्यकता है और और इसलिए भारतीय एमएसएमई कई बैठकें आयोजित की गयी हैं। इसके साथ ही कई अन्य अंतरराष्ट्रीय खरीदारों और निवेशकों, उद्योग मंडलों, व्यापार प्रतिनिधिमंडल इस एक्सपो में भाग लेंगे। इन तीन दिनों के दौरान नौ से 10 शिखर सम्मलेन सत्र होंगे, जिनमें कई केंद्रीय मंत्री, वरिष्ठ नौकरशाह, विदेशी प्रतिनिधि और उद्योग जगत के प्रमुख लोग शामिल होंगे।

टमाटर के चढ़े भाव से 34 फीसदी महंगी हुई वेज थाली

नई दिल्ली। टमाटर की कीमतों में लगी आग ने जायका के साथ-साथ रसोई का बजट भी पूरी तरह से बिगाड़ दिया है। टमाटर की 'लाली' से एक महीने में वेज थाली 34 फीसदी महंगी हो गई है। क्रिसिल द्वारा सोमवार को जारी फूड प्लेट कॉस्ट के मासिक इंडिकेटर के अनुसार, भारत में वेज थाली की कीमत जून की तुलना में जुलाई में 34 फीसदी बढ़ गई। इसका 25 फीसदी कारण टमाटर की महंगाई को माना जा सकता है। जून में 33 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर जुलाई में टमाटर की कीमत 233 फीसदी बढ़कर 110 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। यह लगातार तीसरी बार है, जब वेज थाली की कीमतें क्रमिक रूप (मासिक आधार पर) से बढ़ी हैं। 2023-24 में, यह पहली बार है कि वेज थाली की कीमत सालाना आधार पर बढ़ी है। नॉनवेज थाली की कीमत भी बढ़ी है। मासिक आधार पर नॉन वेज थाली 13 फीसदी महंगी हुई है। क्रिसिल उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम भारत में प्रचलित इनपुट कीमतों के आधार पर घर पर थाली तैयार करने की औसत लागत की गणना करता है। मासिक बदलाव से आम आदमी के खर्च पर असर दिखता है। डेटा से अनाज, दालें, ब्रॉयलर, सब्जियां, मसाले, खाद्य तेल और रसोई गैस सहित उन सामग्रियों का भी पता चलता है, जो थाली की कीमत में बदलाव लाते हैं।

भारतीय उद्योग जगत का मुनाफा दमदार, पर विकास की रफ्तार असंतुलित

वित्त वर्ष 2024 की अप्रैल-जून तिमाही में शुरुआती कमजोर नतीजों के बाद कॉरपोरेट आय में बड़ा सुधार दर्ज किया जा रहा है। अब तक अपने तिमाही नतीजे घोषित कर चुकीं 983 लिस्टेड कंपनियों का संयुक्त शुद्ध लाभ जून तिमाही में सालाना आधार पर 64.7 प्रतिशत तक बढ़कर 2.68 लाख करोड़ रुपये की ऊंचाई पर पहुंच गया है, लेकिन आय में वृद्धि काफी हद तक असंतुलित बनी हुई है, क्योंकि ज्यादातर वृद्धि कुछ ही कंपनियों द्वारा दर्ज की गई है। इसके अलावा, तिमाही आंकड़ों से राजस्व वृद्धि में लगातार सुस्ती का भी पता चलता है। नमूने में शामिल सभी कंपनियों की संयुक्त शुद्ध बिक्री वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में सालाना आधार पर महज 7.3 प्रतिशत तक बढ़ी, जो पिछली 10 तिमाहियों में सबसे कम है। मुनाफा वृद्धि के विपरीत, कई क्षेत्रों (बैंकिंग एवं वित्त और वाहन को छोड़कर) ने जून 2023 तिमाही में राजस्व वृद्धि में सुस्ती दर्ज की। रिपोर्ट के नमूने में शामिल सूचीबद्ध कंपनियों ने वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में अपने संयुक्त शुद्ध लाभ में 1.05 लाख करोड़ रुपये का इजाफा किया, जो 9 तिमाहियों में सर्वाधिक है, लेकिन इसमें से दो-तिहाई वृद्धि में सिर्फ पांच कंपनियों का योगदान रहा, जिनमें से तीन सरकार के स्वामित्व वाली तेल विपणन कंपनियां (ओएमसी) थीं।

नकदी कारोबार 21 महीने के उच्चस्तर पर

जुलाई में बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी ने लगातार पांचवें महीने बढ़ोतरी दर्ज की, जो अक्टूबर 2021 के बाद बढ़त का सबसे लंबा दौर है। दोनों सूचकांकों में करीब 3-3 फीसदी की बढ़ोतरी हुई, वहीं निफ्टी मिडकैप 100 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 सूचकांकों ने उम्दा प्रदर्शन किया और उनमें क्रमश- 5.5 फीसदी व 8 फीसदी की उछाल दर्ज हुई। 5 पैसा के कार्यकारी निदेशक व सीईओ प्रकाश गगडानी ने कहा, विभिन्न सूचकांक अपने-अपने सर्वोच्च स्तर पर हैं। भागीदारी दोबारा देखने को मिल रही है क्योंकि मिडकैप व स्मॉलकैप में तेजी है, जो टर्नओवर यानी कारोबार को मजबूत बना रहा है। अपने-अपने पोजीशन के साथ पहले से फंसे कई खुदरा क्लाइंटों को मुनाफावसूली का मौका मिल रहा है। उन्होंने कहा, जहां तक नकदी बाजार का सवाल है, जब तक बाजार में बढ़त जारी रहेगी हम उसी तरह की भागीदारी देखेंगे, जो हमें 2020 और 2021 में देखने को मिला था। बाजार को त्रष्ठक्क त्रस्झ कलेक्शन और कंपनियों की आय पर मॉनसून के असर को समाहित करना अभी बाकी है, जो बाजार में तेजी बने रहने के लिए अहम होगी। इस साल मार्च के निचले स्तर से बेंचमार्क सूचकांकों में 15 फीसदी की उछाल आई है। व्यापक बाजार में तेजी लार्जकैप के मुकाबले करीब दोगुनी रही है।

इलेक्ट्रिक वाहन में चीन से पीछे भारत, प्रचार ज्यादा योजना सुस्त

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) का प्रतिशत विश्व के तमाम देशों की तुलना में बहुत कम है। इस बीच हिस्सेदारों में बहस चल रही है कि भारत में फेम-2 सब्सिडी जारी रखी जानी चाहिए, या इसे वापस लिया जाना चाहिए। भारत में सरकार के ईवी के अपने घोषित लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कई गंभीर कदम उठाए जाने की जरूरत है। इक्रा के एक अध्ययन के मुताबिक मार्च 2024 में खत्म हो रही 10,000 करोड़ रुपये की फेम-2 सब्सिडी योजना के बावजूद कैलेंडर वर्ष 2022 में भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या महज 1.5 प्रतिशत है। इसकी आंशिक वजह सब्सिडी योजना में मौजूद समस्या और विद्युतीकरण का तेजी से गति पकड़ना है। वित्त वर्ष 23 में भारत में ईवी की संख्या करीब 4 प्रतिशत थी। इसके विपरीत चीन में ईवी का प्रतिशत कैलेंडर वर्ष 2017 के 2 प्रतिशत से बढ़कर कैलेंडर वर्ष 2022 में 29 प्रतिशत हो गया है। जबकि चीन में इस पर मिलने वाली सब्सिडी 2019 में घटकर आधे से कम रह गई। इसके कारण 2020 में ईवी की वृद्धि घटी और चीन में इसकी बिक्री कम हो गई। वहीं उसके बाद 2021 और 2022 में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या तेजी से बढ़ी और अब ईवी की कुल वैश्विक बिक्री में चीन की हिस्सेदारी करीब 58 प्रतिशत हो गई है। ब्रिटेन इस समय ईवी पर सब्सिडी वापस लेने पर विचार कर रहा है। इस अवधि के दौरान ब्रिटेन में ईवी की संख्या 2 प्रतिशत से बढ़कर 23 प्रतिशत हो गई है।

शेयर बाजार में तेजी जारी, सेंसेक्स निफ्टी बढ़त में

मुंबई। वैश्विक स्तर से मिले कमजोर संकेतों के बीच आज घरेलू स्तर पर हेल्थकेयर, आईटी, टेक, टेलीकम्युनिकेशंस और रियल्टी जैसे समूहों में हुयी लिवाली के बल पर शेयर बाजार में लगातार दूसरे दिन तेजी रही और इस दौरान सेंसेक्स और निफ्टी बढ़त बनाने में सफल रहे।

बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 232.23 अंकों की बढ़त के साथ 66 हजार अंक के करीब 65953.48 अंक पर पहुंच गया और इस दौरान नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 80.30 अंकों की तेजी लेकर 19597.30 अंक पर रहा।

बीएसई दिग्गज कंपनियों की तरह की छोटी और मझौली कंपनियों में भी लिवाली का जोर रहा जिससे बीएसई का मिडकैप 0.56 प्रतिशत बढ़कर 30331.02 अंक पर और स्मॉलकैप 0.26 प्रतिशत उठकर 35162.06 अंक पर रहा।

बीएसई में कुल 3887 कंपनियों में कारोबार हुआ जिसमें से 2025 बढ़त में और 1661 गिरावट में रहे जबकि 201 में कोई बदलाव नहीं हुआ। बीएसई में शामिल समूहों में से अधिकांश बढ़त में रहे जिसमें हेल्थकेयर 1.61 प्रतिशत, आईटी 1.07 प्रतिशत, टेलीकम्युनिकेशंस 1.28 प्रतिशत, टेक 0.91 प्रतिशत और रियल्टी 0.63 प्रतिशत प्रमुखता से शामिल है। गिरावट में रहने वालों में यूटिलिटी 0.27 प्रतिशत और पावर 0.22 प्रतिशत प्रमुख है।

वैश्विक स्तर पर जापान के निक्केई के 0.91 प्रतिशत की बढ़त को छोड़कर शेष अधिकांश प्रमुख सूचकांक गिरावट में रहे जिसमें ब्रिटेन का एफटीएसई 0.68 प्रतिशत, जर्मनी का डैक्स 0.73 प्रतिशत, चीन का शंघाई कंपोजिट 0.59 प्रतिशत और हांगकांग का हैंगसेंग 0.21 प्रतिशत शामिल है।

बीएसई का सेंसेक्स 90 अंकों की बढ़त के साथ 65811.40 अंक पर खुला।

शुरूआती कारोबार में ही यह 65748.25 अंक के निचले स्तर तक उतरा लेकिन लिवाली के बल पर यह दोपहर के बाद 66 हजार अंक के स्तर को पार करते हुये 66067.90 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में यह पिछले दिवस के 65721.25 अंक की तुलना में 0.35 प्रतिशत अर्थात 232.23 अंकों की बढ़त के साथ 65953.48 अंक पर पहुंच गया।

इस दौरान सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में से 21 हरे निशान में और नौ लाल निशान में रही।

इसी तरह से एनएसई का निफ्टी 59 अंकों की बढ़त के साथ 19576.85 अंक पर खुला। लिवाली के बल पर यह 19620.45 अंक के उच्चतम और बिकवाली के दबाव में 19524.80 अंक के निचले स्तर के बीच रहा। अंत में यह पिछले दिवस के 19517 अंक की तुलना में 80.30 अंक अर्थात4 0.41 प्रतिशत की बढ़त के साथ 19597.30 अंक पर रहा।

एनएसई में शामिल कंपनियों में से 35 हरे निशान में और 14 लाल निशान में रही जबकि दो में कोई बदलाव नहीं हुआ।

सुप्रीम कोर्ट गोफर्स्ट एयरलाइन की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को गोफर्स्ट एयरलाइन की याचिका खारिज कर दी। इसमें दिल्ली हाईकोर्ट के जुलाई के उस फैसले पर रोक लगाने की मांग की गई थी, जिसमें लेसर्स को अपने विमान का इन्सपेक्शन करने की अनुमति दी गई थी। लीज पर विमान देने वालों को लेसर्स कहा जाता है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की तीन-जजों की बेंच ने दिल्ली हाईकोर्ट में चल रही कार्यवाही में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया। इस बीच गो फर्स्ट ने जानकारी दी कि ऑपरेशनल कारणों से अपनी उड़ानों को 9 अगस्त तक कैंसिल कर दिया है। करीब एक महीने पहले हाईकोर्ट की सिंगल जज बेंच ने लेसर्स को अपने विमानों की निगरानी और मेंटेनेंस करने की परमिशन दी थी। जस्टिस तारा वी गंजू ने कहा था, विमान काफी महंगे और तकनीकी रूप से जटिल हैं, इनको नियमित तौर पर मेंटेनेंस की जरूरत है। बेंच ने कहा था कि लेसर्स को रिट पिटीशन के फाइनल डिस्पोजल तक अंतरिम रखरखाव करने के लिए महीने में कम से कम दो बार अपने विमान तक एक्सेस मिलेगा। डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन यानी DGCA और संबंधित एयरपोर्ट अथारिटीज ये एक्सेस देंगे।

जुलाई में गाड़ियों की खुदरा बिक्री में हुई 10 फीसद की बढ़ोतरी

देश में वाहनों की बिक्री की दर में इजाफा हुआ है। यात्री वाहन के साथ ही दो पहिया वाहन, कमर्शियल वाहन सहित सभी सेगमेंट में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। फाडा के मुताबिक जुलाई 2023 के दौरान ऑटोमोबाइल बिक्री में 10 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन की ओर से जुलाई महीने में कुल वाहनों की बिक्री बढ़त के बाद 17,70181 यूनिट्स वाहनों की बिक्री हुई। इसमें यात्री वाहन, तिपहिया वाहन, दो पहिया वाहन शामिल हैं। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर आंकड़ों के मुताबिक जुलाई 2022 के दौरान देशभर में कुल 16,09217 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

किस सेगमेंट में कितनी हुई बिक्री

फाडा की रिपोर्ट के मुताबिक जुलाई 2023 के दौरान यात्री वाहन सेगमेंट में 2,84,064 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि जुलाई 2022 के दौरान यह संख्या 2,73,055 थी। दो पहिया वाहन सेगमेंट में अगस्त 2023 के दौरान मोटरसाइकिल, स्कूटर और मोपेड की कुल बिक्री 12,28,139 यूनिट्स की रही। वहीं तिपहिया वाहनों की बिक्री का कुल योगदान 94,148 यूनिट्स का रहा। जुलाई में 90765 यूनिट्स ट्रैक्टर और 73065 यूनिट्स कमर्शियल वाहनों की बिक्री हुई।

कितनी हुई बढ़ोतरी

फाडा की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक जुलाई 2023 के दौरान यात्री वाहन सेगमेंट में करीब चार फीसदी की ग्रोथ रही। दो पहिया वाहनों की बिक्री में करीब आठ फीसदी से ज्यादा की बढ़त पिछले साल के मुकाबले देखने को मिली और तिपहिया वाहनों की बिक्री जुलाई महीने में करीब 74 फीसदी से ज्यादा रही।

देश भर में जुलाई 2023 में साल 2022 के मुकाबले 10 फीसदी से ज्यादा बिक्री हुई और कमर्शियल वाहनों के सेगमेंट में करीब दो फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

75 फीसदी भारतीयों को सता रहा डर, नहीं सीखी टेक्नोलॉजी तो नौकरी छोड़ बैठना पड़ेगा घर

भारत में टेक्नोलॉजी को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। जिस तरह से ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर पूरे दुनियाभर में चर्चा बढ़ती जा रही है, उसी तरह लोगों के प्रति टेक्नोलॉजी को लेकर चिंता भी बढ़ती जा रही है। सोमवार को जारी एक अध्ययन से पता चला है कि हर चार में से तीन भारतीयों को इस बात का डर है कि अगर उन्होंने अपनी स्किल डेवलप करना जारी नहीं रखा तो उनकी नौकरियां टेक्नोलॉजी छीन लेगी। इस बात को लेकर जो लोग सबसे ज्यादा चिंतित हैं उनमें फाइनैंस और इंश्योरेंस, सॉफ्टवेयर और आईटी सर्विसेज, स्वास्थ्य देखभाल यानी हेल्थकेयर और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर्स के प्रोफेशनल्स ज्यादा संख्या में आते हैं। प्रोफेशनल कोर्सेज और सर्विस प्लेटफॉर्म एमेरिटस की तरफ से जारी एमेरिटस ग्लोबल वर्कप्लेस स्किल्स स्टडी 2023 के मुताबिक, प्रोफेशनल्स के बीच डिजिटल मार्केटिंग, डेटा एनॉलिटिक्स, फाइनैंस, मैनेजमेंट और ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विषयों की सबसे ज्यादा मांग है। बता दें कि यह अध्ययन भारत के 20 बड़े और मंझोले शहरों के 1,720 प्रोफेशनल्स के सर्वे पर आधारित है। इसमें 25 साल से लेकर 65 साल तक के लोग शामिल किए गए थे। अध्ययन के मुताबिक, सभी सेक्टर के प्रोफेशनल्स अपनी तकनीकी स्किल में सुधार चाहते हैं क्योंकि इसके न होने की वजह से उन्हें कई रुकावटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में अध्ययन का कहना है कि ये प्रोफेशनल्स टेक्नोलॉजी में खुद को एडवांस बनाना चाह रहे हैं। जहां, 94 प्रतिशत सॉफ्टवेयर और आईटी प्रोफेशनल्स तकनीकी क्षेत्र में अपनी स्किल डेवलप करना चाहते हैं वहीं, टेक्नोलॉजी और इनोवेशन में काम करने वाले 93 प्रतिशत लोगों ने भी इसमें रुचि दिखाई। 86 प्रतिशत मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के प्रोफेशनल्स ने भी दिलचस्पी दिखाई और वे जानना चाहते हैं कि कैसे वे स्किल डेवलप करके टेक्नोलॉजी का फायदा उठा सकते हैं। प्रोफेशनल सर्विसेज और कंसल्टिंग से जुड़े लोगों में, टेक्नोलॉजी को लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने 85 प्रतिशत लोगों ने दिलचस्पी दिखाई। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के लगभग 76 प्रतिशत प्रोफेशनल्स ने बदलती दुनिया के साथ आगे बढ़ने में अपनी दिलचस्पी दिखाई। अध्ययन में पता चलता है कि भारतीय तकनीकी विशेषज्ञों के लिए स्किल डेवलप करने का मुख्य उद्देश्य आत्मविश्वास यानी कॉन्फिडेस बढ़ाना, अपनी नौकरी को लेकर ज्यादा सुरक्षित रहना और साथ ही साथ अपने स्किल सेट में इजाफा करना है।

शक्कर में लिवाली, खाद्य तेलों में बढ़त, दलहन, दाल मजबूत, चावल सामान्य

इंदौर। सियागंज किराना बाजार में शक्कर में लिवाली रही। खाद्य तेल सुधार लिए रहे। आज सोयाबीन रिफाइंड ऊंचा बोला। तिलहनों में खरीदी बढ़ी रही। दलहन, दाल ऊंचे बोले गए। चावल में कामकाज सामान्यवत रहा।

किराना बाजार

शक्कर में पूछपरख रही। आज शक्कर में 04 गाड़ी आवक हुई। हल्दी तथा खोपरा गोला लिवाली से महंगा बिका। साबूदाना में लिवाली रही।

तेल-तिलहन

खाद्य तेल लिवाली बढ़ने से तेजी लिए रहे। सोयाबीन रिफाइंड बढ़कर बिका। तिलहनों में उठाव रहा।

दाल-दलहन

स्थानीय संयोगितागंज अनाज मंडी में चना कांटा मजबूत बना रहा। दालों में खरीदी से भाव बढ़त लिए बताए गए।चावल में उठाव साधारण रहा।

किराना

शक्कर 3880 से 3920 रुपये प्रति क्विंटल। खोपरा गोला 120 से 140 रुपये प्रति किलोग्राम। खोपरा बूरा 2200 से 3450 रुपये प्रति 15 किलोग्राम। हल्दी खडी 150 से 275 रुपये प्रति किलोग्राम। साबूदाना 7200 से 8100, पैकिंग में 8400 से 8600 रुपये प्रति क्विंटल।।

तिलहन

सरसों निमाड़ी 6300 से 6500, सोयाबीन 5000 से 5100 रुपये प्रति क्विंटल।

तेल

मूंगफली तेल इंदौर 1880 से 1900, सोयाबीन रिफाइंड इंदौर 960 से 965, साल्वेंट 915 से 920, पाम तेल 920 से 925 रुपये प्रति 10 किलो।

दलहन

चना (कांटा) 5450 से 5475, चना विशाल 5200 से 5325, मसूर 5750 से 5800, तुअर निमाड़ी 8700 से 10000, तुअर सफेद (महाराष्ट्र) 10200 से 10400, तुअर (कर्नाटक) 10400 से 10600, मूंग 7800 से 8100, मूंग हल्की 6800 से 7200, उड़द 7400 से 8500, उड़द हल्की 3000 से 5000 रुपये प्रति क्विंटल।

दाल

चना दाल 6950 से 7450, तुअर दाल सवा नंबर 12700 से 12800, तुअर दाल फूल 13100 से 13200, तुअर दाल बोल्ड 14100 से 14600, आयातित तुअर दाल 11800 से 11900, मसूर दाल 7050 से 7350, मूंग दाल 9700 से 10100, मूंग मोगर 9900 से 10200, उड़द दाल 9800 से 10100, उड़द मोगर 10700 से 11000 रुपये प्रति क्विंटल।

चावल-पोहा

बासमती 11500 से 12500, तिबार 9500 से 10000, दुबार 8500 से 9000, मिनी दुबार 7500 से 8000, मोगरा 4200 से 6500, बासमती सैला 7000 से 9500, कालीमूंछ 8000 से 8500, राजभोग 6500 से 7500, दूबराज 4000 से 4500, परमल 2800 से 3000, हंसा सैला 2900 से 3100, हंसा सफेद 2500 से 2700, पोहा 4300 से 4800 रुपये प्रति क्विंटल।

रवा-मैदा

रवा 1540 से 1550, मैदा 1490 से 1500, आटा 1440 से 1450, चना बेसन 3500 से 3550 रुपये प्रति 50 किलोग्राम।

टाटा प्ले की सेवायें अब जीसैट 24 से

नयी दिल्ली। डीटीएच सेवायें देने वाली कंपनी टाटा प्ले की सेवायें आज से जीसैट 24 उपग्रह से शुरू हो गयी है और अब इस पर देश में उपलब्ध लगभग सभी नौ सौ चैनल उपभोक्ताओं को मिलेंगे।

पहले टाटा स्काई के नाम से प्रसिद्ध टाटा प्ले ने सरकार के मेक इन इंडिया मिशन के अनुरूप जून 2022 में इसरो की वाणिज्यिक इकाई न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) के साथ गठबंधन कर जीसैट-24 उपग्रह का प्रक्षेपण किया था। एक वर्ष तक के परीक्षण के बाद टाटा प्ले ने अपने कक्ष में स्थापित हो चुके इस उपग्रह का उपयोग आज से शुरू करने की घोषणा की। इस बढ़ी हुई बैंडविड्थ से टाटा प्ले अपने उपयोगकर्ताओं को और भी बेहतर पिक्चर और ध्वनि प्रदान कर पाएगा और सभी डीटीएच प्लेटफार्मों के बीच सबसे बड़ा उपग्रह बैंडविड्थ प्रदाता बनने के साथ 50 प्रतिशत ज़्यादा चैनल प्रसारित कर पाएगा।

TATA PLAY

इस सेवा के शुभारंभ के मौके पर दूरसंचार और सूचना एवं प्रसारण सचिव अपूर्व चंद्रा ने कहा, जीसैट-24 सफलतापूर्वक शुरू होने से अंतरिक्ष और संचार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत की ओर एक और कदम बढ़ाया है।

इस मौके पर इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कहा, जीसैट-24 एक 4-टन वर्ग का संचार उपग्रह है, जो डीटीएच सेवाएं प्रदान करने के लिए बनाया गया है। इसने कक्षा में विस्तृत परीक्षण के बाद अपनी अधिकतम उपग्रह क्षमता के साथ काम करना शुरू कर दिया है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत के दूरसंचार क्षेत्र में अत्याधुनिक स्वदेशी प्रौद्योगिकी द्वारा लायी गई एक क्रांति का प्रतीक है। यह हमारे देश के एयरोस्पेस के कौशल को हमारा आभार है और मांग पर आधारित मिशन के क्षेत्र में भारत के सफल प्रवेश की शुरुआत करता है।

एनएसआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक राधाकृष्णन दुरईराज ने कहा, अंतरिक्ष क्षेत्र में सुधारों के बाद जीसैट-24 एनएसआईएल द्वारा शुरू किया गया पहला मांग आधारित संचार उपग्रह मिशन है। जीसैट-24 उपग्रह भारत में उपग्रह टेलीविजन के एक नए युग की शुरुआत करने के लिए तैयार है। मेक इन इंडिया पहल की सफलता प्रमाणित करते हुए यह उपग्रह अत्याधुनिक डिजिटल टीवी प्रसारण क्षमताओं द्वारा घरेलू प्रसारण सेवाओं में मदद करेगा। एनएसआईएल, इसरो और टाटा प्ले की टीमों को बधाई, जिन्होंने इस परियोजना को सफल बनाने में सहयोग दिया।

इस अवसर पर टाटा प्ले के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ हरित नागपाल ने कहा टाटा प्ले द्वारा देखने के अनुभव को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाता है। एनएसआईएल के साथ इस सहयोग द्वारा हमारे डीटीएच ग्राहकों को और भी बेहतर वीडियो एवं ऑडियो गुणवत्ता मिलेगी और वो कई सारे चैनलों व सेवाओं का आनंद ले सकेंगे। यह इस देश में लीनियर टीवी की ओर हमारी प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है, जहां लगभग 14 करोड़ घरों में अभी भी पहला टीवी खरीदा जाना बाक़ी है। हमने अपनी सभी सेवाएं हमेशा अंतरिक्ष विभाग द्वारा निर्मित स्वदेशी उपग्रहों के माध्यम से प्रदान की हैं और क्षमता में इस वृद्धि से 'मेक इन इंडिया' के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि होती है।

जीसैट-24 एक 24-केयू बैंड संचार उपग्रह है, जिसे भारत सरकार द्वारा केवल टाटा प्ले की डीटीएच सेवाओं के लिए प्रक्षेपित किया गया है। जीसैट-24 उपग्रह की संपूर्ण क्षमता को इसके प्रतिबद्ध ग्राहक टाटा प्ले को पट्टे पर दिया गया है।

भारतीय कंपनियों ने कैपिटल मार्केट से जुटाए 9.8 लाख करोड़

नई दिल्ली। भारतीय कंपनियों ने वित्त वर्ष 2022-23 में कैपिटल मार्केट से 9.8 लाख करोड़ रुपए जुटाया हैं। सिक्योरिटी एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया ने अपनी एनुअल रिपोर्ट में इस बात की जानकारी दी है। बोर्ड ने बताया कि कंपनियों ने अपनी जरुरत के खर्चे के लिए इक्विटी, लोन, अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट और इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट के जरिए यह फंड जुटाया है। पिछले वित्त वर्ष की तुलना में यह 4.6 प्रतिशत ज्यादा है। SEBI ने बताया कि कंपनियों ने इन फंडों का एक बड़ा हिस्सा करीब 9.2 करोड़ रुपए इक्विटी और डेट इंस्ट्रूमेंट के जरिए जुटाया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि बीते 5 सालों में भारतीय कंपनियों के एसेट मैनेजमेंट इकोसिस्टम में बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में भी इसी तरह के बदलाव देखे जा रहे हैं। इसका मतलब यह है कि कंपनियों और म्यूचुअल फंड इंडस्ट्रीज ने अपनी संपत्तियों को बढ़ाने में इक्विटी और डेट इंस्ट्रूमेंट जैसे कई दूसरे तरीकों को अपनाया है।

चंद्रयान 3 : भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को मिलेगा बढ़ावा

'मॉक्स, इस्ट्रैक, मैं चंद्रयान 3 हूं। मुझे चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण महसूस हो रहा है।' जैसे ही बेंगलूरु के इस्ट्रैक (इसरो टेलीमेट्री, ट्रैकिंग ऐंड कमांड नेटवर्क) स्थित मिशन ऑपरेशन्स कॉम्प्लेक्स (मॉक्स) को शनिवार की शाम 7.12 बजे चंद्रयान 3 से यह संदेश मिला, भारत ने चंद्रमा की कक्षा में तीसरी बार सफलतापूर्वक अपने उपग्रह को स्थापित करते हुए एक इतिहास रच दिया। यह पृथ्वी से भेजे गए कृत्रिम उपग्रह का 140वां मिशन है।

23 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर संभावित सॉफ्टलैंडिंग करने के अंतरिक्ष यान के लक्ष्य से पहले सबसे जरूरी कदमों में से एक था। अगर ऐसा हो जाता है भारत ऐसा करने वाले उन विशिष्ट देशों में शामिल हो जाएगा। अब तक ऐसा करने वाले देश सिर्फ अमेरिका, सोवियत संघ और चीन हैं। इसको लेकर निजी क्षेत्र काफी उत्साहित दिख रहा है क्योंकि चंद्रयान 3 से भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने की संभावना है। अभी लगभग 8 अरब डॉलर की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के साल 2040 तक 40 अरब डॉलर से अधिक रहने की उम्मीद है।

सरकारी अनुमानों के अनुसार, 360 अरब डॉलर की वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी बमुश्किल 2 फीसदी के करीब है।

इंडियन स्पेस एसोसिएशन के सेवानिवृत्त महानिदेशक एके भट्ट ने कहा, 'मुझे अत्यंत खुशी है और मैं गर्व महसूस कर रहा हूं कि चंद्रयान मिशन अब तक योजना के मुताबिक है। यह सभी चरण हैं और हम निश्चित रूप से अंत में इसे सफल होते हुए देखेंगे। यह हम सभी भारतवासियों के लिए गर्व की बात है। यह निजी उद्योग के लिए भी कई अवसरों में से एक है। अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था की वृद्धि को चंद्रयान अभियान से रफ्तार मिलेगी।'

अब मिशन का सबसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव कक्षा में रहते हुए लैंडर से प्रोपल्शन मॉड्यूल को अलग करना है।

1 अगस्त को चंद्रयान पृथ्वी की कक्षा से एक सफल चाल के साथ चंद्रमा की ओर बढ़ा। इसरो ने बयान में कहा, 'जैसे-जैसे मिशन आगे बढ़ रहा है, चंद्रयान 3 की गति को धीरे-धीरे कम करते हुए उसे चंद्रमा की कक्षा में स्थापित करने की योजना है।

शार्ट न्यूज

मार्श बने ऑस्ट्रेलिया के नये टी20 कप्तान

मेलबर्न। अनुभवी ऑलराउंडर मिचेल मार्श को दक्षिण अफ्रीका में 30 अगस्त से होने वाली तीन मैचों की टी20 शृंखला के लिये ऑस्ट्रेलिया का कप्तान चुना गया है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने सोमवार को यह जानकारी दी। गौरतलब है कि ऑस्ट्रेलिया को टी20 विश्व कप 2021 जिताने वाले कप्तान ऐरन फिंच ने इस साल की शुरुआत में खेल के सबसे छोटे प्रारूप से संन्यास ले लिया था। मार्श को अस्थायी तौर पर फिंच का उत्तराधिकारी चुना गया है। ऑस्ट्रेलियाई चयनकर्ता इस प्रारूप में स्थायी कप्तान का चुनाव एकदिवसीय विश्व कप के बाद करेंगे। ऑस्ट्रेलिया के मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने कहा, मिच लंबे समय से हमारी सीमित ओवर टीम में एक वरिष्ठ खिलाड़ी रहे हैं। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके लिये अपने नेतृत्व कौशल में अनुभव जोड़ने का मौका है। हम दक्षिण अफ्रीका में उन्हें यह कदम लेते हुए देखना चाहते हैं। यह शृंखला घरेलू परिस्थितियों में हुए टी20 विश्व कप 2022 के बाद खेल के सबसे छोटे प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया का पहला अभियान है और सीए ने मार्श की अगुवाई में नये चेहरों को मौका दिया है। ऑलराउंडर आरोन हार्डी, सलामी बल्लेबाज मैथ्यू शॉर्ट और बाएं हाथ के तेज गेंदबाज स्पेंसर जॉनसन तीन मैचों की सीरीज के दौरान अंतरराष्ट्रीय पदार्पण के लिये कतार में हैं। पिछले टी20 विश्व कप में हिस्सा लेने वाली टीम में से सिर्फ स्टीव स्मिथ, मार्कस स्टॉइनिस, ग्लेन मैक्सवेल, एडम ज़ैम्पा और मार्श को मौका दिया गया है।

विटोरी बने सनराइजर्स के नये कोच

हैदराबाद। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की 2016 की चैंपियन फ्रेंचाइजी सनराइजर्स हैदराबाद ने डेनियल विटोरी को नया मुख्य कोच नियुक्त किया है। फ्रेंचाइजी ने सोमवार को इसकी घोषणा की। न्यूज़ीलैंड के पूर्व कप्तान विटोरी 2014 से 2018 के बीच रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के मुख्य कोच रह चुके हैं और इस समय ऑस्ट्रेलियाई टीम के सहायक कोच की भूमिका निभा रहे हैं। वह सनराइजर्स में बतौर मुख्य कोच ब्रायन लारा की जगह लेंगे। सनराइजर्स ने पिछले छह सीज़नों में चौथी बार नया कोच नियुक्त किया है। लारा (2023) के एक वर्षीय कार्यकाल से पहले टॉम मूडी (2019, 2022) और ट्रेवर बेलिस (2020-21) भी दो-दो साल फ्रेंचाइजी के साथ बिता चुके हैं। फिलहाल विटोरी द हंड्रेड में बर्मिंघम फीनिक्स पुरुष टीम के मुख्य कोच हैं। वह इससे पहले कैरिबियाई प्रीमियर लीग (सीपीएल) में बारबाडोस रॉयल्स, बिग बैश लीग में ब्रिस्बेन हीट और वाइटैलिटी ब्लास्ट में मिडलसेक्स के साथ भी मुख्य कोच के रूप में काम कर चुके हैं। हाल के वर्षों में खराब प्रदर्शन करने वाली सनराइजर्स ने आईपीएल 2021 के बाद से केवल 13 मैच जीते हैं जबकि 29 में उसे हार मिली है। साल 2016 में चैंपियन बनने के बाद से 2020 तक यह फ्रेंचाइजी हर सीज़न में प्लेऑफ़ में पहुंची, लेकिन दूसरा खिताब जीतने में असफल रही।

अंतिम समय में हुए गोल ने पलटा मैच, मैनचेस्टर सिटी को हराकर आर्सेनल 17वीं बार बना चैंपियन

लंदन। आर्सेनल ने रविवार (छह अक्तूबर) को प्रीमियर लीग और चैंपियंस लीग चैंपियन मैनचेस्टर सिटी को हराकर एफए कम्यूनिटी शील्ड खिताब को जीत लिया। निर्धारित 90 मिनट तक 1-1 की बराबरी पर रहने के बाद मैच का नतीजा पेनल्टी शूटआउट से निकला। पेनल्टी शूटआउट में आर्सेनल ने 4-1 से जीत हासिल की। आर्सेनल 17वीं बार कम्यूनिटी शील्ड जीतने में सफल हुआ। वह मैनचेस्टर यूनाइटेड (21) के बाद सबसे ज्यादा बार इस खिताब जीतने वाली टीम बनी। आर्सेनल ने लिवरपूल (16) को पीछे छोड़ा। मैच में पहले हाफ में कोई गोल नहीं हुआ। हाफटाइम तक स्कोर 0-0 रहा। दूसरे हाफ के 64वें मिनट में कोच पेप गॉर्डियोला ने बड़ा फैसला किया। उन्होंने स्टार खिलाड़ी एर्लिंग हालैंद की जगह इंग्लैंड के युवा खिलाड़ी कोले पाल्मर को उतारा। पाल्मर ने अपने कोच के फैसले को सही साबित किया। उन्होंने 77वें मिनट में केविन डी ब्रुईन के पास पर शानदार शॉट लगाते हुए गेंद को सीधे गोल पोस्ट में डाल दिया। मैनचेस्टर सिटी 1-0 से आगे हो गई। 90 मिनट तक सिटी की टीम 1-0 से आगे रही।

इंटर मियामी लीग कप के क्वार्टर फाइनल में, लियोनल मेसी के करिश्माई प्रदर्शन से मिली जीत

टेक्सास (अमेरिका)। अमेरिका में अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी लियोनल मेसी का करिश्माई प्रदर्शन जारी है। मेसी ने अपनी कप्तानी में इंटर मियामी को लीग के क्वार्टर फाइनल में पहुंचा दिया है। इंटर मियामी टूर्नामेंट के इतिहास में पहली बार अंतिम-8 में पहुंची है। 2019 में शुरू हुए टूर्नामेंट का यह तीसरा संस्करण है। इंटर मियामी की टीम पहली बार ही लीग कप में हिस्सा ले रही हैं। मेसी ने टीम को खिताब के नजदीक पहुंचा दिया है। अब इंटर मियामी को फाइनल में पहुंचने के लिए दो और मैच जीतने हैं। टेक्सास के टोयोटा स्टेडियम में होम टीम एफसी डलास के खिलाफ इंटर मियामी ने पेनल्टी शूटआउट में जीत हासिल की। निर्धारित 90 मिनट तक मैच 4-4 की बराबरी पर रहने के बाद पेनल्टी शूटआउट में फैसला हुआ। वहां इंटर मियामी ने 5-3 से जीत हासिल की। क्वार्टर फाइनल में टीम का मुकाबला 11 अगस्त को ह्यूस्टन डायनेमो या चार्लोट एफसी से होगा। मैच की बात करें तो मेसी ने छठे मिनट में गोल कर इंटर मियामी को 1-0 से आगे कर दिया।

जीपीबीएल के दूसरे सत्र के ड्रॉफ्ट में सबसे महंगे खिलाड़ी बने मिथुन, 27 अगस्त से होगा टूर्नामेंट

बेंगलुरु। राष्ट्रीय चैंपियन मिथुन मंजूनाथ ग्रां प्री बैडमिंटन लीग (जीपीबीएल) के दूसरे सत्र के लिए खिलाड़ियों की नीलामी में सबसे अधिक रकम हासिल करने वाले खिलाड़ी बनकर उभरे। इस लीग का आयोजन यहां 27 अगस्त से नौ सितंबर तक होगा। बंगलूरू के 25 साल के इस खिलाड़ी ने कुछ दिन पहले ऑस्ट्रेलिया ओपन में दुनिया के सातवें नंबर के खिलाड़ी लोह कीन यू को हराया था। मिथुन को टीम में शामिल करने के लिए बंगलूरू टाइगर्स ने भी पूरा जोर लगाया लेकिन चेन्नई सुपरस्टार्स ने इस खिलाड़ी के लिए 14.5 लाख रुपये बोली लगाकर बाजी मार ली। मिथुन आइकन वर्ग के खिलाड़ियों में शामिल थे जिनका आधार मूल्य आठ लाख रुपये था। लीग में शामिल टीमों को दो से अधिक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को चुनने का विकल्प दिए जाने के बाद 15 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों का भी चयन किया गया।

एशियाड स्क्वाड में दीपा कर्माकर को जगह नहीं

रियो ओलिंपिक में चौथे स्थान पर रहने वाली जिम्नास्ट दीपा कर्माकर का नाम एशियाड के स्क्वाड में नहीं शामिल किया गया है। हालांकि, दीपा कर्माकर ने ट्रायल्स में टॉप किया था। जिमनास्टिक्स फेडरेशन ऑफ इंडियाने दीपा कर्माकर का नाम भेजा था। हालांकि, केंद्रीय खेल मंत्रालय की आखिरी मंजूरी से पहले उनका नाम इंडियन ओलिंपिक एसोसिएशन IOA ने काट दिया। GFI के मुताबिक इंटरनेशनल टूर्नामेंट्स से लंबे समय तक हिस्सा नहीं लेने के कारण स्टार जिमनास्ट को बाहर किया गया है। अब दीपा की जगह प्रणति नायक और प्रणति दास को आर्टिस्टिक जिम्नास्टिक की एशियाड टीम में जगह मिली है। दीपा का नाम कटने ने त्रस्त्रढ्ढ असमंजस में है। GFI के अध्यक्ष सुधीर मित्तल ने स्पोर्ट्स वेबसाइट द ब्रिज से कहा कि, दीपा कर्माकर जाने की हकदार है। उनका नाम हमारी भेजी लिस्ट में टॉप पर था। हमें नहीं पता कि किस आधार पर उनका नाम काटा गया है। मित्तल ने आगे कहा कि, हमने किसी कारण से ही ट्रायल्स किए थे। अब दीपा ने ट्रायल्स में बेस्ट परफॉर्म किया है तो उन्हें ही जाना चाहिए। हमारे साथ इस बात पर कोई चर्चा नहीं हुई है कि महिला जिम्नास्टिक टीम को दो सदस्यीय टीम में लाने की स्थिति में किसे चुना जाना चाहिए। दीपा ने 2014 कॉमनवेल्थ गेम्स में जिमनास्टिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। वे ऐसा करने वाली भारत की पहली महिला जिम्नास्ट बनी थीं। इसके अलावा 2016 ओलिंपिक्स में कर्माकर ने चौथे नंबर पर फिनिश किया था।

आयुष, उन्नति करेंगे विश्व जूनियर चैंपियनशिप में भारत की अगुवाई

एजेंसी

नयी दिल्ली। आयुष शेट्टी और उन्नति हुडा 25 सितंबर से अमेरिका में होने वाली बीडब्ल्यूएफ विश्व जूनियर चैंपियनशिप 2023 में भारतीय चुनौती की अगुवाई करेंगे। भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) ने सोमवार को यह घोषणा की। बीएआई ने राष्ट्रीय राजधानी में 26 से 29 जुलाई के बीच हुए ट्रायल के बाद 16-सदस्यीय टीम का चयन किया। बीएआई के महासचिव संजय मिश्रा ने कहा, परीक्षण बेहद प्रतिस्पर्धी था। जब से हमने ऐसे अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिये ट्रायल अनिवार्य किया है तब से हम कई नये चेहरे देख रहे हैं। हमें उन नामों पर बेहद गर्व है जिन्हें अंतिम टीम में जगह मिली है। हमें विश्वास है कि ये युवा शटलर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे और देश को गौरवान्वित करने के लिये अपनी क्षमता से अधिक प्रदर्शन करेंगे।

ओडिशा ओपन 2022 की चैंपियन उन्नति हुड्डा बालिका एकल में भारत के अभियान की अगुवाई करेंगी, जबकि तारा शाह (विश्व नंबर सात) और देविका सिहाग (राष्ट्रीय नंबर सात) भी इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगी। दो बार के अंडर-19 ऑल इंडिया जूनियर रैंकिंग चैंपियन आयुष शेट्टी चयन ट्रायल में शीर्ष स्थान हासिल करते हुए लड़कों की टीम का नेतृत्व करेंगे। उनके साथ तुषार सुवीर और लोकेश रेड्डी भी होंगे। लड़कों की युगल टीम में भारत के जूनियर नंबर एक निकोलस नाथन राज-तुषार सुवीर और दिव्यम अरोड़ा-मयंक राणा की रोमांचक जोड़ियां शामिल हैं। लड़कियों की युगल श्रेणी में राधिका शर्मा-तन्वी शर्मा और वेन्नला के-श्रियांशी वलीशेट्टी की जोड़ी भारत का प्रतिनिधित्व करेगी। समरवीर-राधिका शर्मा और सात्विक रेड्डी के-वैष्णवी खडकेकर भारत की मिश्रित युगल चुनौती का प्रतिनिधित्व करेंगे। बीडब्ल्यूएफ विश्व जूनियर चैंपियनशिप 25 सितंबर को मिश्रित टीम चैंपियनशिप के साथ शुरू होगी और एकल स्पर्धा दो अक्टूबर से खेली जायेगी।

भारतीय जूनियर बैडमिंटन स्क्वाड (टीम इवेंट)

बालक एकल : आयुष शेट्टी, तुषार सुवीर, लोकेश रेड्डी, निकोलस नाथन राज
बालिका एकल : उन्नति हुड्डा, तारा शाह, देविका सिहाग, श्रियांशी वलीशेट्टी
बालक युगल टीम : निकोलस नाथन राज/तुषार सुवीर, दिव्यम अरोड़ा/मयंक अरोड़ा
बालिका युगल टीम : राधिका शर्मा/तन्वी शर्मा, वेन्नाला के/श्रियांशी वलीशेट्टी
मिश्रित युगल टीम : समरवीर/राधिका शर्मा, सात्विक रेड्डी के/वैष्णवी खडकेकर

भारतीय जूनियर बैडमिंटन टीम (एकल स्पर्धा)
बालक एकल : आयुष शेट्टी, तुषार सुवीर, लोकेश रेड्डी
बालिका एकल : उन्नति हुड्डा, तारा शाह, देविका सिहाग
बालक युगल : निकोलस नाथन राज/तुषार सुवीर, दिव्यम अरोड़ा/मयंक अरोड़ा
बालिका युगल : राधिका शर्मा/तन्वी शर्मा, वेन्नाला के/श्रियांशी वलीशेट्टी
मिश्रित युगल : समरवीर/राधिका शर्मा, सात्विक रेड्डी के/वैष्णवी खडकेकर।

ऑस्ट्रेलिया की विश्व कप टीम में लाबुशेन को नहीं मिली जगह

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया ने दाएं हाथ के बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन को भारत में होने वाले एकदिवसीय विश्व कप के लिये चयनित 18-सदस्यीय स्क्वाड में जगह नहीं दी है।

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने हालांकि सोमवार को घोषित टीम में लेग-स्पिनर तनवीर संघा और हरफनमौला आरोन हार्डी को जगह दी। संघा और हार्डी ने अभी तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदार्पण नहीं किया है।

लाबुशेन को टीम में जगह न मिलना आश्चर्य की बात है क्योंकि उन्होंने 2020 में पदार्पण करने के बाद से वह सिर्फ आठ एकदिवसीय मैचों में ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा नहीं रहे हैं। वह ऑस्ट्रेलिया के पिछले नौ वनडे मैचों में भी टीम का हिस्सा रहे थे।

एकदिवसीय विश्व कप के लिये अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के नियमों का पालन करते हुए सीए इस 18-सदस्यीय स्क्वाड को 28 सितंबर तक घटाकर 15-सदस्यीय टीम में बदल देगा। उससे पहले यह ऑस्ट्रेलियाई टीम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पांच वनडे मैच (सात-17 सितंबर) और भारत के खिलाफ तीन वनडे (22-27 सितंबर) खेलेगी।

कप्तान पैट कमिंस विश्व कप में कंगारुओं की अगुवाई करेंगे, हालांकि दक्षिण अफ्रीका और भारत के खिलाफ उनका खेलना संशय में है।

इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेली गयी हालिया एशेज़ टेस्ट शृंखला के दौरान कमिंस की कलाई में फ्रैक्चर हुआ था जिसके कारण उन्हें छह हफ्ते के लिये आराम करने की सलाह दी गयी है।

मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने खुलासा किया कि कमिंस के बायीं त्रिज्या में एक अव्यवस्थित फ्रैक्चर है जिसके लिये छह सप्ताह के रिहैब की आवश्यकता है, लेकिन उनका मानना है कि टूर्नामेंट की शुरुआत से पहले आराम करने से उन्हें फायदा होगा।

पाकिस्तान के मुख्य चयनकर्ता बने इंज़माम

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान इंज़मामम-उल-हक़ को दूसरी बार मुख्य चयनकर्ता नियुक्त किया गया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने सोमवार को एक ट्वीट के ज़रिये इसकी पुष्टि की। यह पद पिछले महीने हारून रशीद के इस्तीफा देने के बाद से खाली पड़ा था। इंज़मामम इससे पहले 2016 से 2019 के बीच भी पाकिस्तान के मुख्य चयनकर्ता रह चुके हैं। दूसरे कार्यकाल में उनकी पहली ज़िम्मेदारी अफगानिस्तान के खिलाफ 22 अगस्त से होने वाली एकदिवसीय शृंखला के लिये टीम चुनना होगा। अफगानिस्तान का सामना करने के बाद पाकिस्तान सितंबर में एशिया कप खेलेगी, जिसके फौरन बाद टीम पांच अक्टूबर से 19 नवंबर के बीच होने वाले एकदिवसीय विश्व कप के लिये भारत आयेगी। इंज़मामम 10 अगस्त को एक संवाददाता सम्मेलन में अफगानिस्तान शृंखला और एशिया कप के लिये स्क्वाड की घोषणा करेंगे।

टी20 की हार के बाद बल्लेबाजी से निराश पांड्या

एजेंसी

गयाना। भारत के कप्तान हार्दिक पांड्या ने दूसरे टी20 में वेस्ट इंडीज के हाथों मिली दो विकेट की करीबी हार के बाद खराब बल्लेबाजी की समस्या को स्वीकार किया।

प्रोविडेंस स्टेडियम पर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत 20 ओवर में 152 रन ही बना सका। मेहमान टीम की ओर से तिलक वर्मा (41 गेंद, 51 रन) ने अर्द्धशतक जड़ा जबकि कोई अन्य बल्लेबाज प्रभावशाली प्रदर्शन नहीं कर सका। वेस्ट इंडीज ने 153 रन का लक्ष्य सात गेंद रहते हुए हासिल कर लिया।

पांड्या ने मैच के बाद कहा, हमारा बल्लेबाजी प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा। विकेट लगातार गिरते रहे और पिच भी धीमी थी। हमने इतनी अच्छी बल्लेबाजी नहीं की कि 160 रन से ज्यादा बना सकें।

पांड्या ने कहा, वह (तिलक वर्मा) जिस तरह बल्लेबाजी कर रहा है, उस पर हम ध्यान दे रहे हैं। नंबर चार पर एक बाएं हाथ के बल्लेबाज के होने से हमें दाएं और बाएं का संयोजन मिल जाता है। हमारे युवा खिलाड़ी आत्मविश्वास और निर्भयता के साथ आ रहे हैं। भारत ने 152 रन का बचाव करते हुए पहले ओवर में वेस्ट इंडीज के दो विकेट गिरा भी दिये, लेकिन निकोलस पूरन ने 40 गेंद पर 67 रन की आतिशी पारी खेलकर वेस्ट इंडीज को जीत के करीब पहुंचा दिया। मेज़बान टीम को लक्ष्य तक पहुंचने से पहले कुछ झटके लगे लेकिन वह दो विकेट की जीत हासिल करने में सफल रही।

पांड्या ने पूरन की बल्लेबाजी पर कहा, वह (पूरन) जिस तरह से बल्लेबाजी कर रहे हैं उससे स्पिनरों को लगाना मुश्किल हो जाता है। दो रन पर दो विकेट गिरने के बाद उन्होंने जिस तरह बल्लेबाजी की वह कमाल था।

इस बीच, तिलक ने भी भारतीय टीम का स्कोर कम होने पर पांड्या की बात से सहमति ज़ाहिर की, हालांकि उन्होंने धीमे विकेट पर बल्लेबाजों के प्रदर्शन की सराहना की।

तिलक ने मैच के बाद संवाददाताओं से कहा, विकेट धीमा था। हमने सोचा कि 150-160 एक अच्छा स्कोर होगा। हो सकता है कि हम 10 रन पीछे रह गये, लेकिन यह एक अच्छा प्रदर्शन था (हमारे बल्लेबाजों द्वारा)।

उन्होंने कहा, पूरन ने जिस तरह बल्लेबाजी की उसके लिये उनको श्रेय जाता है। उन्होंने गेंदबाजों पर दबाव डाला।

हम जानते थे कि अगर हम एक विकेट हासिल कर सकते हैं, तो हम मैच बचा सकते हैं क्योंकि विकेट धीमा था। ऐसा नहीं था बल्लेबाजी करना आसान है। यह एक गेंदबाज की पिच थी। दुर्भाग्य से, यह इतना मजेदार खेल है कि यह कभी भी पलट सकता है।

ट्यूनिशिया से इटली जा रहे प्रवासियों की 2 नावें डूबीं

2 की मौत, 30 लापता; समुद्री तूफान में फंसने से हुआ हादसा

इटली के लैम्पेडुसा आईलैंड के पास प्रवासियों की 2 नावें डूब गईं। इसमें 2 लोगों की मौत हो गई, वहीं 30 लोग लापता है। मरने वालों में एक महिला और उसकी एक साल की बच्ची भी शामिल है। इटली ने बताया कि उन्हें आइवोरी कोस्ट से दोनों के शव मिले हैं।

इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन माइग्रेशन की रिपोर्ट के मुताबिक हादसा नावों के समुद्री तूफान में फंसने से हुआ। दोनों नावें गुरुवार को ट्यूनिशिया के फैक्स पोर्ट से रवाना हुई थीं। वहीं, ट्यूनिशिया ने बताया है कि उन्हें फैक्स बीच से भी 10 प्रवासियों के शव मिले हैं।

इटली के कोस्टगार्ड लापता प्रवासियों की खोज कर रहे हैं। वहीं, कोस्टगार्ड ने रविवार को लैम्पेडुसा में पहाड़ी इलाकों में फंसे 20 प्रवासियों को भी बचाया। इनका रेस्क्यू हेलिकॉप्टर से किया गया। वो यहां 48 घंटों से फंसे हुए थे। समुद्री की तेज हवा से उनकी नाव पहाड़ियों के बीच फंस गई थी।

इटली की पेट्रोल बोट्स ने हाल ही के दिनों में 2000 प्रवासियों की जान बचाई है इटली के गृह मंत्रालय के मुताबिक इस साल अब तक वहां 92 हजार प्रवासी पहुंच चुके हैं। ये आंकड़ा पिछले साल के मुकाबले दोगुना है।

ट्यूनिशिया में जुलाई तक 901 लोगों के शव बरामद

उत्तरी अफ्रीका से अपने देश छोड़कर यूरोप जाने वाले लोगों की संख्या में इस साल काफी इजाफा हुआ है। लोग अपनी जान जोखिम में डालकर गैरकानूनी तरीकों से नावों के सहारे यात्रा कर रहे हैं। देश के गृह मंत्री ने जुलाई में कहा था कि ट्यूनीशियाई तट रक्षक ने इस साल 1 जनवरी से 20 जुलाई तक अपने तट से डूबे हुए प्रवासियों के 901 शव बरामद किए हैं। प्रवासियों को गैर कानूनी तरीकों से यूरोप जाने से रोकने के लिए 16 जुलाई को, ट्यूनीशिया और ईयू ने एक समझौता किया। इसके तहत लोगों की जान जोखिम में डालकर उन्हें यूरोप भेजने वाले मानव तस्करों को काबू किया जाएगा। साथ ही सीमाओं पर भी सख्त पहरेदारी होगी।

अफगानिस्तान में अमेरिकी नागरिकों सहित कुछ विदेशी हिरासत में

काबुल। अफगानिस्तान में अमेरिकी नागरिकों सहित कुछ विदेशी नागरिकों को सुरक्षा से जुड़े मामलों सहित विभिन्न कारणों से हिरासत में लिया गया है। यह जानकारी तालिबान द्वारा स्थापित प्रशासन के मुख्य प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने दी। हालांकि मुजाहिद ने हिरासत में लिए गए लोगों की सही संख्या के बारे में नहीं बताया लेकिन कहा कि उनके के बारे में निर्णय देश की अंतरिम सरकार लेगी और दोषी नहीं पाए जाने पर उन्हें रिहा कर दिया जाएगा। प्रवक्ता ने रविवार को अफगानिस्तान के टोलोन्यूज टीवी चैनल के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि जिन लोगों पर सुरक्षा मामलों या अन्य मुद्दों में शामिल होने का संदेह है, जो हमारे देश के कानून के खिलाफ हैं, उन्हें हिरासत में लिया गया है। हम जांच कर रहे हैं और देख रहें हैं कि उनमें से कितने अपराधी हैं। अगर वे अपराधी साबित नहीं हुए तो उन्हें रिहा कर दिया जाएगा लेकिन अगर वे अपराधी साबित होते हैं तो हम इसका समाधान तलाश करेंगे। तालिबान अगस्त 2021 में अमेरिका समर्थित सरकार को गिरा कर अफगानिस्तान की सत्ता में आया था क्योंकि विदेशी सैनिक अफगानिस्तान छोड़कर जा रहे थे। उसी वर्ष सितंबर में, तालिबान ने मोहम्मद हसन अखुंद के नेतृत्व में एक नई सरकार का गठन किया, वह तालिबान के पिछले शासनकाल में विदेश मंत्री रह चुके हैं और 2001 से संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित हैं।

बाढ, भूस्खलन में करीब आठ लोगों की मौत

हनोई। वियतनाम के उत्तरी क्षेत्र में लगातार मूसलाधार वर्षा के कारण आई बाढ़ और भूस्खलन की चपेट में आने से करीब आठ लोगों की मौत हो गयी और तीन अन्य घायल हो गए। यहां की प्राकृतिक आपदा रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति ने सोमवार को यह जानकारी दी। प्राकृतिक आपदा में दो से छह अगस्त तक कुल आठ लोगों की मौत हो गयी। मृतकों में से चार लाई चाऊ में, दो येन बाई में, एक थाई गुयेन में और एक सोन ला प्रांत के थे और घायलों में तीनों लाई चाऊ के हैं। इस आपदा में 24 घर नष्ट हो गए और 30 हेक्टेयर फसलों को भी नुकसान पहुंचा है। स्थानीय समाचार पत्र वियतनाम न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, चार अगस्त के बाद से, उत्तरी क्षेत्र में सौ से दो सौ मिमी तक वर्षा हुई है। इसके अलावा, यहां के कुछ क्षेत्रों में लगभग 400 मिमी तक भारी बारिश दर्ज की गई है, जिससे छोटी नदियों और झरनों में बाढ़ आ गई है और भूस्खलन हुआ है। मानव जीवन और संपत्ति के नुकसान की रिपोर्ट के बाद, यहां के प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चिन्ह ने एक प्रेषण जारी कर संबंधित अधिकारियों से उत्तरी क्षेत्र में आपदाओं से बचाव की प्रक्रिया तेज करने के निर्देश दिए हैं। राष्ट्रीय जल-मौसम केंद्र ने कहा कि इस क्षेत्र में मंगलवार तक भारी बारिश जारी रहने के आसार हैं।

कम्बोडिया नरेश ने हुन मानेट को नियुक्त किया नया प्रधानमंत्री

नोम पेन्ह। कंबोडिया नरेश नोरोडोम सिहामोनी ने निवर्तमान प्रधान मंत्री सैमडेक टेको हुन सेन की ओर से पद छोड़ने की घोषणा के बाद सोमवार को हुन मानेट को नया प्रधान मंत्री नियुक्त किया। हुन सेन के अनुरोध के बाद सम्राट ने 45 वर्षीय हुन मानेट को पांच साल के कार्यकाल के लिए नए प्रधान मंत्री के रूप में नामित करने के लिए एक शाही डिक्री पर हस्ताक्षर किए। सिहामोनी ने शाही आदेश में कहा,कंबोडिया साम्राज्य के नामित प्रधानमंत्री का कर्तव्य है कि वह सरकार के सदस्यों को नेशनल असेंबली से विश्वास हासिल करने के लिए तैयार करें। उन्होंने कहा,यह शाही फरमान हस्ताक्षर के दिन से प्रभावी होता है। हुन मानेट को अपने नए कैबिनेट सदस्यों के साथ आधिकारिक तौर पर नया प्रधानमंत्री बनने के लिए 22 अगस्त को नेशनल असेंबली में विश्वास मत जीतने की आवश्यकता होगी। उसी दिन उनके शपथ लेने की भी उम्मीद है। नरेश को भेजे धन्यवाद पत्र में श्री हुन मानेट ने कहा,इस महान पद पर अपनी सबसे प्रिय मातृभूमि और लोगों की सेवा करने का एक महान अवसर प्राप्त करना उनके जीवन का सबसे बड़ा सम्मान है।

इमरान को सी ग्रेड अटक जेल भेजा

पार्टी बोली- खान की जान खतरे में, उन्हें खाना भी नहीं दिया जा रहा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को अटक जेल में ले जाया गया है, जो सी ग्रेड है और जिसमें कम से कम सुविधाएं हैं। पार्टी ने कहा है कि इमरान को जेल में खाना भी नहीं दिया जा रहा है। उनकी जिंदगी खतरे में है। जिस जेल में खान को रखा गया है, इसमें खूंखार कैदी रखे जाते हैं। राजनीतिक कैदियों को ए ग्रेड जेल में रखा जाता है। डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक पहली बार किसी पूर्व प्रधानमंत्री को इस जेल में रखा जा रहा है।

तोशाखाना मामले में अदालत ने इमरान खान को तीन साल की कैद सुनाने के बाद इस्लामाबाद पुलिस को उनको गिरफ्तार कर अडियाल जेल ले जाने को कहा था, लेकिन पंजाब पुलिस ही उन्हें अटक जेल ले गई। पहले ही लाहौर पुलिस को अलर्ट पर रहने को कहा गया था, जो जमान पार्क के उनके घर से उन्हें ले गई।

अंग्रेजों ने बनवाई थी अटक जेल

पुलिस इमरान खान का मेडिकल कराने की बजाय सीधे जेल ले गए और वकीलों से मिलने भी नहीं दिया। यह फैसला उनके लिए तगड़ा झटका है, क्योंकि वे अगले साल होने वाला चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। अपनी पार्टी तहरीक ए इंसाफ के प्रमुख भी नहीं रह सकेंगे।

पाकिस्तान के सबसे बड़े प्रांत पंजाब में केवल दो जेल ऐसी हैं जहां पर कैदियों के लिए 'ए' क्लास की सुविधाएं मुहैया की गई हैं। इन दोनों जेलों में बहावलपुर जेल और रावलपिंडी की अडियाला जेल शामिल हैं।

करीब 67 एकड़ में फैली अटक जेल का निर्माण ब्रिटिश शासकों ने 1905-06 में करवाया था। एक जेल अधिकारी ने बताया कि अटक जेल में इमरान खान के लिए VVIP सेल बनाया गया है, लेकिन इसमें एसी नहीं है, सिर्फ पंखा है। बिस्तर और अटैच वॉशरूम है।

इटली के सार्डिनिया में आग, सैकड़ों लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया

रोम। इटली के सार्डिनिया के उत्तरी और दक्षिणी हिस्से में तेज हवाओं के कारण भीषण आग लग गई जिसके बाद ऐहतियात के तौर पर लगभग 600 लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया। समाचार एजेंसी एएनएसए के अनुसार सार्डिनिया के पूर्वोत्तर प्रांत नुओरो के पोसाडा नगरपालिका में रविवार दोपहर भीषण आग लग गई, जिससे गंभीर स्थिति उत्पन्न हो गई और हवाएं आग की लपटों को पर्यटकों के बीच लोकप्रिय तटीय गांवों तक फैलने लगी। सोमवार सुबह तक अग्निशमन विमान, हेलीकॉप्टर और अग्निशामक आग से निपट रहे थे और क्षेत्रीय नागरिक सुरक्षा विभाग बचावकार्य में लगे हुए थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

आठवीं राइटर्स मीट में सम्मानित किए गए साहित्यकार

साहित्य लेखन और चुनौतियां विषयक परिचर्चा में छाए रहे भाषा, प्रकाशन और घटते पाठकों के मुद्दे

- साहित्यकार से वैज्ञानिक होते प्रेरित : मारवाह
- 9वाँ ग्लोबल लिटरेरी फेस्टिवल सितंबर में

नोएडा । नोएडा फिल्म सिटी के मारवाह स्टूडियो सभागार में सोमवार को आयेजित आठवीं राइटर्स मीट में आफ्ट यूनिवर्सिटी के चांसलर डॉ संदीप मारवाह ने कहा कि साहित्यकारों से वैज्ञानिक भी प्रेरित होते हैं। साहित्यकारों के नायक-नायिका तब से चाँद पर जाकर प्रेमालाप कर रहे हैं, जब विज्ञान की सोच भी चाँद पर जाने की नहीं थी । जहां रवि की किरणें नहीं जाती हैं,वहां कवि की दृष्टि जाती है। साहित्यकार संस्कृति के पोषक हैं। साहित्य संवाद का सृजन करता है ,विवाद को खत्म करता है। इसलिए साहित्यकारों का अभिनंदन और संरक्षण करना समाज का हम सब का कर्तव्य है,दायित्व है। डॉ मारवाह ने अपने स्टूडियो से साहित्यकारों का निःशुल्क टीवी और रेडियो प्रसारण करने तथा उनके स्तरीय पुस्तकों के प्रकाशन की घोषणा की ।

बाद में संचालन कर रहे भारतीय लेखक संघ के महासचिव सुशील भारती, वरिष्ठ पत्रकार कुमार राकेश, कवयित्री डॉ.पूनम भाटिया, कवि दिवाकर गोयल, चिंतक दिनेश उपाध्याय, पूर्व आईएएस अधिकारी व लेखक देवदत्त शर्मा के साथ भारतीय लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ संदीप मारवाह ने वरिष्ठ लेखक ममता सोनी, साहित्यकार राजीव गौतम , भाषा विद्वान सुधाकर पाठक, आर जे रेखा, कस्तुरिका मिश्रा, एडमिरल के. एस.नूर, एस.एस.शर्मा,कवि विजय शर्मा, दीप्ति अग्रवाल, डॉ. विमलेश वर्मा, नैंसी जुनेजा,ज्योत्सना पंडित, दिनेश कालिया, पूनम श्री,अनुपमा भारद्वाज आदि साहित्यकारों को प्रमाण पत्र, पुस्तक देकर सम्मानित किया ।

इस अवसर पर साहित्य लेखन और चुनौतियां पर हुई गहन परिचर्चा में पाठकों का अभाव, इंटरनेट का बढ़ता प्रभाव,भाषा की नासमझी, प्रकाशन में आर्थिक परेशानी, पुस्तकों की बिक्री का घटता ग्राफ जैसे मुद्दे छाए रहे । धन्यवाद ज्ञापन करते हुए महासचिव सुशील भारती ने सितंबर में आहूत नौवें ग्लोबल लिटरेरी फेस्टिवल पर विस्तार से चर्चा करते हुए फेस्टिवल को सफल बनाने का आह्वान किया ।

डीएम ने दो -दो बूंद पोलियो ड्राप पिला कर सघन मिशन इन्द्रधनुष 5.0 अभियान का किया शुभारंभ

सोनभद्र ।गर्भवती महिलाओं व बच्चों को निर्धारित रोस्टर के अनुसार टीकाकरण कराये जाने का उद्घोष करते जिलाधिकारी चंद्रविजय सिंह ने टीकाकरण के प्रति जागरूक कर अधिक से अधिक टीका लगाने के लिए प्रेरित किया शासन की मंशा के अनुरूप और योजना को मूर्तरूप देते सघन मिशन इंद्रधनुष टीकाकरण का किया आगाज नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रॉबर्ट्सगंज में फीता काटने के साथ ।

डीएम ने मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय के पास नगरीय प्रा0 स्वा0 केन्द्र राबर्ट्सगंज में नवाजात शिशुओं को दो-दो बूंद पोलियों की ड्राप पिलाया । जिलाधिकारी ने गर्भवती महिलाओं व बच्चों को लगने वाले टीकाकरण की स्थिति का जायजा सम्बन्धित से लेते हुए बताया कि गर्भवर्ती महिलाओं, टी0डी01, टी0डी02, टी0डी0 बूस्टर तथा 0-5 वर्ष तक के बच्चों को बी0सी0जी0, ओ0पी0वी0, पेंटावेलेंट, रोटावायरस, मिजिल्स/रूबेला, विटामिन ए, पी0सी0बी0 का टीका सहित कुल 12 टीके लगाए जाते हैं । अपने वक्तव्य में आगे बताया लगने वाले टीकाकरण रजिस्टर को सही रखाने के लिए जिससे तैयार किये गये रोस्टर के अनुसार निर्धारित समय में सभी प्रकार का टीका लगाया जा सके।

गर्भवती महिलाओं व बच्चों को अधिक से अधिक टीका लगाया जा सके, इसके लिए नागरिकों को टीका न लगने के कारण होने वाले बीमारियों की जानकारी दी जाये और टीकाकरण के फायदों के सम्बन्ध में जागरूक भी किया जाय।

शार्ट न्यूज

जिलामुख्यालय नगरपालिका अध्यक्ष रूबी प्रस्तुत में किया सड़क का लोकार्पण

सोनभद्र। मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना के तहत नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड नंबर 15 अखाड़ा मोहाल में बनी सड़क का चेयरपर्सन रुबी प्रसाद ने लोकार्पण किया। आयोजित कार्यक्रम में सरकार की विकास योजनाओं के बारे में विस्तृत व्याख्यान दिए संचालित विभिन्न योजनाओं - परियोजनाओं पर। चेयरपर्सन - अध्यक्ष नगरपालिका रुबी प्रसाद ने कहा कि नगर के विकास के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है और सन्निहित है भाव सरकार की योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुँचाने के साथ समग्र विकास करने को । आगे कहा अपने उद्बोधन में पूर्व विधायक व नगरपालिका अध्यक्ष ने कि भाजपा सरकार में धन की कमी नहीं है , वार्ड वासियों के मांग पर उनकी समस्या के निस्तारण का सतत सद्प्रयास प्रयास करती रहूंगी ।कहा कि नगर के 25 वार्ड में विकास कार्य शुरू हो गया है , जल्द ही लोगों को बदलाव नजर आने लगेगा नगर विकास में । इस मौके ई0 ओ0 विजय यादव, भाजपा नेता राजवन सिंह, संजय जायसवाल, सभासद अशोक पटेल, नगर पालिका कर्मी विमलेश लाल, रामविलास गुप्ता आदि मौजूद रहे।

एसपी डॉ0 यशवीर सिंह ने पुलिस लाइन में बैरक - हॉस्टल निर्माण का भूमिपूजन किया

सोनभद्र। जनपद के चुर्क स्थित पुलिस लाइन में प्रस्तावित पुलिस बैरक के निर्माण हेतु पुलिस अधीक्षक डॉ. यशवीर सिंह आईपीएस ने विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार के साथ भूमिपूजन किया। बता दें कि योगी सरकार द्वारा पुलिस लाइन चुर्क सोनभद्र में 150 पुलिस कर्मियों के लिए हॉस्टल - बैरक का निर्माण स्वीकृत किया गया है। निर्माण से पूर्व एसपी सोनभद्र सोनभद्र डॉ. यशवीर सिंह द्वारा पुलिस लाइन चुर्क में नवीन बैरक के निर्माण कार्य के लिए विधि विधान से मंत्रोच्चार के साथ नारियल फोड़कर भूमि पूजन किया गया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने बैरक निर्माण कार्य करने वाली कार्यदायी संस्था को उत्कृष्ट श्रेणी की गुणवत्ता के साथ अतिशीघ्र कार्य को पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये, जिससे पुलिस जवानों के रहने सम्बन्धित असुविधा अतिशीघ्र दूर हो सके। इस अवसर पर प्रतिसार निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह, पीआरओ एसपी अजय सिंह सहित अन्य अधिकारी - कर्मचारीगण मौजूद रहे।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए अदालत में पेश हुए अशोक गहलोत

नयी दिल्ली। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत की ओर से दायर मानहानि मामले में सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए दिल्ली की राउज एवेन्यू अदालत में पेश हुए। अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट हरजीत सिंह जसपाल ने सत्र न्यायालय के आदेश पर सुनवाई के बाद कहा कि गत एक अगस्त के आदेश के तहत एलडी रिवीजन कोर्ट ने आरोपियों की वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए पेश होने के लिए अनुमति देने का आदेश दिया है। आदेश में कहा गया है कि यह अदालत आज अभियुक्तों पर जमानत प्रतिभूति भरने पर जोर नहीं देगी। तदनुसार आरोपी को सुनवाई की अगली तारीख पर जमानत बांड प्रस्तुत करने और उक्त उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का निर्देश दिया जाता है। दिल्ली की राउज एवेन्यू अदालत ने 900 करोड़ रुपये के संजीवनी क्रेडिट सोसायटी घोटाले में श्री गहलोत द्वारा उन्हें बदनाम करने और शामिल करने के लिए श्री शेखावत की ओर से दायर याचिका पर गत छह जुलाई को उनके खिलाफ समन जारी करने का आदेश पारित किया था। इसके साथ ही श्री गहलोत को आज अदालत में पेश होने के लिए कहा गया था। अदालत ने पहले कहा था कि तथ्यों और परिस्थितियों, शिकायतकर्ता गवाहों की गवाही, रिकॉर्ड पर रखे गए सबूतों पर विचार करने के बाद, प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि आरोपी ने शिकायतकर्ता के खिलाफ विशिष्ट मानहानिकारक बयान दिए हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

अहमदाबाद से शुरू होगी विंटेज कार की 12,000 किमी की यात्रा

अहमदाबाद। गुजरात में अहमदाबाद शहर के दमन ठाकोर अपने परिवार के साथ 1950 की ब्रिटिश विंटेज कार 'लाल परी' में अहमदाबाद से लंदन तक 12,000 किलोमीटर की यात्रा के दौरान 16 देशों को कवर करेंगे और अपने देश वापस लौट आएंगे। घूमने की शौकीन और टीम का नेतृत्व कर रहे 50 वर्षीय श्री ठाकोर ने शनिवार को यहां बताया कि लाल परी नाम उन कहानियों से लिया गया है जो मेरी मां मुझे रात में सुनाया करती थीं जब मैं छोटा था। मेरे माता-पिता ने ही घूमने के प्रति शौक पैदा किया है।73 साल पुरानी विंटेज कार में इस यात्रा के माध्यम से हम दुनिया के साथ अपनी खुशी और अनुभव साझा करने के लिए रोमांचित और उत्सुक हैं। इस अनोखी यात्रा में उनके पिता देवल ठाकोर, उनकी बेटी देवांशी, प्रसिद्ध डॉक्यूमेंट्री, आर्किटेक्चरल फोटोग्राफर और फिल्म निर्माता विनय पंजवाणी, विंटेज कार विशेषज्ञ मुकेश बाररीया भी शामिल हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस दौरे की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, टीम अपने प्रवास के दौरान बिजली की आवश्यकता के लिए सौर पैनलों का उपयोग करेगी और इस प्रकार पूरे प्रवास में पर्यावरण-अनुकूल (इको फ्रेंडली) प्रणाली को बढ़ावा देगी। यह प्रवास इस महीने के अंत में अहमदाबाद से दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी होकर शुरू होगा।

मिशन इंद्रधनुष 5.0 अभियान का शुभारम्भ

रमेश कुमार शर्मा/गौरवशाली भारत

बलरामपुर। जनपद बलरामपुर में सोमवार सात अगस्त से सघन मिशन इंद्रधनुष 5.0 अभियान शुरू हुआ। अभियान का शुभारंभ सोमवार को बलरामपुर सदर ब्लॉक के बंजारनपुरवा में आयोजित टीकाकरण सत्र पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी बलरामपुर डा सुशील कुमार ने बच्चों को पोलियो ड्राप व विटामिन ए का घोल पिला कर किया। सीएमओ डॉ सुशील कुमार ने बताया कि सघन मिशन इंद्रधनुष 5.0 का जिले में तीन चरणों में आयोजन होगा। प्रथम चरण आज सोमवार से शुरू होकर 12 अगस्त तक चलेगा। दूसरा चरण 11 सितंबर से 16 सितंबर तक चलेगा। जबकि तीसरा चरण 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक चलेगा। इस अभियान में शून्य से लेकर पांच वर्ष तक के बच्चों को 12 जानलेवा बीमारियों से रोकथाम के लिए टीकाकरण होगा। इनमें 12 बीमारियों में टीबी, पोलियो, गलघोंटू, खांसी, टेटनस, हेपेटाइटिस बी, डायरिया,दिमागी बुखार, निमोनिया, खसरा, रूबैला से रोकथाम होगी।उन्होंने कहा कि इस अभियान में एक भी बच्चा टीकाकरण से वंचित नहीं हो, इसका ध्यान रखा जा रहा। सुदूर ग्रामीण इलाकों पर खास नजर रखने का निर्देश दिया गया है। मिशन इंद्रधनुष विशेष टारगेट पर काम करता है। यह ऐसे क्षेत्रों में कारगर होगा, जहां नियमित टीकाकरण नहीं होता है। इसमें उन गांव और टोलों को प्राथमिकता दी जा रही, जहां नियमित टीकाकरण नहीं हुआ है।

स्टेट बैंक द्वारा ग्राहक मिलन एवं अभिवादन कार्यक्रम आयोजित

कार्यक्रम में शामिल हुए एनटीपीसी के भूतपूर्व एवं कार्यरत अधिकारी

गाजियाबाद । भारतीय स्टेट बैंक क्रासिंग रिपब्लिक शाखा द्वारा शनिवार की शाम क्रीन फाइन डाइन में विशेष रुप से एनटीपीसी के सेवानिवृत्त एवं सेवारत कर्मचारियों के साथ ग्राहक मिलन और अभिवादन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एनटीपीसी के कार्यरत एवं सेवानिवृत्त अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में एनटीपीसी के सेवानिवृत्त क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक करण सिंह गर्ब्याल की भी सार्थक - समीचीन उपस्थिति रही आयोजन में । क्रासिंग रिपब्लिक शाखा की प्रबंधक श्वेता तेवतिया ने सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों का अभिवादन करते हुए करण सिंह गर्ब्याल को पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।

शाखा प्रबंधक श्वेता तेवतिया एवं म्युचुअल फंड इक्जीक्यूटिव सुमित ने एसबीआई म्यूचुअल फंड निवेश योजनाओं के बारे में गर्हित भाव अभिव्यक्त किये परिचर्चा में । इसके पूर्व उपस्थित विशिष्ट प्रतिभागियों ने शाखा की कार्यप्रणाली सराहनीय व्याख्यान के साथ ही लाकर की आवश्यकता पर बल दिया । शाखा प्रबंधक ने बताया कि लाकर हेतु लगभग चार सौ आवेदन प्रतीक्षा में हैं अतएव भारी मांग को देखते हुए इसके लिए यथासंभव प्रयास किया जाएगा। म्युचुअल फंड स्कीम की लाभकारी योजनाओं, उचित रिटर्न तथा फंड की सुरक्षा आदि से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से हासिल की।

हरिबंश सिंह बावा, अर्जुन मणि तिवारी, यूके श्रीवास्तव, कमल नाथ ठाकुर, बी0 पी0 एस0 भाटिया, मुकेश श्रीवास्तव, सुनील कुमार सिंह, अनमोल अग्रवाल, परमानंद नागराज, नेकी राम, राकेश पुंज, सरोज कुमार, विजेंद्र कुमार सिंघल, जे0 के0 श्रीवास्तव, राजेश्वर उपाध्याय, वी0 के0 शर्मा, अजय गोपालिया सहित सत्ताइस प्रतिभागी शामिल हुए। ग्राहक मिलन एवं अभिवादन कार्यक्रम आयोजित कराने के परिप्रेक्ष्य में शाखा प्रबंधक श्वेता तेवतिया के प्रसंसनीय प्रयास की लोगों की सराहना की । कार्यक्रम का संयोजन डॉ0 मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव शिखर ने किया तथा आयोजन को सफल बनाने में ब्रांच के सभी अधिकारियों एवं स्टाफ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डिनर के उपरांत शाखा प्रबंधक ने विशेष उपस्थिति हेतु सभी का आभार प्रकट किया।

जय किसान आंदोलन का कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

मुजफ्फरनगर। रामपुर तिराहा स्थित स्वामी कल्याण देव युवा विकास संस्थान प्रांगण में जय किसान आंदोलन का कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जनपद मुजफ्फरनगर के विभिन्न क्षेत्रों से आए कार्यकर्ताओं को जय किसान आंदोलन के वरिष्ट नेताओं द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। प्रात: 10 बजे से दोपहर दो बजे तक चले कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं को संगठन की आवश्यकता, भूमिका, कार्यक्रम एवम भावी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। मेरठ से आए मनीष भारती ने संगठन की मूल अवधारणा पर, बुलंदशहर से आए आत्मप्रकाश ने संगठन की योजनाओं के विषय में, और मेरठ के अशोक पंवार ने चल रहे कार्यक्रमों के विषय में कार्यकर्ताओं को जानकारी दी।

दूसरे सत्र में सभी कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सूक्ष्मता से निरीक्षण कर रहे उत्तर प्रदेश प्रधान संगठन के अध्यक्ष श्री डी पी सिंह और जय किसान आंदोलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कर्नल जयवीर सिंह ने व्यक्तिगत रूप से सभी कार्यकर्ताओं को विचार संप्रेषण की तकनीक बताई और उनके संबोधन में रह गई खामियों के विषय में बताया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में आए सभी कार्यकर्ताओं को मुजफ्फरनगर अध्यक्ष वेदपाल गुर्जर द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया और संगठन की टोपियां भेंट कर उनसे संगठन के प्रति समर्पित रहने की सहमति प्राप्त की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश अध्यक्ष राजनेत यादव ने सभी प्रशिक्षार्थियों को किसान संगठन की आवश्यकता पर बल देते हुए इसे किसानों के भविष्य से जोड़ा।

कर्नल जयवीर सिंह ने जय किसान आंदोलन की अब तक की यात्रा पर विस्तार से प्रकाश डाला और भविष्य के दूरगामी लक्षों के लिए कमर कसने का पाठ पढ़ाया। कार्यक्रम का संयोजन पुष्पेंद्र कुमार ने किया।

मेडिकल की पढ़ाई कर रहे युवक की मौत पर जांच की मांग

नयी दिल्ली। दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने राजस्थान में मेडिकल की पढ़ाई कर रहे सिख युवक की मौत की उचित जांच और परिवार के लिए न्याय सुनिश्चित करने की मांग की है। कमेटी के अध्यक्ष सरदार हरमीत सिंह कालका और महासचिव सरदार जगदीप सिंह काहलों ने सोमवार को राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पुलिस महानिदेशक उमेश मिश्रा को लिखे पत्र में कहा कि मेडिकल की पढ़ाई कर रहे 18 वर्षीय सिख युवक मनजोत सिंह की राजस्थान के कोटा में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। यह बेहद चिंताजनक है कि राजस्थान पुलिस का दावा है कि यह मामला आत्महत्या का है, जबकि मृतक के परिवार ने अपने बेटे की मौत के मामले में संदेह व्यक्त किया है क्योंकि मौत के समय उसके हाथ पीठ के पीछे बंधे हुए पाए गए थे।

सत्येंद्र जैन के खिलाफ सीबीआई एवं ईडी मामले में कार्रवाई 26 अगस्त तक स्थगित

नयी दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने दिल्ली के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येन्द्र जैन की तरफ से पेश प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करने के बाद उनके खिलाफ केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) मामले में कार्रवाई 26 अगस्त तक स्थगित कर दी है। विशेष न्यायाधीश (सांसद/विधायक मामले) विकास ढुल ने सीबीआई मामले में सुनवाई के बाद कहा, %प्रमुख जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-विशेष न्यायाधीश (पीसी अधिनियम) (सीबीआई), आरएडीसी, नयी दिल्ली से 31 जुलाई 2023 को आदेश प्राप्त हुआ और उसी के अनुसार, इस अदालत के समक्ष कार्रवाई 19 अगस्त 2023 तक रोक दी गई है। अब आगे की कार्रवाई के लिए 26 अगस्त 2023 तारीख तय की गई है। विशेष न्यायाधीश ने ईडी मामले में सुनवाई के बाद कहा, ईडी के लिए एलडी विशेष लोक अभियोजक (एसपीपी) द्वारा किए गए विरोध के बावजूद, इस अदालत का मानना है कि मामले को 19.08.2023 के बाद किसी भी तारीख पर स्थगित करने की आवश्यकता है। जैन की ओर से वकील ने कहा कि उनके स्थानांतरण आवेदन को 19 अगस्त 2023 तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। ईडी के एसपीपी एन के मट्टा ने इस आधार पर स्थगन का विरोध किया कि एलडी की अदालत द्वारा कोई रोक नहीं दी गई है। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-विशेष न्यायाधीश (पीसी अधिनियम) (सीबीआई), आरएडीसी, नयी दिल्ली और ए-1 द्वारा किसी न किसी बहाने से स्थगन की मांग की जा रही है। तदनुसार, मामले पर कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। जैन ने सीबीआई और ईडी द्वारा उनके खिलाफ दर्ज दो मामलों को किसी अन्य न्यायाधीश के पास स्थानांतरित करने की मांग करते हुए आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 408 के तहत एक आवेदन दायर किया था। सीबीआई ने 2017 में जैन के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति के मामले में प्राथमिकी दर्ज की।

राष्ट्रीय आदिवासी एकता परिषद ने 22 सूत्रीय मांगपत्र के साथ निकाली रैली

सोनभद्र । जनपद के डाला पुलिस चौकी क्षेत्र में राष्ट्रीय आदिवासी एकता परिषद जिला कमेटी द्वारा डाला शहीद स्मारक से शीतला मंदिर तक चला कार्यक्रम । आयोजन का विषय बिंदु रहा आदिवासियों पर हो रहे अन्याय अत्याचार एवं उनके विरोध में संसद में बनाए जा रहे यूसीसी कानून का विरोधप्रदर्शन । भारत मुक्ति मोर्चा , बहुजन क्रांति मोर्चा के आह्वान पर 07 अगस्त भारत बंद के समर्थन में राष्ट्रीय आदिवासी एकता परिषद जिला अध्यक्ष भगवान दास के नेतृत्व में रैली निकाली गई ।

आदिवासी एकता जिंदाबाद के नारों के उद्घोष होता रहा।

इस संबंध में रा.आ.ए.प. सोनभद्र जिलाध्यक्ष भागवत दास ने बताया कि 22 सूत्रीय मांगों को लेकर भारत बंद समर्थन में यह रैली की जा रही है । अपनी मांगों के बाबत बताया कि कॉमन सिविल कोड (समान नागरिक संहिता) लागू करने का कानून बनाकर आदिवासियों को मिली अलग आदिवासी पहचान को खत्म करने की साजिश की जा रही है। इससे आदिवासीयों का कस्टमरी लॉ, पृथक संवैधानिक पहचान एवम् तमाम तरह के संवैधानिक अधिकर खत्म होने का खतरा पैदा हो जायेगा । 22 सूत्रीय मांगों में विकास के नाम पर, पर्यावरण संरक्षण के नाम पर एवम् वन्य प्राणियों के संरक्षण के नाम पर आदिवासियों को जल, जंगल और जमीन से विस्थापित करने एवम् उनकी रोजीरोटी छीनने की बात के साथ ही अन्य बिंदु भी समाहित हैं। मणिपुर के प्रकरणों का साथ ही मांगपत्र में अन्य बिंदु समाहित हैं जिसमें आदिवासियों की मूल सभ्यता, संस्कृति, कल्चर, देवी-देवताओं, पूजा पद्धति भी उल्लिखित है ।

एडीएम ने राजस्व कार्यक्रमों एवं कर - करेत्तर की समीक्षा की

सोनभद्र । जिला कलेक्ट्रेट सभागार में राजस्व कार्यक्रमों व कर-करेत्तर की मासिक समीक्षा बैठक की अपर जिलाधिकारी (वि/रा) सहदेव कुमार मिश्र ने ।बैठक में मानक के मुताबिक वसूली के लक्ष्य को पूरा करने, तहसील स्तरों पर बकायेदारों पर वसूली की कार्यवाही करने, आर0सी0 का नियमित मिलान करने के साथ ही सरकारी जमीनों को सुरक्षित करते हुए जन शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश सम्बन्धितों को दिये गये। समीक्षा के दौरान पाया गया की वाणिज्य कर विभाग की वसूली की स्थिति ठीक नहीं है, जिसे पूरा करने के निर्देश दिए गये। इस दौरान उन्होने कहा कि लक्ष्य को पूरा न करने वालों की जिम्मेदारी तय की जायेगी। उन्होंने कहा कि तहसीलों का काम समयबद्ध और बेहतर तरीके से करने के लिए कड़ाई के साथ उप जिलाधिकारी व तहसीलदार राजस्व कार्मिकों से दायित्वबोध के साथ पेश आयें और जरूरत पड़ने पर उचित कदम भी उठायें। एडीएम ने कहा कि राजस्व मुकदमों का निस्तारण समयबद्ध तरीके से किया जाय, जमीनी विवादों का निस्तारण मौके पर जाकर किया जाय, किसी भी हाल में जनता के साथ अन्याय न होने पायें। जमीनी मामलों को गंभीरता से लेते हुए निष्पक्ष तरीके से गुणवत्ता के साथ निस्तारण सुनिश्चित होने की बात कहने के साथ ही नगर पालिका व नगर पंचायत द्वारा अपने कार्य क्षेत्रों में जरुरी जरुरत के कार्यों को करना सुनिश्चित करें , इस आशय के निर्देश दिये । बैठक में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) सुभाष चन्द्र यादव, अपर पुलिस अधीक्षक कालू सिंह, उप जिलाधिकारी घोरावल राजेश सिंह, उप जिलाधिकारी सदर निखिल कुमार यादव, उप जिलाधिकारी ओबरा प्रभाकर सिंह, उप जिलाधिकारी दुद्धी सुरेश राय, अधिशासी अधिकारी राबर्ट्सगंज विजय बहादुर यादव, तहसीलदार ओबरा सुशील कुमार सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहे।

भारतीय विद्या भवन ने मनाया 23वां दीक्षांत समारोह

विद्यार्थियों ने मनाया सालभर की सफलता का जश्न

संवाददाता। गौरवशाली भारत

नई दिल्ली । इंडिया गेट समीप कस्तूरबा गाँधी मार्ग स्थित भारतीय विद्या भवन के एल मुंशी मेमोरियल सभागार में शनिवार शाम 23वें द्विक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एंकर शोभना यादव और विशिष्ट अतिथि स्वरूप एंकर असीम मीश्रा शामिल हुए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता में भा.वि. भवन के निदेशक एवं (सेवानिवृत्त आईएएस) अशोक प्रधान, सेवानिवृत्त आईएएस राजेश मिश्रा रजिस्ट्रार ऑफ़ भारतीय विद्या भवन और विभाग अध्यक्ष दलीप बाडेकर समेत अन्य विशेष गणमान्य स्वजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में फिल्म एंड टेलिविज़न अध्यन विभाग के मीडिया समन्वयक रमेश प्रसाद साहू समेत अन्य फैक्लटीज भी मोजूद रहे।